धर्म की विविधा में शाश्वतता का प्रतीक

शाश्वत धर्म

दिशादर्शक-धर्म चक्रवर्ती राष्ट्रसंत गच्छाधिपति जैनाचार्य श्रीमद्विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा.

नवम्बर-2016 | संस्थापक-श्रीमद्विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. | हिन्दी मासिक

श्रीमती तेजकुंवर काश्यप को
श्राविका रत्न की उपाधि अर्पित करते हुए ।

पूज्य गुरूदेवश्री, जन्मोत्सव पर श्रीमती तेजकुंवर काश्यप को स्मृति चिन्ह प्रदान करते हुए ।

विशिष्ट सहयोगी

1. श्री राजेन्द्रसूरीश्वरजी जैन ट्रस्ट, चैन्नई (तमिलनाडु)
2. श्री संभवनाथ राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट मंडल, विजयवाड़ा (आंध्रप्रदेश)
3. श्री सांचा सुमतिनाथ राजेन्द्रसूरि जैन श्वे. ट्रस्ट, मदुराई (तमिलनाडु)
4. श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट, त्रिचनापल्ली (तमिलनाडु)
5. श्री सुविधिनाथ राजेन्द्रसूरि जैन श्वे. ट्रस्ट, मैसूर (कर्नाटक)
6. श्री पार्श्वनाथ राजेन्द्र जैन श्वे. ट्रस्ट, गुंण्टुर (आंध्रप्रदेश)
7. श्री राजेन्द्र सूरि जैन श्वेताम्बर ट्रस्ट, सायला (राजस्थान)
8. श्री सायला जैन श्रीसंघ, सायला (राजस्थान)
9. श्री जैन श्वे. त्रिस्तुतिक संघ नारोली (ता. थराद, गुजरात)
10. श्री शंखेश्वर पार्श्व राजेन्द्र जैन श्वे. मूर्तिपूजक संघ, दावणगेरे (कर्नाटक)
11. श्री जैन श्वेताम्बर त्रिस्तुतिक संघ, बागरा, जिला-जालोर (राज.)

हमारे गौरव

श्री राजेन्द्रसूरि कीर्ति मन्दिर तीर्थ ट्रस्ट

ट्रस्टीगण महाप्रभावक गुम्मीलेरू तीर्थ

राजस्थान

राष्ट्रसंत श्री के पूज्य माता-पिता
स्वरूपचंदजी धरू एवं पार्वतीदेवी

जैन रत्न श्री गगलदासभाई
हालचंदभाई संघवी, अहमदाबाद

शा. तगराजजी जेठमलजी हिराणी
रेवतड़ा, बैंगलोर

शा. किशोरचंदजी खिमावत
खिमेल, मुम्बई

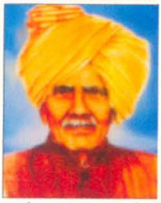

शा. जेठमलजी लादाजी चौधरी
गढसिवाणा, बैंगलोर

शा. मिश्रीमलजी उकाजी सालेचा
धाणसा, बैंगलोर

संघवी सांकलचंदजी इन्द्रजी वेदमुथा
बैंगलोर

श्री शांतिलालजी रामाणी
गुढाबालोतरा, नेल्लोर

शा. माणकचंदजी छोगाजी बालर
बैंगलोर

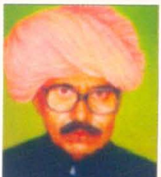

शा. हजारीमलजी गजाजी बंदामुथा

मांगीलालजी शेषमलजी रामाणी
गुढाबालोतरा, नेल्लोर

शंकरलालजी आईदानजी गांधी
नेल्लोर

चंपालालजी वालचंदजी चरली

श्री घेवरचंदजी एल. जोगानी, मुम्बई
भीनमाल

श्री शेषमलजी गुलाबचंदजी जैन
बागरा

हमारे गौरव

Bind-3007

श्री हीराचंदजी कानाजी गुंटुर (सियाणावाला)

श्री लालचंदजी सोनाजी संघवी धाणसा (राज.) विजयवाड़ा

स्व. सोलंकी चन्दनमलजी हीराजी आहोर विजयवाड़ा

श्री शांतिलालजी सोलंकी जालोर विजयवाड़ा

श्रीमती मोसंबीबाई पति स्व.श्रीचम्पालालजी तखतगढ़, मुम्बई

श्री बाबूलालजी गुण्टूर

कबदी जीतमलजी कुंदनमलजी सायला

भंडारी वस्तीमलजी खीमाजी विजयवाड़ा, आहोर

शा. रिखबचंदजी सरूपाजी सोफाडीया, रेवतडा

भंडारी पीरचंदजी केवलचंदजी बागरा

स्व. शा ओटमलजी गोराजी वेदमुथा, रेवतडा

शा. पारसमलजी हस्तीमलजी भंडारी, सायला

स्व. शा. गुमानमलजी धुकाजी मोदी, धानसा

मुथा उदयचंदजी जवाजी धाणसा

शा पुखराजजी फूलचंदजी दुरगानी, मोदरा, बिजयवाड़ा

शा. घेवरचंदजी हंजाजी संघवी, धाणसा

शा. सरेमलजी गेनाजी सियाणा, विजयवाड़ा

शा. छगनराजजी मांडोत गुन्टुर

शा मोहनलालजी गोवानी चोराउ

शा. नरसाजी आसाजी बाफणा कोरा (राज.)

शा प्रतापचंदजी किसनाजी कटारिया संघवी अमरसर, सरत

शा. कालूचंदजी हंजाजी सकलेचा

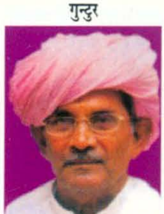
शा. दरगचंदजी हरकाजी सकलेचा

स्व. श्री मिश्रीमलजी भंडारी

शा. उत्तमचंदजी दरगाजी सकलेचा

ACHARYA SRI KAILASSAGARSURI GYANMANDIR
SRI MAHAVIR JAIN ARADHANA KENDRA
Koba, Gandhinagar - 382 009
Phone: 23276252, 23276204

हमारे गौरव

32561

शा. नरेन्द्रकुमारजी रायकचंदजी पोरवाल
बागरा

श्री चंदनमलजी जेठमलजी
बागरा

श्री सुखाराजजी केसाजी
मेंगलवा

श्री रतनचंदजी कुन्दनमलजी
मेंगलवा

श्री नथमलजी खुमाजी
बागरा

श्री जेठमलजी कुंदनमलजी
मेंगलवा

श्री सांवलचंदजी कुंदनमलजी
मेंगलवा

श्री दूधमलजी मानकचंदजी
मेंगलवा

श्री बाबुलालजी सरेमलजी
मोदरा

श्री छगनराजजी भानाजी गांधी
सियाना

शा.सुमेरमलजी वरदीचंदजी वाणीगोता
आहोर (राज.)

श्री संघवी मानमलजी वीरमाजी
दादाल

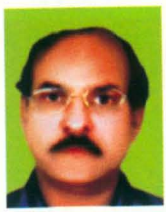
श्री कांतिलालजी मूलचंदजी नानावत
आहोर

शा. उकचंदजी हिमताजी हिराणी
रेवतड़ा

शा. ओपचंदजी जवाजी ओस्तवाल
सायला

श्री एम. फूलचंदजी शाह
दावणगिरी

शा. मोडमलजी जोईताजी बाफना
थलवाड नेल्लोर

मुथा थानमलजी कानाजी
आहोर विजयवाड़ा

स्व. सुखराजजी पिताजी कटारिया
संघवी धाणवसा विजयवाड़ा

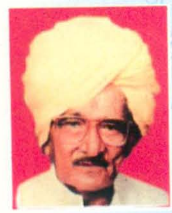
संघवी भेरमलजी जेठाजी
मारवाड में अमरसर (सरत) विजयवाड़ा

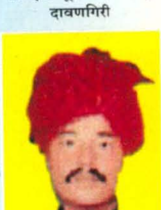
सेठ भगराजजी कुनणमलजी
सांचोर

शा. फुलचन्दजी सुखराजजी गांधी
सियाणा यादगीरी

श्री राणमलजी हिमताजी
दादाल

श्री पुखराजजी नेकाजी कटारिया
संघवी, धानसा

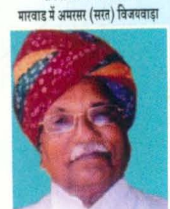
सा सांवलचंदजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

हमारे गौरव

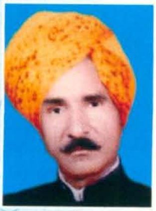
स्व.सा तिलोकचन्दजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

स्व.सा नरसीगमलजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

स्व.सा पुखराजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

स्व.सा परकचंदजी प्रतापजी
वाणीगोता अमरसर (सरत)

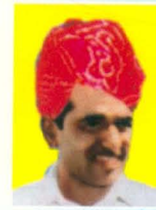
संघवी शा. मिश्रीमलजी विनाजी
पटियाल धाणसा/बैंगलोर

श्री फुलचन्दजी सांकलचन्दजी
कोशेलाव

डूंगरचंदजी सोलंकी
सायला (राज.)

मीठालाल मनोहरलालजी झोरा
दाधाल-कोयम्बतूर

श्री उम्मेदमलजी हरकचंदजी
बाफना, पाँथेड़ी

श्री भंवरलालजी कुन्दनमलजी
संघवी, मोदरा (राज.)

पातीबाई वस्तीमलजी
कबदी, सायला

श्री ओटमलजी वर्धन
सायला

श्री जुगराजजी नाथाजी कबदी
सायला

श्री हेमराजजी कबदी
सायला

श्री हस्तीमलजी गांधीमूथा
सायला

श्री घेवरचंदजी गांधीमूथा
सायला

श्री चम्पालालजी गांधीमूथा
सायला

शा. धर्मचंदजी मिश्रीमलजी संघवी
आलासन

श्री देशमलजी सरेमलजी
मोदरा/बैंगलोर

शा. श्री स्व. हीराचन्द
फुलाजी गांव चुरा

श्रीमती पवनीदेवी दूधमलजी
कबदी, सायला

श्री दूधमलजी पूनमचंदजी
कबदी, सायला

श्री हस्तीमलजी केवलचन्दजी
फोलामुथा, सायला

श्री रमेशभाई हरण
भीनमाल, राजस्थान

श्री उगमराजजी तौलचंदजी
कटारिया संघवी, धानसा (हैदराबाद)

हमारे गौरव

शा. खुशालचंदजी गेबाजी
डामराणी मेंगलवा (हैदराबाद)

शा. जावंतराजजी
पाथेडी

शा. बगराजजी नरसाजी
झोटा, दाधाल

भंवरलालजी कानुगा
जालोर

श्री तिलोचन्दजी झोटा
(हैदराबाद)

सत्रु अग्रवाल
जालोर

पुखराजजी समताजी
गांधीमुथा, सायला

धर्मचंदजी चंदाजी
नानेसा, आकोली

शा. धींगड़मलजी भंवरलालजी
पटवारी, मांडवला/तिरुचि

गुजरात

वोरा अमृतलालजी डूंगरजी
अहमदाबाद

शा. तिलोकचंदजी चुन्नीलालजी छाजेड़
नैनावा

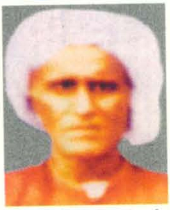

वोरा चिमनलालजी नथुचंदभाई

मोरखिया मणिलाल प्रेमचंदभाई
मुम्बई

श्री बाबूलालजी नाथाजी भंसाली
दाहोद

श्री चिमनलालजी पीताम्बरदासजी
देसाई

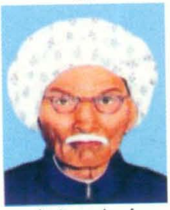

वेदलीया हालचंद भाई
भाणजी भाई, भोरडुवाला, डीसा

संघवी मुलचन्द भाई
त्रिभुवनदास, थराद

महाजनी ताराबेन
भोगीलाल सरूपचन्द, थराद

देसाई छोटालाल अमूलख भाई

संघवी धुड़ालाल अमृतलाल
(वकील)

शाह श्री राजमल भाई डूंगरजी भाई
थराद

संघवी श्री हीरालालजी कागजीभाई
थराद (लाटीवाला)

देसाई श्री हालचंदजी उजमचंदजी
थराद

श्री नरपतलाल वीरचंदजी संघवी
थराद

हमारे गौरव

वोहेरा श्री प्रेमचंदभाई जीतमल भाई
थराद

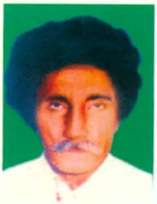
संघवी चिमनलाल खेमचंद
थराद

संघवी पूनमचंद खेमचंद
थराद

संघवी वीरचंद हठीचंद
थराद

श्री पुखराजजी ओरा
थराद

वोहेरा श्री माणकलाल
भूदरमल दूधवा (गुज.)

मोरखीया अमृतलालजी
चुन्नीलाल लाखणी

दलपतभाई खेमचंद
महाजनी

श्री मफतलालजी हंसराज
वारिया, (वड़गामड़ा) डीसा

अदाणी अमृतलाल
मोहनलाल थराद

श्री चन्दूमल मफतलालजी
वोहेरा, दुधवा (गुजरात)

मध्यप्रदेश

श्री शांतिलालजी भंडारी
झाबुआ

श्री मदनलालजी सुराना
रतलाम

श्री इन्दरमलजी दसेड़ा
जावरा

स्व.मणिलालजी पुराणिक
कुक्षी

स्व. समरथमलजी तल्लेरा
कर्मड़वाला, उज्जैन

श्री सुजानमलजी जैन
राणापुर (म.प्र.)

संघ शिरोमणी राजमलजी
तलेसरा, पारा

भण्डारी चम्पालालजी
रामाजी, पारा

श्री गट्टूलालजी
रतिचंदजी सालेचा औरा, पारा

श्री कांतिलालजी केसरीमलजी
भंडारी, पारा

स्व. भव्य हिमांशु लुणावत
दाहोद (गुजरात)

स्व. श्री सुभाषजी भण्डारी
मनावर (मेघनगर वाले)

श्री समरथमलजी पगारिया
पारा जि. झाबुआ (म.प्र.)

श्री चांदमलजी वरदीचंदजी
तांतेड़, लेडगांव

स्व.श्री कन्हैयालालजी
सेठिया, कुशलगढ़

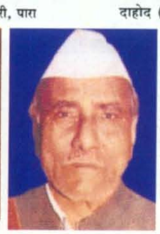
दलाल स्व. श्रीबाबूलालजी
मेहता, कुशलगढ़

श्री मानसिंहजी
राजगढ़

हमारे गौरव

कालूरामजी औरा
टोपीवाले, रतलाम

जैन भूषण स्व. श्री वर्धमानजी
राठौर (बड़नगर)

कर्नाटक

श्री भंवरलालजी तिलोकचन्दजी
वाणीगोता, बीजापुर (कर्नाटक)

श्री मनोहरमलजी फूजाजी
भंडारी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री हिराचंदजी पुखराजजी
वाणीगोता, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री शेषमलजी ताराजी
कांकरिया, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री इंदरमलजी नेनमलजी
संघवी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री रूपचंदजी फूलाजी
भंडारी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व.भंडारी भुरमलजी भानाजी
मेंगलवा, (बीजापुर)

स्व. श्री दिनेशकुमार भुरमलजी
भंडारी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री प्रतापचंदजी समनाजी
पोरवाल, बीजापुर (कर्नाटक)

श्री सुखराज प्रतापचंदजी
पोरवाल, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री कुंदनमलजी फुलाजी
संकलेचा, मेंगलवा (कर्नाटक)

श्री उम्मेदमलजी प्रतापजी
कंकुचौपडा, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री नागराजजी वालचंदजी
पाटनी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व.श्री मोहनलालजी मुलचंदजी
चौवाटिया, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री कुन्दनमलजी
फुलाजी सकलेचा (बीजापुर)

श्री धनराजजी नेनमलजी
संघवी, आलासन (बीजापुर)

श्री मुलचंदजी खुमाजी
बाफना, बीजापुर (कर्नाटक)

श्री देवीचंदजी हजारीमलजी
काबदी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व.श्री रिखबचंदजी भभुतमलजी
पोरवाल, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री डुंगरचंदजी हजारीमलजी
कबदी, बीजापुर (कर्नाटक)

शाह सोहनलाल
मित्राचंदजी बीजापुर

सुमेरमलजी अनाजी
वाणीगोथा, बीजापुर/भीनमाल

शा. श्री वस्तीमलजी सोनाजी
बाफना, बीजापुर (सायला)

धर्म की विविधा में शाश्वतता का प्रतीक

शाश्वत धर्म

नवम्बर-2016 संस्थापक-श्रीमद्विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. हिन्दी मासिक

संस्थापक :
स्व. गुरुदेव श्रीमद् विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.

दिशा निर्देशक :
पू. लोकसंत जैनाचार्य श्रीमद्
विजय जयंतसेनसूरीश्वरजी म.सा.

सम्पादक :
सुरेन्द्र लोढ़ा
E-mail : shaswatdharmajain@yahoo.in

कार्यालय :
शाश्वत धर्म
ठि. गुरु श्रीमद् राजेन्द्रसूरि शताब्दी मार्ग
धानमंडी, मंदसौर (म.प्र.)458002

शाश्वत वर्ष 64 अंक 11
वीर सं.2541 राजेन्द्र सं.109 विक्रम सं. 2072

इस अंक का मूल्य	-	15 रु.
एक वर्ष का शुल्क	-	150 रु.
पांच वर्ष का शुल्क	-	600 रु.
दस वर्ष का शुल्क	-	1100 रु.

शाश्वत धर्म संचालन समिति

श्री शांतिलाल रामानी	(संयोजक)
श्री रमेशभाई धरू	(परिषद अध्यक्ष)
श्री सुरेन्द्र लोढ़ा	(सम्पादक)
श्री अशोक श्रीश्रीमाल	(महामंत्री)
श्री. ओ.सी जैन	(न्यासी)
श्री विनोद संघवी	(न्यासी)

भारत सरकार का पंजीयन क्र. 13067/57
स्वामी अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् के लिए **सुरेन्द्र लोढ़ा**, गुरु श्रीमद् राजेन्द्रसूरि शताब्दी मार्ग, धानमण्डी, मंदसौर द्वारा मुद्रित तथा प्रकाशित।
मुद्रक -छाजेड़ प्रिन्टरी प्रा.लि., रतलाम

प्रेरक प्रसंग

कार्य-कारण का क्रम चलता ही रहता

तीर्थंकर श्री महावीर स्वामी के विहार का मार्ग गंगानदी ने रोक लिया।

वे नाव में बैठे। वहीं सुन्द्रष्ट्र नागकुमार ने उन्हें देखा। उसके पूर्व भव की दुश्मनी का संस्कार उत्पन्न हो गया। श्री महावीर स्वामी के सिंह के पूर्वभव में उसे मरणांतक आक्रमण सहन करना पड़ा था। वह बदला लेने पर उतारू हो गया।

नाव यात्रा के समय आसमान एकदम स्वच्छ था।

लेकिन एकदम तूफान चलने लगा, मूसलाधार वर्षा होने लगी, मेघ गर्जना दहाड़ने लगी, नदी में बाढ़ आ गई, नाव में पानी भराने लगा, वह डांवाडोल हो गई, सभी यात्री घबरा गये।

उसी समय दो अन्य नागकुमार कम्बल तथा सम्बल भगवान महावीर के उपासक थे। उनने देखते ही अपनी शक्तियाँ नाव के संरक्षण में लगा दी। सुन्द्रष्ट्र उनकी शक्ति का मुकाबला नहीं कर पाया। फलतः तूफान थम गया, नाव बच गई।

नाव किनारे पर आ गई। सभी के प्राणों में प्राण आ गये। शास्त्रकारों का विश्लेषण है कि प्रत्येक कारण से कार्य का जन्म होता है। कार्य कभी निष्फल नहीं जाता। कार्य-करण का क्रम सदैव निरंतर रहता है। सुन्द्रष्ट्र का वैर चलता रहा, आगामी भव में भी उसने उपसर्ग किया। कार्य-कारण की श्रृंखला-संसार में चलती रहती है।

- सुरेन्द्र लोढ़ा

अनुक्रमणिका

1.	रतलाम चातुर्मास के अन्तर्गत	11
2.	अनुभव की दुनिया में (मुनि श्री निपुणरत्न विजयजी)	22
3.	अशुभ वचन योग (श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा.)	26
4.	गणधरवाद (लेखांक-39) (श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा.)	28
5.	स्वर्णप्रभा (लेखांक-39) (श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा.)	30
6.	प्रश्नोत्तरी	32
7.	अध्यक्ष की पाती (वाघजीभाई वोरा)	33
8.	अध्यक्षीय संदेश (रमेशभाई धरू)	34
9.	सम्पादकीय (सुरेन्द्र लोढ़ा)	35
10.	तीर्थंकर श्री अजितनाथजी (मुनिराज डॉ. श्री सिद्धरत्न विजयजी म.सा.)	37
11.	गुरु नहीं तो जीवन गुरू नहीं (विजयसिंह लोढ़ा, निम्बाहेडा)	39
12.	लोकसंतश्री जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. (संकलित)	41
13.	श्री जयन्त गुरुवर के गुण गाइये (अनोखीलाल कोठारी)	44
14.	जैन इतिहास के अधखुले पृष्ठ (मुनिराज श्री चारित्ररत्न विजयजी म.सा.)	45
15.	शिष्य की शोभा है गुरुभक्ति (मुनि निपुणरत्न विजय)	47
16.	सम्यग्दर्शन को नमस्कार (साध्वीश्री वैभव श्री 'आत्मा')	49
17.	श्री राजेन्द्र जैन पर्व दिवस केलेण्डर	51
18.	सम्यक् श्रद्धा के बिना फलसिद्धि नहीं (शांतिलाल सगरावत, मन्दसौर)	53
19.	स्वास्थ्य शाश्वत (अचलचन्द जैन, सायला)	54
20.	कर्म बन्धन वैज्ञानिक आधार (रितेश चोपड़ा, रतलाम)	56
21.	महिला शाश्वत	58
22.	महावीर का जीवन-दर्शन (श्रीमती इंदिरा घोड़ावत, झाबुआ)	60
23.	बाल शाश्वत (मुनि जिनागम रत्नविजयजी म.सा.)	62
24.	ज्योतिष शाश्वत (दिनेश जैन कबदी, अहमदाबाद)	66
25.	जीवन कैसा हो (प्रदीप संघवी)	68
26.	मन-बुद्धि और आत्मा (कटारिया अशोक कुमार जैन, झाबुआ)	69
27.	गुजराती संभाग	75
28.	गुजरात की जैन प्रतिभा (पद्मश्री डॉ. कुमारपाल देसाई)	91
29.	कुमकुम सने पगलिये	92
30.	अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद-राष्ट्रीय पदाधिकारी/कार्यकारिणी	101
31.	श्रीसंघ सौरभ	105
32.	परिषद प्रांगण से	112
33.	जैन विश्व	118
34.	शाश्वत धर्म के संरक्षक	121-122

काश्यप परिवार द्वारा गरीबों के आवास हेतु 7.50 करोड़ की सहायता

तेजकुंवर काश्यप के अमृत महोत्सव में 'श्राविका रत्न' का अलंकरण

रतलाम। लोकसंत, आचार्य, गच्छाधिपति, श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. के सान्निध्य में जयन्तसेन धाम अनूठी मातृभक्ति का साक्षी बना। चातुर्मास आयोजक व राज्य योजना आयोग उपाध्यक्ष, विधायक चेतन्य काश्यप ने माताजी तेजकुंवर बाई काश्यप के अमृत महोत्सव के अवसर पर रतलाम नगर में गरीबों के लिए बनने वाले आवासों के लिए काश्यप परिवार की ओर से सात करोड़ पचास लाख रुपए की मदद देने की घोषणा की। महोत्सव में श्रीमती काश्यप को अ.भा.श्री बृहत्तपोगच्छीय त्रिस्तुतिक संघ द्वारा श्राविका रत्न के अलंकरण से सम्मानित किया गया। सेवा से अभिभूत अहिंसा ग्रामवासियों ने भी श्रीमती काश्यप का अभिनन्दन किया। कार्यक्रम में केन्द्रीय सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री श्री थावरचन्द गेहलोत, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अ.भा. कार्यकारिणी सदस्य श्री बजरंगलाल गुप्ता ऊर्जा मंत्री, श्री पारस जैन व त्रिस्तुतिक जैन श्रीसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री वाघजीभाई बोहरा अतिथि के रूप में उपस्थित रहे।

अमृत महोत्सव में लोकसन्तश्री ने कहा कि संसार में मां से ही हमारा अस्तित्व है। यह आयोजन मां के उपकारों की स्मृति का प्रतिबिम्ब है। रतलाम में काश्यप परिवार ने ऐतिहासिक चातुर्मास के साथ अमृत महोत्सव का आयोजन कर मातृभक्ति

की अनूठी मिसाल प्रस्तुत की है। इस मौके पर यही कामना है कि प्रत्येक व्यक्ति को मां का आशीर्वाद मिले और वह श्री चेतन्य काश्यप की तरह मातृभक्ति करने वाला बने।

मुनिराजश्री निपुणरत्न विजयजी म.सा. ने कहा कि मां की तो कोई मिसाल ही नहीं है। माता के अनन्त उपकारों को महसूस कर काश्यप परिवार द्वारा आयोजित यह महोत्सव अनुकरणीय, वन्दनीय और अद्वितीय है। महोत्सव में अ.भा. सौ.बृ.त. त्रिस्तुतिक जैन श्वेताम्बर श्रीसंघ एवं रतलाम श्रीसंघ ने श्रीमती तेजकुंवर बाई काश्यप को 'श्राविका रत्न' के अलंकरण से सम्मानित किया। अभिनन्दन पत्र का वाचन संघ के राष्ट्रीय महामंत्री श्री सुरेन्द्र लोढ़ा ने किया। राष्ट्रीय अध्यक्ष वाघजीभाई वोरा, श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश भाई धरू व अतिथियों ने अलंकरण प्रदान किया।

इस मौके पर मंदसौर सांसद सुधीर गुप्ता, विधायकगण जगदीश देवड़ा, मथुरालाल डामर, श्रीमती संगीता चारेल, जितेन्द्र गेहलोत, ओम प्रकाश सकलेचा, चन्द्रसिंह सिसौदिया, दिलीपसिंह शेखावत, कलसिंह भाभर, दिलीप परिहार, महापौर डॉ. सुनीता यार्दे, उज्जैन विकास प्राधिकरण अध्यक्ष जगदीश अग्रवाल, पूर्व विधायक राधेश्याम पाटीदार, जिला पंचायत अध्यक्ष परमेश मईड़ा, भाजपा जिलाध्यक्ष बजरंग पुरोहित, नीमच अध्यक्ष हेमन्त हरित, त्रिस्तुतिक जैन श्रीसंघ रतलाम के अध्यक्ष डॉ. ओ.सी. जैन आदि मंचासीन थे। अतिथियों का स्वागत चातुर्मास आयोजक व राज्य योजना आयोग उपाध्यक्ष श्री चेतन्य काश्यप, श्री सिद्धार्थ काश्यप, श्री श्रवण काश्यप ने किया। महोत्सव में कलेक्टर बी. चन्द्रशेखर, पुलिस अधीक्षक अविनाश शर्मा, मण्डल रेल प्रबंधक मनोज शर्मा सहित बड़ी संख्या में अधिकारी व पत्रकारगण, सामाजिक, आर्थिक, व्यावसायिक, राजनीतिक, संस्थाओं के पदाधिकारी, सदस्यगण, गणमान्यजन उपस्थित थे। संचालन अब्दुल सलाम खोकर ने किया।

केन्द्रीय मंत्री श्री थावरचन्द गेहलोत ने अमृत महोत्सव में कहा कि भारतीय संस्कृति और परम्परा में वसुधैव कुटुम्बकम् परोपकार और अहिंसा परमो धर्म का भाव निहित है। माताजी तेजकुंवरबाई काश्यप ने इन भावों का पालन कर अपने परिवार में जो संस्कार डाले हैं, उन्हीं का परिणाम अमृत महोत्सव के रूप में हमारे सामने है। आज रामायण लिखने वाले वाल्मीकि ने राम को प्रसिद्ध किया और राम के कारण उन्हें भी प्रसिद्धि मिली। इसी प्रकार माताजी के कारण चेतन्य काश्यप और श्री काश्यप के कारण माताजी का सम्मान देखने को मिल रहा है। दुनिया में आर्थिक रूप से कई सम्पन्न लोग हैं, लेकिन वे अपना ही उत्थान कर सके। श्री काश्यप ने गरीबों के प्रति

करुणा दिखाकर प्रेरणास्पद कार्य किया है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अ.भा. कार्यकारिणी सदस्य श्री बजरंगलाल गुप्ता ने कहा कि अमृत महोत्सव में आकर वे स्वयं को गौरवान्वित महसूस कर रहे हैं। संघ की प्रार्थना में भारत मां का स्मरण किया जाता है। मां भारती जन्म देने वाली नहीं, अपितु पूरे परिवार की मां है। आज जरूरत इसी बात की है कि हर व्यक्ति में मां की सेवा करने का संस्कार जागे। मातृत्व के भाव में ही सारी समस्याओं का समाधान छुपा है। वर्तमान समय में जो संकट सबके सामने है, उन्हें प्रकृति को मां मानकर दूर किया जा सकता है। मातृत्व का फलक परिवार तक ही सीमित नहीं, यह सृष्टि तक फैला हुआ है। श्रीमती तेजकुंवरबाई काश्यप ने मां के साथ पिता की भी भूमिका निभाई है। उनका सेवा और संस्कारमय जीवन एक मिसाल है।

ऊर्जा मंत्री पारस जैन ने कहा कि काश्यप परिवार बहुत भाग्य वाला है। गरीबों की चिन्ता कर इससे पं. दीनदयाल उपाध्याय के सपनों को साकार किया है। अपने परिवार के लिए तो सभी कुछ करते हैं, लेकिन परोपकार करने वाला महान होता है। सांसद श्री सुधीर गुप्ता ने कहा कि मां प्रथम गुरु होती है। इसने ही हमें जीवन की सही प्रेरणा मिलती है। रतलाम में लोकसंतश्री के चातुर्मास के साथ धर्म की जो बयार दिख रही है, वह मां के ही कारण है।

त्रिस्तुतिक जैन श्रीसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री वाघजीभाई वोरा ने कहा कि अमृत महोत्सव के आरम्भ में युवा संगीतकार श्री सिद्धार्थ काश्यप ने मातृभक्ति की अनूठी प्रस्तुति देकर नई चेतना जागृत की है। दुनिया में परमात्मा हर जगह नहीं पहुंच सकते, इसलिए मां को बनाया है। मां के चरणों में सारे तीर्थ होते हैं। हर समाज का निर्माण मां के हाथों से ही होता है। त्रिस्तुतिक समाज श्रीमती तेजकुंवरबाई काश्यप को सम्मानित कर स्वयं को आज गौरवान्वित महसूस कर रहा है।

चातुर्मास आयोजक, राज्य योजना आयोग उपाध्यक्ष, विधायक श्री चेतन्य काश्यप ने अमृत महोत्सव की स्मृति को चिरस्थायी बनाते हुए रतलाम में गरीबों के लिए बनने वाले आवासों के निर्माण में काश्यप परिवार द्वारा सात करोड़ पचास लाख रुपए की मदद देने की घोषणा की। उन्होंने माताजी के पीहर पक्ष की ओर से डॉ. गजेन्द्र जैन की उपस्थिति में पालीताणा में निर्मित त्रिस्तुतिक श्रीसंघ की प्रथम धर्मशाला चम्पा निवास त्रिस्तुतिक जैन श्रीसंघ को समर्पित करने की घोषणा भी की। श्री काश्यप ने कहा कि भारतीय संस्कृति और परम्परा में मातृशक्ति की वंदना का संस्कार दिया है। पुरुष प्रधान समाज की बात सभी करते हैं, लेकिन उनका मानना है कि परिवार की धूरी मातृशक्ति है। उनकी माताजी का जीवन सेवा, समर्पण का पर्याय रहा है। अहिंसा ग्राम की स्थापना की प्रेरणा देते हुए उन्होंने स्वयं प्रशिक्षण कार्य संचालित करने का भाव व्यक्त किया था। अमृत महोत्सव का आयोजन उनके

परिवार का सौभाग्य है। इसमें वे संकल्प व्यक्त करते हैं कि जीवन पर्यन्त, संघ, समाज और सेवा को समर्पित रहेंगे।

श्रीमती तेजकुंवरबाई काश्यप के अमृत महोत्सव का शुभारम्भ मातृ वन्दना से हुआ। इसमें युवा संगीतकार सिद्धार्थ काश्यप ने मुंबई से आए साथियों के साथ मातृ वंदना की संगीतमय प्रस्तुती देकर वातावरण को मातृभक्तिमय बना दिया। उनके साथ प्रसिद्ध पार्श्व गायिका मधुश्री एवं पार्श्व गायक ऋषिकेश ने भी अपनी प्रस्तुतियाँ दी। महोत्सव में लोकसंतश्री जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. ने श्रीमती काश्यप को आशीर्वाद स्वरूप प्रतिमा प्रदान की। साध्वी मण्डल ने जयन्तसेन प्रवचन माला भेंट की। संयुक्त जैन श्रीसंघ रतलाम द्वारा श्रीमती काश्यप को 'संस्कार ज्योति' की उपाधि प्रदान की गई। अभिनन्दन पत्र का वाचन जयन्त वोहरा ने किया। अहिंसा ग्राम परिवार ने भी श्रीमती काश्यप का सम्मान किया। अभिनन्दन पत्र का वाचन श्री शरद फाटक द्वारा किया गया। इससे पूर्व मंचासीन अतिथियों ने भी शाल, श्रीफल व स्मृति चिन्ह प्रदान कर मातृभक्ति का परिचय दिया। श्रीमती शांता-सोहनलाल पारेख ने गीत प्रस्तुत कर स्मृति चिन्ह प्रदान किया। इस मौके पर अतिथियों ने आचार्यश्री की पुस्तिकाओं का तथा जयन्त ज्योति पत्रिका का विमोचन भी किया।

कई संस्थाओं द्वारा अभिनन्दन- अमृत महोत्सव में श्रीमती तेजकुंवर बाई काश्यप का सामाजिक राजनीतिक व धार्मिक क्षेत्र की कई संस्थाओं ने अभिनन्दन किया। जावरा में आगामी 23 नवम्बर को भगवती दीक्षा अंगीकार करने वाली कुक्षी की सविता जैन के परिवार, अ.भा. राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश भाई धरू, अशोक श्रीश्रीमाल, महिला परिषद् की राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. अंगूरबाला सेठिया, पद्मा सेठिया, भाजपा जिलाध्यक्ष बजरंग पुरोहित व मण्डल अध्यक्ष जयवन्त कोठारी, रमेश बदलानी, संतोष पोरवाल, वरिष्ठ कांग्रेस नेता खुर्शीद अनवर, मुंबई प्रोग्रेसिव लेडिस वेलफेयर सोसायटी, प्रभुप्रेमी संघ, कालिका माता सेवा मण्डल ट्रस्ट, बुद्धेश्वर आश्रम ट्रस्ट, पार्श्वनाथ जैन मित्र मण्डल टीआईटी रोड़, काजी खान मस्जिद परिवार, प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय वि.वि. परिवार, जायसवाल समाज, खण्डेलवाल समाज, बैरवा समाज, आदिवासी एकता महासभा, चन्द्रप्रभु दिगम्बर जैन मंदिर टीआईटी रोड़, शीतल तीर्थ ट्रस्ट, अमरनाथ सेवा बर्फानी मण्डल, शांत -क्रांत महिला मण्डल, धर्मोत्तेजक महिला मण्डल, जोबट श्रीसंघ आदि संघों व संस्थाओं ने श्रीमती काश्यप का स्मृति चिन्ह शाल, श्रीफल से अभिनन्दन किया। इस मौके पर अतिथियों ने आचार्यश्री की पुस्तिकाओं का तथा जयन्त ज्योति पत्रिका का विमोचन भी किया गया।

सबसे बड़ा संस्कार है मानवता

: श्रीमती स्मृति ईरानी

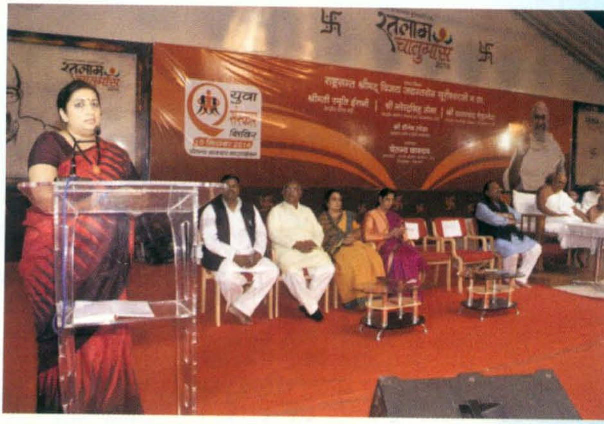

रतलाम। श्रीमती ईरानी ने जयन्तसेन धाम में राष्ट्रसन्तश्री जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. की निश्रा में चेतन्य काश्यप फाउण्डेशन द्वारा आयोजित युवा संस्कार शिविर के समापन सत्र को संबोधित करते हुए कहा कि समाज में शिक्षा का स्वरूप क्या हो, इस पर चिंतन जरूरी है। युवाओं में संस्कार सिंचन के लिए राष्ट्रसंतश्री की निश्रा में आयोजित शिविर को संस्कारित राष्ट्र निर्माण के लिए सुनहरा अवसर बताते हुए उन्होंने कहा कि युवा खूब पढ़ें और आगे बढ़ें, लेकिन जीवन में उन संस्कारों को नहीं भूलें, जो मानवता से हमें जोड़े रखते हैं। संतों का सान्निध्य जीवन में मार्गदर्शन करता है। युवा जीवन में धैर्य और संयम को अंगीकार करें। सफलता अवश्य मिलेगी। श्रीमती ईरानी ने प्रारम्भ में आचार्यश्री के दर्शन-वंदन कर आशीर्वाद लिया। फाउण्डेशन अध्यक्ष व राज्य योजना आयोग उपाध्यक्ष श्री चेतन्य श्री काश्यप ने स्वागत भाषण देते हुए कहा कि देश की उन्नति के लिए युवा तरुणाई का संस्कारवान होना जरूरी है। यह शिविर इस दिशा में सार्थक कदम होगा। श्री काश्यप, महापौर डॉ. सुनीता यार्दे, जिला पंचायत अध्यक्ष परमेश मईडा, विधायक संगीता चारेल तथा भाजपा जिलाध्यक्ष बजरंग पुरोहित, श्रीमती

नीता काश्यप, सिद्धार्थ काश्यप व श्रवण काश्यप ने इससे पूर्व श्रीमती ईरानी का स्वागत किया। राष्ट्रसंतश्री ने मांगलिक श्रवण करवाई।

संस्कारों की पहली उक्ति, ध्यान से सुनिए – श्री लोढ़ा

शिविर के विशेष सत्र में प्रख्यात कवि एवं टी.वी. कलाकार शैलेष लोढ़ा (तारक मेहता) ने युवाओं को मार्गदर्शन देते हुए कहा कि बदलता वही है, जो बदलना चाहता है। जीवन में सकारात्मक सोच के साथ स्वयं को बदलने का मुद्दा रखिए। घर में माता-पिता छत की तरह होते हैं, जिस घर में बुजुर्ग ना हो वह घर, घर नहीं रहता। आज के युवा सुनते वही हैं, जो वे चाहते हैं। इसलिए संस्कारों की पहली उक्ति यह है कि बुजुर्गों को ध्यान से सुनिए। उन्होंने कहा कि युवाओं को जीवन में बड़ों की बात सुनने की आदत डालनी चाहिए। वे संस्कारों की पहली पाठशाला होते हैं। आपने कहा कि युवाओं में अच्छे संस्कारों के लिए इस अद्भुत आयोजन हेतु मैं श्री चेतन्य काश्यप को साधुवाद देता हूँ। जिन्होंने ऐसे आयोजन की परिकल्पना को साकार स्वरूप दिया। श्री लोढ़ा ने शिविर में पहुंचे हजारों युवाओं से सीधे संवाद स्थापित करते हुए कहा कि युवाओं को अपनी संस्कृति, भाषा, परिवार और राष्ट्र पर गर्व करना चाहिए। युवा सपने देखने के साथ उन्हें पूरा करने के लिए पूरे जोश, उमंग व उत्साह के साथ कदम आगे बढ़ाएं, सफलता अवश्य मिलेगी। असफलता से डरिये मत। धैर्य और विश्वास के साथ कदम बढ़ाने वाले सफलता के शिखर पर पहुँचते हैं। प्रारंभ में सिद्धार्थ काश्यप ने श्री लोढ़ा के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला। इससे पूर्व पार्श्वगायक मोहम्मद सलीम ने अपनी प्रस्तुतियों ने समा बांध दिया। संचालन अब्दुल सलाम खोकर ने किया।

अडानी परिवार ने भी प्राप्त किया आशीर्वाद

लोकसन्त , आचार्य, गच्छाधिपति श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा. का आशीर्वाद लेने रविवार को कई गुरुभक्त जयन्तसेन धाम पहुंचे। देश के प्रसिद्ध अडानी समूह के सदस्यों ने भी लोकसन्तश्री के दर्शन-वंदन कर आशीर्वाद लिया। चातुर्मास आयोजक व राज्य योजना आयोग उपाध्यक्ष चेतन्य काश्यप ने अतिथियों का स्वागत किया। इस मौके पर आयोजक परिवार एवं रतलाम श्रीसंघ की ओर से अतिथि संघों का सम्मान किया गया। कई संगठनों ने श्री काश्यप का

अभिनन्दन किया। अडानी समूह के महासुख भाई अडानी, बसंत भाई अडानी, राकेश भाई शाह, योगेश भाई संघवी दोपहर में जयन्तसेन धाम पहुंचे। लोकसंतश्री से आशीर्वाद लेने के बाद अडानी परिवार ने रतलाम चातुर्मास के ऐतिहासिक आयोजन के लिश्र श्री काश्यप का सम्मान किया। इससे पूर्व आयोजक परिवार व श्रीसंघ की ओर से मदनलाल सुराणा, सुशील छाजेड़, राजकमल जैन ने अडानी परिवार के सदस्यों का बहुमान किया। प्रातः जावरा से प्रकाश कांठेड़ 150 सदस्यीय संघ लेकर जयन्तसेन धाम आए। श्री संघ की ओर से श्रेणिक घोचा, उपेन्द्र कोठारी, नरेन्द्र घोचा, राजेन्द्र खाबिया, विनय सुराणा ने जावरा के बाबूलाल नाहर, जयपुर से राजेन्द्र कुमार जैन, महूमा से महावीर प्रसाद जैन व श्री कांठेड का बहुमान किया। श्री जैन श्वेताम्बर वरिष्ठ श्रीसंघ के सदस्यों ने श्रीमती तेजकुंवरबाई काश्यप का अभिनन्दन किया।

जयन्तसेन धाम में लगा गुरुभक्तों का मेला

रतलाम। लोकसंत श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. के चातुर्मास स्थल जयन्तसेन धाम में विभिन्न स्थानों से आए श्रद्धालुओं ने लोकसंतश्री के दर्शन-वंदन कर आशीर्वाद लिया। संघपतियों का चातुर्मास आयोजक व राज्य योजना आयोग उपाध्यक्ष श्री चेतन्यजी काश्यप परिवार तथा श्रीसंघ की ओर से बहुमान किया गया। संघ प्रतिनिधियों ने आचार्यश्री के रतलाम चातुर्मास का सफलतम

आयोजन करने पर श्री काश्यप का अभिनंदन कर साधुवाद दिया।

लोकसंतश्री ने श्रद्धालुओं को संबोधन में कहा कि मनुष्य के जीवन में संपत्ति होना आवश्यक है, लेकिन उसके साथ सन्मति का होना अतिआवश्यक है। सन्मति नहीं होने पर प्राप्त संपत्ति का उपयोग व्यर्थ के कार्यों में अधिक होगा। ऐसी संपत्ति जीवन के गुणों का नाश कर दुर्गुणों का विकास करती है। सन्मति के बिना संपत्ति पाप, दुराचार, भोग व विलास आदि दुर्गुण बढ़ाती है। पापमय प्रवृत्तियों से सम्पत्ति का नाश हो जाता है। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को सम्पत्ति के साथ सन्मति प्राप्त करने का लक्ष्य रखना चाहिए। सन्मति ऐसे ही नहीं मिलती, वह धर्म के प्रभाव से प्राप्त होती है।

राष्ट्रसंतश्री के दर्शन के लिए मेघनगर से पदयात्रा कर नौ यात्री जयन्तसेन धाम पहुंचे। सभी यात्रियों का आयोजक परिवार की ओर से सिद्धार्थ काश्यप ने बहुमान कर स्मृति चिन्ह प्रदान किया। प्रदेश के ऊर्जा मंत्री पारस जैन एवं उज्जैन श्रीसंघ, नैनावा श्रीसंघ, घुमडिया श्रीसंघ, धानेरा श्रीसंघ, धार श्रीसंघ, राणापुर श्रीसंघ एवं मूर्तिपूजक जैन श्रीसंघ नागदा (धार) के प्रतिनिधियों ने राष्ट्रसंतश्री से आशीर्वाद प्राप्त कर चातुर्मास आयोजक चेतन्य काश्यप का अभिनन्दन किया। दादा गुरुदेव की आरती का लाभ वाघमलजी ऊकचन्दजी नैनावावाला ने लिया।

मुनिराजश्री निपुणरत्नविजयजी म.सा. ने 'बहुत कुछ है पैसा, पर सब कुछ नहीं' विषय पर विशेष प्रवचन में कहा कि धन मिलने के बाद व्यक्ति धर्म से दूर चला जाए तो ऐसा धन जीवन में अशांति, क्लैश, चिन्ता का वातावरण उत्पन्न कर देता है। आकाश का जैसे अन्त नहीं है, वैसे ही धन कमाने का भी नहीं होता। व्यक्ति कितना भी कमा ले, मगर हमेशा यही कहता है कि कमाया अर्थात् कम आया।

जीवन की दिशा सही होना चाहिए : राष्ट्रसंतश्री

जीवन अगर सही दिशा में है, तो प्रगति अवश्य होगी। गलत रास्ते पर दौड़ने वाले भी आगे पहुंचकर पश्चाताप करते हैं। उक्त प्रेरक प्रवचन जयन्तसेन धाम में आयोजित धर्मसभा में जैनाचार्य लोकसन्त श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. ने आशीर्वचन के रूप में व्यक्त किए। आपने कहा कि परमात्मा की वाणी ही हमें जीवन का रहस्य समझाती है। जीवन प्रत्येक मनुष्य को एक जैसा मिला है, किन्तु प्रत्येक मनुष्य के आचार-विचार में भिन्नता दिखाई देती है। जो सत्य समझकर उस मार्ग पर

चलता है, वह अवश्य ही मोक्ष रूपी लक्ष्य को प्राप्त कर लेता है।

मुनिराजश्री ने निपुणरत्नविजयजी म.सा. ने धर्मसभा में उत्तराध्ययन सूत्र के पंचम अकाम मरण अध्ययन की विवेचना में कहा कि चार गति में मनुष्य ही ऐसा है, जिसे मृत्यु का एहसास होता है। मृत्यु हर जन्म में अनेक बार आती है, लेकिन मनुष्य जीवन में मरने का मजा अलग है। हमें मृत्यु को समझने का प्रयत्न करना चाहिए। ऐसी मृत्यु होना चाहिए जिसमें अनेक बार जन्म न हो। मुनिश्री ने कहा कि मनुष्य को सत्ता, संपत्ति आदि एकत्र करने में वर्षों लग जाते हैं, लेकिन मृत्यु आते ही वर्षों की मेहनत एक पल में नष्ट हो जाती है।

अतः मृत्यु का स्मरण पल-पल होना चाहिए। जिससे जीवन धर्ममय बना रहता है। आपने कहा कि हमें संसार में इतना फैलाव नहीं करना चाहिए कि मृत्यु के समय सब को छोड़ने का दुख हो। मृत्यु को महोत्सव बनाने वाला मृत्यु के पश्चात भी जीवित रहता है और उसका जीवन सभी के लिए आदर्श बन जाता है। महापुरुषों की मृत्यु भी एक अच्छा जीवन जीने का संदेश देती है। संचालन श्री राजकमल दुग्गड़ ने किया।

विक्रम चरित्र सुनकर करें चरित्र निर्माण

जीवन की स्थिति का आकलन आचारों से होता है। चरित्र के आलेखन भी इसीलिए होते हैं कि हम महापुरुषों के जीवन के गुणों का अनुकरण कर सकें। उनका जीवन हमारे लिए आदर्श बनता है। जीवन जीने की रीत एवं शैली में भी परिवर्तन आता है।

विक्रम चारित्र सुनकर चरित्र निर्माण की शिक्षा लें। यह आशीर्वाचन गुरुवार को जैनाचार्य, लोकसंत श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. ने जयन्तसेन धाम में विक्रम चरित्र का वाचन करते हुए कहे। उन्होंने कहा कि किसी भी जीव में अच्छा गुण दिखे, तो उसे तुरन्त ग्रहण करना चाहिए। गुण ग्रहण करने पर एक सद्गुण हमें भी मिलता है।

विक्रम चरित्र ऐसे ही सद्गुणों की प्रेरणा हमें देता है। इससे पूर्व मुनिश्री निपुणरत्नविजयजी म.सा. ने उत्तराध्ययन सूत्र की विवेचना करते हुए कहा कि त्याग के बिना वैराग्य नहीं होता है। त्याग के परिणाम मानव जीवन में ही आते हैं।

आचार्य जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा.

रतलाम चातुर्मास 2016

सानिध्यदाता- सुविशाल समर्थ गच्छाधिपति, लोकसन्त

श्रीमद् विजयजयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा.

सप्त दिवसीय अनुष्ठान

31 अक्टूबर से 6 नवम्बर 2016

कार्तिक सुदि 1, दि. 31 अक्टूबर 16, सोमवार- नूतन वर्ष प्रारंभ
प्रातः ६ बजे श्री गौतमरास वांचन एवं मांगलिक

1 नवम्बर 16

कार्तिक सुदि 2, मंगलवार
श्री यतीन्द्र सूरीश्वरजी म.सा.
जन्मतिथि प्रवचन-पूजा

2 नवम्बर 16

कार्तिक सुदि 3, बुधवार
प्रातः ९ बजे शतावधान
प्रस्तुतिः मुनि श्री प्रत्यक्षरत्न
विजयजी म.सा.

3 नवम्बर 16

कार्तिक सुदि 4 (प्र), गुरूवार
प्रात: 9.30 बजे: समूह सामायिक
दोप.: 12.00 बजे:खीर एकासणा

4 नवम्बर 16

कार्तिक सुदि 4 (द्वि.), शुक्रवार
प्रात: 9.30 बजे:अभिषेक उत्सव
दोप.: 12.00 बजे:दीपक एकासणा

5 नवम्बर 16

कार्तिक सुदि 5, शनिवार
ज्ञानपंचमी पर्व
प्रात: 9.30 बजे:विशेष प्रवचन
दोप.: 2.00 बजे:देववंदन

6 नवम्बर 16

कार्तिक सुदि 6, रविवार
MSG प्रस्तुत धर्म जागृति यात्रा
10 वर्ष से 24 वर्ष तक
बालक-बालिका के लिये

चातुर्मास आयोजक
चेतन्य कुमार काश्यप
उपाध्यक्ष-राज्य योजना आयोग
विधायक - रतलाम

चातुर्मास आयोजन स्थल
श्री जयन्तसेन धाम
सागोद रोड, रतलाम (म.प्र.)

आचार्य श्री जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा.
रतलाम चातुर्मास 2016

चातुर्मास आयोजक
चेतन्य कुमार काश्यप
उपाध्यक्ष-राज्य योजना आयोग
विधायक - रतलाम

चातुर्मास आयोजन स्थल
श्री जयन्तसेन धाम
सागोद रोड, रतलाम (म.प्र.)

9 अखण्डता का इतिहास 9

चातुर्मास प्रारम्भ
18 (1+8=9)
जुलाई को हुआ

प.पू. गच्छाधिपति श्री सहित
18 (1+8=9)
श्रमण- श्रमणी है

चातुर्मास में उत्तराध्ययन सूत्र के
अध्ययन पर
36 (3+6=9)
प्रवचन चल रहा है

जयन्तसेन धाम की प्रतिष्ठांजनशलाका
18 (1+8=9)
अगस्त को हुई

योग से बने संयोग

प.पू. गच्छाधिपति श्री
1125 (1+1+2+5=9)
दिन पश्चात
रतलाम पधारे

चातुर्मास आयोजक काश्यप परिवार में
9 (1+2+4+2=9)
सदस्य ही है

इस चातुर्मास की उद्घोषणा
72 (7+2=9)
जिनालय में हुई

मुनिश्री निपुणरत्न विजयजी का
9
मिनिट में हुआ लोच

प.पू. गच्छाधिपति श्री का
63 (6+3=9)
वां चातुर्मास है

इस चातुर्मास का
2016 (2+0+1+6=9)
सन् है

संयोजन - मुनि श्री निपुणरत्न विजयजी म.सा.

आचार्य जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा.
रतलाम चातुर्मास 2016

– एक कदम

अनुभव की दुनिया में..

– मुनि श्री निपुणरत्न विजय

रतलाम चातुर्मास में भक्तामर स्तोत्र का आनंद-अनुभव अलग ही रहा। इस वर्ष प्रथमबार भक्तामर स्तोत्र में श्रावकों की संख्या अधिक देखने में आई । नियमित उपस्थिति भी आकर्षक रही। सभी के भाव भी उत्तम-सर्वोत्तम है। समझने की जिज्ञासा भी अच्छी है। 4 कि.मी. नित्य आना भी अनुमोदनीय है। भक्तामर स्तोत्र की परीक्षा का परिणाम भी बहुत अच्छा रहा। सभी के भावों को देखकर भक्तामर स्तोत्र के अर्थ के साथ 36 कर्त्तव्य, 34 अतिशय, 18 पापस्थानक एवं मार्गानुसारी के 35 गुण भी समझाने का प्रयत्न गुरु कृपा से किया है। सभी के अनुभव यहाँ पर प्रकाशित हो रहे हैं, यह पढ़कर आप भी अनुभव कर सकेंगे कि रतलाम चातुर्मास का भक्तामर स्तोत्र बहुत ही अच्छा रहा। सभी के जीवन में एवं भावों में अनुपम परिवर्तन हुआ है। काश्यप परिवार सौभाग्यशाली है। जिन्होंने यह चातुर्मास आयोजन कर सभी के भाग्य को उज्जवल-उन्नत बनाया है।

श्री भक्तामर स्तोत्र आराधक मंडल रतलाम

हृदय के भाव शब्दों में

* भक्तामर स्तोत्र का पाठ अपूर्व प्रसन्नता देने वाला रहा। सदियां बीत जाने पर भी इसका प्रभाव अखण्ड है। इस चातुर्मास में इसके नित्य पाठ से मेरे जीवन में अभूतपूर्व परिवर्तन हुआ है। सर्वभय-सर्वदोष को समाप्त करने वाला यह स्तोत्र है, ऐसा अनुभव भी हुआ है।

– कांतिलाल चोपड़ा परिवार, रतलाम

* भक्तामर का पाठ करने से मन को बड़ी शांति मिलती है। इस चातुर्मास से ऐसा लगने लगा है कि जिस दिन पाठ नहीं होता, उस दिन दिनभर बेचेनी रहती है। अब परमात्मा के सिवा अन्य की स्तुति करने का मन नहीं होता ।

– प्रवीण मालक, रतलाम

---

* भक्तामर स्तोत्र पाठ आनंददायक रहा। सुबह-सुबह जयन्तसेनधाम आना। देव-गुरु के दर्शन करना। पू.मुनिश्री निपुणरत्नविजयजी म.सा. के संग भक्तामर स्तोत्र एवं प्रार्थना करना जीवन में उत्साह का संचार कर गया। सामूहिक पाठ मर्मस्पर्शी यादगार रहा। आध्यात्मिक उन्नति में यह आयोजन सार्थक रहा। विनय गुण का विकास एवं सकारात्मक सोच, अध्यात्म निष्ठा में अभिवृद्धि भी हुई। हृदय भी स्वच्छ हो गया।

– प्रो. विजय जैन– रतलाम

---

* भक्तामर का पाठ करने से दिन बहुत अच्छा निकलता है। जैसे गाड़ी में पेट्रोल डालने से हमारी गाड़ी नहीं रुकती, वैसे ही भक्तामर का पाठ भी हमें नित्य नई ऊर्जा देता है।

– अभिषेक कटारिया, रतलाम

---

* मैं तो एक दिन बड़े भाई प्रवीणजी के साथ जयन्तसेन धाम आया था, प्रथमबार भक्तामर स्तोत्र पाठ करके आकर्षित हो गया और निरंतर आने लगा। नित्य आने से धर्म के प्रति विश्वास भी बढ़ गया। दिन भर यही शब्द गूंजते रहते है। मैं धन्य हूँ कि मुझे आपके जैसे म.सा. एवं प्रवीणजी जैसे मित्र मिले, जिन्होंने ऐसा रास्ता दिखाया।

– मनीष जैन, रतलाम

---

* आत्मा एवं परमात्मा का मिलन है यह भक्तामर स्तोत्र। यह रचना बहुत अद्भुत है। एक-एक गाथा में प्रभु के गुणों की स्तवना है। तुच्छ कार्य के लिये नहीं, अपितु अध्यात्म के लिये ही इसका उपयोग करना चाहिये। जयन्तसेन धाम में आकर यह पाठ करने से देव गुरु दर्शन एवं मन को परमशांति का अहसास हुआ।

– श्रेणिक कांठेड़, रतलाम

* भक्तामर का पाठ करने से बहुत ज्ञान प्राप्त हुआ। उच्चारण में जो गलती थी वह भी सुधर गई। एक-एक गाथा का प्रभाव जानने को मिला। इसकी गहराई को समझने का अवसर मिला। पू. म.सा. के हम बहुत आभारी है। हम जीवनभर इसका पाठ करेंगे।

- राखी मेहता- रतलाम

---

* भक्तामर स्तोत्र अत्यन्त प्रभावशाली एवं अपूर्व आत्मप्रसन्नता देने वाला है। शब्द संयोजन अद्भूत है। सम्पूर्ण निष्ठा से इसका गान करने से असीम आनंद की अनुभूति होती है। पूरा दिन उत्साह बना रहता है। जीवन में आने वाले सभी भय नष्ट होते है ऐसा अनुभव हुआ है।

- विपिन भंडारी, रतलाम

---

* भक्तामर स्तोत्र पाठ करने से प्रभु की लगन दिल से अब लगी है। अब मंदिर में मूर्ति नहीं साक्षात् परमात्मा दिखते है। एक दिन तो सुबह-सुबह अदृश्य आवाज सुनाई दी । उठ संजय ! भक्तामर का समय हो गया है। बहुत ही आनंदमय यह अवसर मिला है।

- संजय कोठारी, रतलाम

---

* भक्तामर स्तोत्र का पाठ करने से जीवन में जैनत्व का संचार हुआ। अब अपने आपको जैन धर्म में जन्म पाकर धन्य मान रहा हूँ । भक्तामर के प्रभाव एवं मुनिजी निपुणरत्नविजयजी म.सा. की प्रेरणा से पहली बार 11 उपवास की तपस्या की । इसके पाठ से मन में अति प्रसन्नता, पारिवारिक खुशहाली एवं व्यापार में भी अभिवृद्धि हुई। मैं नित्य पाठ करूंगा।

- प्रवीण लोढ़ा- रतलाम

---

* भक्तामर स्तोत्र का पाठ करने से ऐसा जुड़ाव हो गया है एक भी दिन पाठ किये बिना रह नहीं सकता। रात को इसी भावना से सोता हूँ कि सुबह उठते ही भक्तामर में जाना है। जल्दी उठने की आदत बन गई है। दिन की शुरुआत एवं सम्पूर्ण दिन बहुत अच्छा व्यतित होता है। म.सा. के द्वारा अर्थ बताने पर पाठ करने का अधिक आनंद आता है।

- राजेश चत्तर, रतलाम

|| श्री महावीर स्वामिने नमः ||

|| प्रातः स्मरणीय गुरुदेव प्रभु श्रीमद् विजय राजेन्द्र-धनचन्द्र-भूपेन्द्र-यतीन्द्र-विद्याचन्द्रसूरि गुरुभ्यो नमः ||

अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद परिवार संचालित

मधुकर સંસ્કાર Gyanayatan Present

धर्म जागृति यात्रा-1

MSG

जय જય Gyanayatan

धर्म जागृति यात्रा-1

* प्रेरणा-आशीर्वाद *

गच्छाधिपति श्रीमद् विजय **जयन्तसेनसूरीश्वरजी** म.सा. ''मधुकर''

नवकारप्रेमी,

प्रणाम !!!

आप सभी की कुशलता की मंगल कामना करते है ।

आमंत्रण पत्रिका प्रेषित करते हुए अति प्रसन्नता हो रही है कि प.पू. गच्छाधिपति **श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.** द्वारा संस्थापित **''मधुकर संस्कार Gyanayatan परिवार''** द्वारा संप्रति महाराजा के इतिहास को याद करानेवाली **''धर्म जागृति यात्रा''** का आयोजन किया गया है । पंच दिवसीय इस यात्रा में **''ज्ञानायतन परिवार''** द्वारा गाँव में 12 व्रतधारी बाल श्रावको द्वारा विशेष आयोजन होंगे, जो जीवन परिवर्तन में निमित्त बनेंगे । आप सभी सादर आमंत्रित है, अवश्य पधारें ।

1-11-2016	2-11-2016	3-11-2016
जावरा	राणापुर	बडनगर
4-11-2016	**5-11-2016**	**6-11-2016**
खाचरोद	नागदा	रतलाम

कार्यक्रम - Schedule

05-30 बजे **परमात्म वधामणा**

09-00 बजे **मेरु महोत्सव भव्य अभिषेक**

11-00 बजे **प्रवचन**

02-00 बजे **ऋणस्मरण (मातृ-पितृ वंदना)**

04-00 बजे **धार्मिक प्रतियोगीता**

06-00 बजे **संध्या चिंतन (भक्ति)**

07-00 बजे **प्रतिक्रमण**

08-00 बजे **विधि-अविधि ज्ञान**

* यात्रा के लाभार्थी *

संघवी इन्दरमलजी, सुमित, मनीष, राजेश, लोकेश, हर्ष, यश, देव, गर्व, पर्व वर्धन दसेडा परिवार (साफावाला-जावरा)

याद આવે Gyanayatan

संचालक : अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद परिवार

प्रवचन

अशुभ वचन योग (1)

(गतांक से आगे)

सुविशाल गच्छाधिपति युग प्रभावक लोकसंत
जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.

महानुभावों!

'उत्तराध्ययनसूत्र' के रूप में शिष्यों को अपने अन्तिम सारगर्भित महत्त्वपूर्ण उपदेश का उपक्रम करते हुए प्रभु श्री महावीर स्वामी कह रहे हैं–

संजोगा विप्पमुक्कस्स अणगारस्स भिक्खुणो।
विणयं पाडकरिस्सामि आणुपुव्विं सुणेह में।।

संयोगों से मुक्त अनगार (गृहत्यागी) भिक्षुओं के लिए मैं विनय के स्वरूप का निरूपण करने वाला हूँ। मुझे सब लोग क्रमशः सुनें (मेरे द्वारा कही जाने वाली बातों पर ध्यान दें।)

अपने संयोग से आत्मा को कलुषित करने वाले अशुभ मनोयोग के बाद अशुभ वचनयोग का विवेचन आज से प्रारम्भ किया जा रहा है। इसी उत्तराध्ययन सूत्र में प्रभु महावीर स्वामी ने एक सूत्र दिया है–

बहुयं मा ये आलवे।।

अधिक नहीं बोलना चाहिए। किस से अधिक? आवश्यकता से अधिक। मतलब यह कि जिस समय जितना बोलने की आवश्यकता हो, उस समय केवल उतना ही बोलना चाहिए। जिसे अधिक बोलने की आदत होती है, वह अपने गोपनीय रहस्य भी प्रकट कर देता है और फिर पछताता रहता है। रहस्य खुल जाने पर विरोधी सावधान हो जाते हैं और कार्य में अड़चनें पैदा करने लगते हैं। उससे सफलता खटाई में पड़ जाती है। यही कारण है कि सज्जन अपना लक्ष्य बताते नहीं हैं और चुपचाप प्रयास करते रहते हैं। सफलता स्वयं ही लोगों को बता देती है कि अमुक व्यक्ति ने कितना प्रयत्न किया था। कहा है–

हियये जाओ तत्थेव, वड्ढियो नेव पयडिओ लोए।
ववसायपायवो सुपुरिसाण लक्खिज्जइ फलेहिं।। – वज्जालग्गम्

व्यवसाय रूपी वृक्ष सज्जनों के हृदय में उत्पन्न हुआ और वहीं बढ़ता

रहा, अन्य किसी को पता नहीं लगा (क्योंकि कहा नहीं गया था)। जब उस वृक्ष पर फल लगे (कार्य में सफलता प्राप्त हुई) तब लोगों ने अनुमान लगा लिया कि उसके मूल में कितना प्रयत्न किया होगा।

वाचालता के कारण मुँह से ऐसी बात भी निकल जाती है, जो सत्य न हो। स्थानांग सूत्र में (6/529) में कहा गया है–

मोहरिये सच्चवयणस्स पलिमंथु।।

मुखरता सत्यवचन का विघात करने वाली होती है। असत्य बोलकर बाद में लज्जित होने की अपेक्षा सावधानी से कम बोलना अधिक अच्छा है।

कुदरत ने दो आँखे और दो कान दिए हैं, पर जीभ एक ही दी है, जिससे वह यह सन्देश देना चाहती है मनुष्य को कि दो दृश्य देखे, दो बातें सुनें, परन्तु बोले केवल एक। किसी शायर ने कहा है–

कहे एक जब सुन ले इन्सान दो, कि हक ने जुबाँ एक दी, कान दो।।

नीतिकार विदुरजी की सलाह है–अतिवादं न प्रवदेन्न वादयेत्।।–विदुरनीति 4/11

न स्वयं अधिक बोलना चाहिए और न दूसरों से अधिक बुलवाना चाहिए।

जो काम स्वयं अपने लिए अहितकर है, वह दूसरों के लिये भी अहितकर है। इसीलिए अनुभवी संत कहते हैं–

जयं चिट्ठे मियं भासे।। – दशवैकालिक 8/19

सावधानीपूर्वक खड़े रहो और परिमित बोलो। किसी विचारक ने प्ररूपित किया है कि जो व्यक्ति कम जानता है, वही अधिक बोलता है और इससे ठीक विपरीत जो व्यक्ति जानता है, वह बहुत कम वचन बोलता है।

अवसर के अनुसार जितना उचित है, बोलना बुद्धिमत्ता का लक्षण है। तोते की और कोयल की बोली मीठी लगती है, पर वे कितना कम बोलते हैं? और कर्कश ध्वनि में मेंढक टर्राता ही रहता है, पर उसे कौन सुनना पसंद करता है? कोई नहीं।

शुक–पिक लगे सवाद, भल थोड़ो ही भाखणे।
वृथा करे बकवाद, भेक लवे ज्यूँ भेरिया। – सोरठा संग्रह

जिनका जीवन उपयोगी है, वे कम बोलकर भी सम्मान पा जाते हैं, किन्तु जिनका जीवन अनुपयोगी है, वे बहुत अधिक बोलकर भी सम्मान नहीं पा सकते।

(क्रमशः)

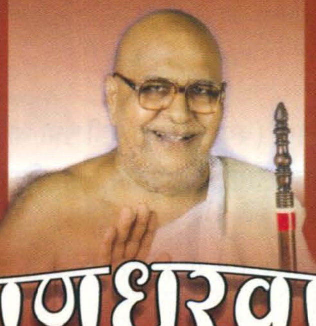

गणधरवाद

प्रवचनकार

सुविशाल गच्छाधिपति लोकसंत आचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.

सुख दुखादि कार्य का समवायी कारण आत्मा है और वह अमूर्त ही है । और कर्म तो सुखादि का अनादि की तरह निमित्त कारण है । इसलिए नियम में कोई दोषापत्ति नहीं है ।

अग्निभूति – कर्म की मूर्तता की सिद्धि के लिए यदि अन्य कोई हेतु हो तो बताये ।

महावीर – कर्म के मूर्तिकत्व साधक अन्य हेतु इस प्रकार है –

1. कर्म मूर्त है, क्योंकि उसका संबंध होने से सुख-दुखादि का अनुभव होता है। खाद्य आदि भोजन की तरह । जो अमूर्त होता है उसका संबंध होने पर सुखादि का अनुभव नहीं होता। जैसा कि आकाश। कर्म का संबंध होने से आत्मा सुखादि का अनुभव करती हैं, अतः कर्म मूर्त है।

2. कर्म मूर्त है क्योंकि उसका संबंध होने पर वेदना का अनुभव होता है। जिसका संबंध होने से वेदना का अनुभव होता है, इसलिए वह मूर्त होना चाहिए।

3. कर्म मूर्त है क्योंकि आत्मा और उसके ज्ञानादि धर्मों से भिन्न होने पर भी बाह्य वस्तु से उसमें बलाधान होता है अर्थात चिकनाहट आती है । जैसे घड़े में तेल आदि बाह्य वस्तु के विलेपन से बलधान होता है, वैसे ही कर्म में भी माला, चन्दन, वनिता आदि बाह्य वस्तुओं के संसर्ग से बलाधान होता है। अतएव वह घड़े की तरह मूर्त है।

4. कर्म मूर्त है, क्योंकि आत्मा से भिन्न होने पर भी वह परिगामी है- दूध की तरह । आत्मादि से भिन्न होने पर भी जैसे दूध परिणामी है, वैसे ही कर्म भी मूर्त है।

कर्म परिणामी हैं

अग्निभूति – कर्म का परिणामित्व सिद्ध नहीं है। अतः पूर्वोक्त परिणामित्व हेतु से कर्म मूर्त सिद्ध नहीं हो सकता ।

महावीर – कर्म परिणामी है,

क्योंकि उसके कार्य शरीरादि परिणामी हैं।

परिणामी हैं। जिसका कार्य परिणामी होता है, वह स्वयं भी परिणामी होता है - दूध स्वयं भी परिणामी है। वैसे ही कर्म का कार्य शरीर परिणामी- विकारी होने से कर्म भी स्वयं परिणामी है। इसलिए कर्म परिणामी है, यह हेतु असिद्ध नहीं है।

कर्म का वैचित्र्य

अग्निभूति – अपने सुख-दुख के हेतु रूप में कर्म की सिद्धि की है और यह भी कहा है कि समान साधन होने पर जो फल वैविध्य अनुभव किया जाता है, वह कर्म वैचित्र्य के बिना संभव नहीं है। परन्तु बादलों में विचित्र प्रकार के विकारों के होने पर भी उनका कारण कर्म वैचित्र्य नहीं है। इसी प्रकार कर्म वैचित्र्य के बिना संसारी जीव के सुख-दुख की तरतमता रूप विचित्रता भी मान लेनी चाहिये और ऐसा मान लेने में कोई दोषापत्ति नहीं है।

महावीर – सौम्य ! यदि तुम बाह्य स्कन्धों को विचित्र मानते हो, तो आन्तरिक कर्म में ऐसा क्या अन्तर है कि जिसके कारण पुद्गल रूप से दोनों के समान होने पर भी बादल आदि बाह्य स्कन्धों की विचित्रता को सिद्ध मानते हो और कर्म की विचित्रता को नहीं। वास्तव में तुम्हें जीव के साथ संश्लिष्ट कर्म पुद्गलों को तो विचित्र मानना ही चाहिए क्योंकि अन्यान्य बाह्य पुद्गलों की अपेक्षा आन्तरिक कर्म पुद्गलों में वे जीव द्वारा ग्रहण किए जाते है ऐसी विशेषता तो है ही और इसीलिए वे जीव जगत वैचित्र्य सुख-दुख के कारण बनते है।

इसके अतिरिक्त जैसे तुम उन बाह्य पुद्गलों को विचित्र मानते हो जिनको जीव ने ग्रहण नहीं किया है, वैसे ही जीव द्वारा ग्रहण किये गये कर्म पुद्गलों को तो और भी विशेष रूप में विचित्र मानना चाहिए। क्योंकि प्रयत्न निरपेक्ष अन्य किसी के प्रयत्न के बिना स्वाभाविक रीति से बादलों आदि पुद्गलों में होने वाली इन्द्रधनुष रूप विचित्रता की अपेक्षा जैसे किसी शिल्पी द्वारा प्रस्थापित पुद्गलों में भी विविध प्रकार से सुख-दुख उत्पन्न करने वाली विशिष्ट प्रकार की परिणाम-विचित्रता क्यों नहीं होगी ? अर्थात अवश्य होगी।

(क्रमशः)

शाश्वत धर्म गुजरात प्रतिनिधि
विपुल कुमार बाबूलाल दोषी
2/201, इशिता पार्क सोसायटी
संघवी टॉवर के पीछे,
अडाजन रोड़, सूरत-395009
मो.: 09427969984,
8401235001

लेखांक 39

स्वर्णप्रभा

सुविशाल गच्छाधिपति लोकसंत जैनाचार्य
श्रीमद् विजयजयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.

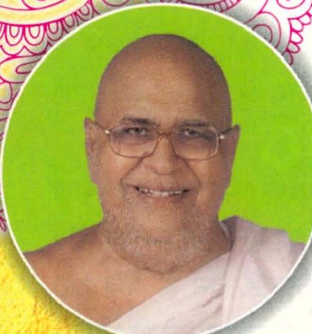

अपने इन प्रयत्नों में परिवार के सभी सदस्य विभिन्न प्रकार के उपायों पर भी विचार करते थे, किन्तु अभी तक उन्हें ऐसा कोई उपाय नहीं मिल पाया था, जिससे फूलकुंवर से बात करने का प्रयास किया, उसे प्रताड़ित ही होना पड़ा था। एक दिन सबसे छोटी पुत्र वधू कुछ सोच-विचार कर फूलकुंवर के कक्ष में जा पहुंची। अपने कक्ष में अपनी छोटी भाभी को आया देखकर फूलकुंवर भड़क उठी। उसने कहा 'मेरे कमरे में आने के लिये आपको क्या किसी ने पीले चांवल भेजे थे। निकल जाओ मेरे कमरे से । बिना पूछे कभी भी मेरे कमरे में आने का दुस्साहस मत करना । मेरे अतिरिक्त इस कमरे में किसी अन्य के आने से मेरे ठाकुरजी क्रुद्ध होते हैं। जाओ, भागो यहाँ से नहीं तो मैं धक्के मारकर निकाल दूंगी।'

यह तो सरासर अपमान था, किन्तु छोटी बहू ने धैर्य से काम लिया। वह वहीं खड़ी रह गई। उसने कहा- 'जीजी ! पहले मेरी बात सुन लो। उसके बाद भले ही मुझे निकाल देना ।'

'मुझे कुछ नहीं सुनना है। तुम जाती हो कि मैं धक्के मारूं।' अपने स्थान से उठकर वह छोटी बहू के पास तक आ गई। तभी न जाने कैसे छोटी बहू के मुख से निकल गया- 'जीजी ! मैं तो तुम्हारे ठाकुरजी की आज्ञा से यहाँ आई हूँ।'

ठाकुरजी की आज्ञा से आने की बात सुनकर फूलकुंवर रुक गई। उसने पूछा- 'ठाकुरजी की आज्ञा ! कैसी आज्ञा ! कब दी मेरे ठाकुरजी ने तुम्हें आज्ञा ?'

'अब तुम हमारी कोई बात सुनना ही नहीं चाहती हो तो कैसे बतायें ।' छोटी बहू फूलकुंवर की परिवर्तित मुद्रा को देखकर समझ गई कि ठाकुरजी के नाम का जादू चल गया है।'

'अच्छा ...आओ, बैठो।' फूलकुंवर ने कहा और अपनी छोटी भाभी की बांह पकड़कर उसे अपने पर्यंक पर बैठाकर पूछा– 'अब बताओ । ठाकुरजी ने तुम्हें कब और कैसी आज्ञा दी।'

अब वह क्या उत्तर दे । उसकी समझ में कुछ भी नहीं आ रहा था । उसे मौन देखकर फूलकुंवर ने पुनः पूछा– 'भाभी ! आप बताती क्यों नहीं कि आपको ठाकुरजी ने क्या आज्ञा दी है।'

'अब तुम्हें कैसे बताऊँ।' पर बताना ही पड़ेगा ही। ठाकुरजी रात को मुझे स्वप्न में आकर कह रहे थे कि तुम फूलकुंवर के कमरे में जाना । मेरे आसन को ठीक प्रकार से साफ करना । एक कंकर वहाँ रखा है, जो मेरे शरीर में चुभता है।' छोटी बहु ने कुछ तो भी कह दिया ।

'परन्तु ठाकुरजी ने मुझे यह आदेश क्यों नहीं दिया ।' फूलकुंवर ने पूछा।

'यह तो मैं नहीं जानती । किन्तु ठाकुरजी ने इतना और कहा था कि फूलकुंवर तो मेरी भक्ति में पगला गई है। वह दिन-रात मेरी भक्ति में डूबी रहती है। उसे इस ओर कुछ भी ध्यान नहीं है।' छोटी बहू ने दूसरा झूठ बोला।'

'हाँ भाभी ! बात तो सही है । चलो अब तुम अपने हाथ से ही मेरे ठाकुरजी के वहाँ सफाई कर दो। लगता है ठाकुरजी तुमसे प्रसन्न है।' फूलकुंवर ने कहा और अपनी छोटी भाभी को ठाकुरजी के स्थान तक ले गई। छोटी बहू ने बड़ी सावधानी से वहां की सफाई की । यह भी एक संयोग ही था कि ठाकुरजी के आसन के ठीक नीचे चने के बराबर का एक कंकर पड़ा मिला। इससे फूलकुंवर को दृढ़ विश्वास हो गया कि उसकी छोटी भाभी को स्वप्न में ठाकुरजी ने ही आदेश दिया था। साफ-सफाई करने के पश्चात् थोड़ी देर तक ननद-भौजाई मीठी-मीठी बाते करती रही ।

(क्रमशः)

रजत रश्मियां रू.1000=00 मुनिराज श्री वीररत्न विजयजी म., मुनिराज श्री विनितरत्न विजयजी म.सा. एवं साध्वी श्री मोक्षगुणाश्रीजी व साध्वी श्री नम्रगुणाश्रीजी ठाणा-2 के चातुर्मास निमित्त श्री त्रिस्तुतिक जैन संघ जोधपुर की ओर से भेंट-व्यवस्थापक

उत्तरदाता

प्रश्नोत्तरी

संहनन नाम कर्म के भेद

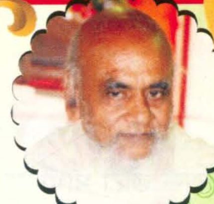

प्रश्नकर्त्ता

पू. श्रीमद् विजयजयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा.

पू. मुनिराज श्री नित्यानंद विजयजी म.सा.

प्र. संहनन नामकर्म किसे कहते हैं ?

उ. जिसके द्वारा औदारिक शरीर पुद्गल दृढ़ किया जावे उसे संहनन नाम कर्म कहते हैं।

प्र. वज्रऋषभ नाराच संहनन नाम किसे कहते हैं ?

उ. जिस कर्म के उदय से मर्कट बन्ध से बंधी हुई दो हड्डियों के ऊपर तीसरी हड्डी का वेष्ठन हो और तीनों को भेदने वाली हड्डी की कील जिस संहनन में हो उसे वज्रऋषभ नाराच संहनन नाम कर्म कहते हैं।

प्र. ऋषभनाराच संहनन नामकर्म किसे कहते हैं ?

उ. जिस कर्म के उदय से दोनों ओर हड्डियों का मर्कट बन्धन हो और तीसरी हड्डि का वेष्ठन हो, वज्र की कीली न हो उसे ऋषभनाराच संहनन नाम कर्म कहते हैं।

प्र. नाराच संहनन नाम किसे कहते हैं ?

उ. जिस कर्म के उदय से रचना में हड्डियों का मर्कट बन्धन हो, वेष्ठन और कील न हो उसे नाराच संहनन नामकर्म कहते हैं।

प्र. अर्द्धनाराच संहनन नामकर्म किसे कहते हैं ?

उ. जिस कर्म के उदय से हड्डियों की रचना में एक तरफ मर्कट हो और दूसरी तरफ कील हो उसे अर्द्धनाराच नामकर्म कहते हैं।

प्र. कीलक संहनन नामकर्म किसे कहते हैं?

उ. जिस कर्म के उदय से हड्डियां सिर्फ कीलों से बन्धित हो उसे कीलक सहनन कहते हैं।

प्र. सेवार्त संहनन नाम कर्म किसे कहते हैं?

उ. जिस कर्म के उदय से हड्डियां आपस में जुड़ी हो उसे सेवार्त संहनन नाम कहते हैं।

प्र. संस्थान नाम किसे कहते हैं ?

उ. जिस कर्म के उदय से शरीर का आकार बने उसे संस्थान नाम कर्म कहते हैं।

प्र. न्यग्रोध परिमण्डल संस्थान नाम किसे कहते हैं ?

उ. जिस कर्म के उदय से शरीर की शक्ल बड़ वृक्ष जैसी अर्थात नाभि से उपर के अवयव पूर्ण हो और नीचे के अपूर्ण छोटे-छोटे हो उसे न्यग्रोध कहते हैं।

अहिंसा का उजास तथा मानव संस्कृति

वाघजीभाई वोरा
राष्ट्रीय अध्यक्ष
श्रीसंघ

तीर्थंकर श्री महावीर स्वामी के मोक्ष कल्याणक दिवस, दीपावली तथा नूतन वाणिज्य वर्ष पर हार्दिक अभिनन्दन ! इसी वेला में गणधर श्री गौतमस्वामी को केवल ज्ञान प्राप्त हुआ था । एक तरह से भारतीय संस्कृति में नये युग का प्रारंभ हुआ था। तीर्थंकर श्री महावीर स्वामी का जिनशासन काल याने अहिंसा-सभ्यता को नवीन जन्म। मानव समुदाय कहां पहुंच गया था ? प्रवृत्ति मार्ग या वाममार्ग के नाम पर हिंसक अत्याचार चरम सीमा पर थे, धर्म के नाम पर मातृ-पितृ मेघ यज्ञ तक क्रियाएँ बढ़ चुकी थीं । वर्णवाद ने मानव-मानव के मध्य भेद उपस्थित कर दिया था, महिलाओं को कोई स्वतंत्रता नहीं थी, पापाकारों का बोलबाला था। तीर्थंकर श्री महावीर स्वामी के द्वारा मानव के आचरण हेतु पंच महाव्रतों का उद्घोष तथा रत्नत्रयी की आराधना के संदेश ने मानव-समाज को आत्मोत्थान तथा जीव कल्याण का मार्ग दिखाया। आज अहिंसा की इसी संस्कृति को पूरे विश्व ने अपना लिया है । तीर्थंकर श्री महावीर स्वामी के मार्ग का अनुसरण करते हुए महात्मा गांधी ने आधुनिक विश्व के कौने-कौने तक अहिंसा के आदर्श को पहुंचाया। विश्व संगठित संयुक्त राष्ट्र संघ ने भी 2 अक्टूबर को प्रतिवर्ष अहिंसा दिवस मनाने का आह्वान कर दिया है जो महात्मा गांधी का जयन्ती दिवस है ।

जैनधर्म ने धर्म की परिभाषा को स्फटिक की भांति स्पष्ट किया है । वह कर्मकाण्डों में नहीं उलझा । तीर्थंकर श्री महावीर स्वामी के समय कर्मकांडों को सर्वाधिक महत्व देने वाले धर्म अहिंसा, त्याग, तप जैसे आदर्शों के उपदेश देने के स्थान पर विकृतियों से समझौता करते रहे हैं। महात्मा गौतम बुद्ध ने भी इन विकृतियों से संघर्ष कर व्यक्ति को अहिंसा, करुणा तथा मैत्री का मार्ग उपशिष्ट किया था । उसी समय यूरोप में सुकरात भी हुए, चीन में लाओत्सो का आविर्भाव हुआ। इन महापुरुषों का भी वही उद्बोधन था। अहिंसा के लुप्त होने पर यह मानव-जगत न जाने कैसे आचरण तक पहुंच जाता।

दीपावली के प्रकाश ने हमें धर्म का उजास दिया है, जो वास्तव में अहिंसा, धर्म तथा वय रूप है । हम इसे अंगीकृत किये रहे।

जय जिनेन्द्र !

– वाघजीभाई वोरा

शाखाएँ मजबूत बनाओ

रमेशभाई धरू
राष्ट्रीय अध्यक्ष
नवयुवक परिषद

अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के रतलाम अधिवेशन में परिषद की शाखाओं को सुव्यवस्थित सक्रिय किये जाने का निर्णय किया गया है तथा उनकी गतिविधियों का मार्गदर्शन करने के उद्देश्य से बारह माह का एक कैलेण्डर भी तैयार कर पारित किया गया है । शाखाओं को इस कैलेण्डर का अधिक से अधिक अनुगमन करने का प्रयास करना चाहिये तथा उसका प्रतिवेदन तत्काल केन्द्रीय महामंत्री कार्यालय को एवं प्रतिवेदन के आधार पर प्रेसनोट चित्रों सहित 'शाश्वत धर्म' एवं 'जयंत ज्योति' को प्रकाशनार्थ किया भिजवाना चाहिए।

प्रारंभ से परिषद की बुनियाद शाखाओं पर आधारित संगठन के रूप में हैं । शाखाएँ धरातल से उन्नत होकर विभिन्न चरणों की रचना करती हुई शिखर पर राष्ट्रीय परिषद का पिरामिड तैयार करती हैं, उसके उद्देश्य की दिशा में सम्पूर्ण कार्य प्राप्ति शाखाओं के माध्यम से होती है । प्रत्येक नगर तथा ग्राम में समाज एवं युवा वर्ग का सीधा सम्पर्क शाखाओं के मार्फत ही है। राष्ट्रीय इकाई अपने सन्देश तथा अपने प्रतिवेदन शाखाओं के द्वारा ही नीचे स्तर तक पहुंचाती है। केन्द्र जो अभियान या कार्यक्रम निश्चित करता है, वे शाखाएँ ही झेलकर उन्हें कार्यान्वित करती हैं । फिर राष्ट्रीय इकाई का गठन भी केन्द्रीय प्रतिनिधियों के द्वारा होता है। शाखाओं से आगमित केन्द्रीय प्रतिनिधि राष्ट्रीय नेतृत्व का निर्माण करते हैं। इन सभी स्थितियों में शाखाओं का सुदृढ़ तथा सक्रिय होना आवश्यक है । वे जितनी मजबूत होगी, उतना ही केन्द्र उत्साहित तथा ऊर्जावान बनेगा । अतएव शाखाओं से आग्रहपूर्ण आह्वान है कि वे अपना संचालन सुव्यवस्थित तथा सौल्लास करें । सभी सदस्यों को एक माला में पिरो कर चलें तथा वरिष्ठ महानुभावों का मार्गदर्शन लेते हुए समाज का विश्वास अर्जित करें । समाज हमारे शीश का मुकुट है । इस मुकुट की दैदीप्यता हम पर भी निर्भर है । परिषद के प्राण लोकसंत जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा. ने इस अधिवेशन में समस्त परिषद शाखाओं से सदस्यता अभियान चलाने का आह्वान किया है। यह हमारे लिये आदेश है, शाखाएँ इस दिशा में अग्रसर होकर गुरुआज्ञा के पालन में जुट जाएँ ।

– रमेशभाई धरु

संपादकीय

पालीताना याने पवित्र नगर पर प्रश्नचिन्ह

गुजरात के मुख्यमंत्री श्री विजय रूपानी ने श्री शंखेश्वर तीर्थ पर आयोजित एक समारोह को सम्बोधित करते हुए कहा कि पालीताना (सिद्धाचल) को अहिंसा नगरी बनाया जायेगा, इस नगरी को कत्लखाने से मुक्त किया जायेगा। धार्मिक स्थलों का विकास किये जाने का प्रयत्न किया जायेगा। श्री विजय रूपानी स्थानकवासी जैन हैं तथा निष्ठावान श्रावक हैं । वे राजकोट के निवासी हैं, पिछले दिनों गुजरात के मुख्यमंत्री के रूप में उन्होंने शपथ ली है। उक्त समारोह में ही उन्होंने कहा कि- सबसे पहले मैं श्रावक हूँ और भगवान महावीर की संतान हूँ । अहिंसा परमो धर्म है। मैं गुजरात का नाथ नहीं दास हूँ। उन्होंने साधु-संतों तथा पदयात्रियों के लिये पगडंडी बनाने पर विचार करने की घोषणा की।

पालीताना को पवित्र नगर घोषित हुए पंद्रह-बीस वर्षों से अधिक समय हो गया है। इस दौरान सिर्फ कागजी घोषणा के अतिरिक्त कुछ नहीं हुआ। इस घोषणा के बाद पालीताना में मांस व मद्य की दूकानें तथा गुण्डागिर्दी और बढ़ गई। जैन संतों पर हमले भी हुए। यहाँ तक की तीर्थराज पर्वत तक जाने के लिये बस स्टेण्ड तथा रेलवे स्टेशन से मार्ग का विकास भी जैन दानवीरों ने करवाया। गुजरात तो ठीक किसी भी राज्य शासन के पास पवित्र नगर की स्थिति का स्पष्ट चिन्तन नहीं है। प्रजातंत्र में वोटों की समीकरण में कई तमाशे खड़े होते हैं। लगता है कि पवित्र नगर की घोषणा ऐसा ही खेल था । खैर, अब जैन मुख्यमंत्री के गुजरात में पदारूढ़ हो जाने से इस दिशा में चिन्तन प्रारंभ हो गया है। उनका मार्ग विकट तथा कठिन है, पालीताना की

पूरी बस्ती शाकाहारी नहीं है, पिछले वर्षों में उग्र मांसाहारियों की संख्या में बढ़ोतरी हुई है, ऐसी स्थिति में वधशालाओं को बंद करना, मांस की दूकानों को निषिद्ध करना असंभव नहीं तो कठिन है। मुख्यमंत्री श्री रूपानी ऐसा कर सके तो निश्चित रूप से हम सभी के लिये अभिनन्दनीय होंगे ।

यों पालीताना की एक समस्या यह भी है कि वहाँ शत्रुंजय नदी पर बांध बंध जाने के पश्चात् अस्थि विसर्जन की उपयुक्त जगह नहीं रही है। पूरे देश के श्वेताम्बर परिवार अपने यहाँ किसी की मृत्यु हो जाने पर दिवंगत की अस्थियों का विसर्जन करने के लिये पालीताना जाते हैं, जब- अब एक नाला या ग्रीष्मकाल में डबकरा शेष रह गया है। इस पर विचार किया जाना चाहिये तथा शत्रुंजय नदी पर समाज की धार्मिक आस्था के अनुरूप स्थल बनाया जाना चाहिये। मूल बांध के तालाब तक जा पाना प्रतिबंधित है।

वैसे पालीताना की तलहटी या नगर क्षेत्र धर्मशालाओं एवं मंदिरों का नगर बनता जा रहा है। धर्मशालाओं की संख्या लगभग एक सौ से ऊपर हो गई है। यात्रियों की संख्या को देखते हुए ऐसा होना चर्चा का मुद्दा नहीं है लेकिन जैन समाज द्वारा वहाँ एक भी सुविकसित गौशाला प्रारंभ किये जाने की पहल नहीं की गई है। जैन समाज जीवदया, गौरक्षा, पशुपालन पर सर्वाधिक बल देता है अतएव जैन समाज को यह बीड़ा भी उठाना चाहिये। जैन समाज देश में अच्छी मात्रा में दान देता है लेकिन दान के नाम पर पैसा या धन दे देना पर्याप्त नहीं है, जैन समाज को ऐसी परहितकारी संस्थाओं जैसे गौशाला, वृद्धाश्रम, दिव्यांग उद्धार केन्द्र सम्पूर्ण मानवजाति की सेवा आदि भी संचालित करने चाहिये। गौशालाओं को आधुनिक बनाया जाना युग की मांग है। जलगांव में अहिंसा तीर्थ के नाम से गौशाला सुगठित हुई है, उसका समाज को स्थान-स्थान पर अनुकरण करना चाहिये। जैन समाज 'मित्ती में सव्वभूएसु' का संदेश देते हुए चौरासी लाख जीवयोगी के प्रति अपनी मैत्री घोषित करता है, फिर तिर्यंच पंचेन्द्रिय की रक्षा के लिये उसे सन्नद्ध होना ही चाहिये। गौशालाओं की स्थापना के लिये पालीताना में एवं विशेष कार्यक्रम चलाया जाना हमारा कर्तव्य है।

— सुरेन्द्र लोढ़ा
(सम्पादक)

तीर्थंकर श्री अजितनाथजी

(मुनिराज डॉ.श्री सिद्धरत्न विजयजी म.सा.)

द्वितीय तीर्थंकर भगवान श्री अजितनाथ के पश्चात् एक लम्बे समय के पश्चात् तीसरे तीर्थंकर भगवान श्री संभवनाथजी हुए। अपने पूर्वभव में भगवान श्री संभवनाथ क्षेमपुरी नगरी के विपुलवाहक नाम के राजा थे। वे बड़े ही उदार एवं प्रजाप्रेमी शासक थे। अपनी प्रजा को वे अपनी संतान की तरह पालते थे। किसी समय क्षेमपुरी नगरी में भयंकर दुष्काल की स्थिति उत्पन्न हो गई। लोग भोजन के लिये तड़प रहे थे। लोगों के पास कुछ भी खाने की सामग्री नहीं बची। जिससे वे जीवनयापन कर सके।

प्रजावात्सल राजा विपुलवाहक को इसकी बड़ी चिन्ता हुई। प्रजा के इस भयंकर दृश्य को देखकर उनका हृदय करुणा से भर गया। उन्होंने तत्काल भंडारियो को आज्ञा देकर राज्य के सभी अन्न-भण्डारों को खोलकर प्रजाजनों में बाँटने का आदेश दे दिया। राजा विपुलवाहक उदारहृदयी के साथ-साथ धर्मप्रेमी भी थे वे साधु-साध्वियों को निर्दोष आहार स्वंय देते एवं सज्जन व धर्मनिष्ठजनों को अपने सामने खिलाकर उन्हें उचित सम्मान प्रदान करते थे।

एक बार संध्या के समय बादलों को बनते और बिखरते देख संसार की नश्वरता को जानकर उनके मन में विरक्ति की प्रबल भावना जागृत हो गई एवं आचार्य श्री स्वयंप्रभ की सेवा में दीक्षित होकर संयम धर्म की आराधना कर अन्त में समाधिमरण द्वारा नवम कल्प आनत देवलोक में देव के रूप में उत्पन्न हुए। वहाँ से चलकर विपुलवाहन के जीव ने मृगशिर नक्षत्र में श्रावस्ती नगरी के महाराजा जितारी की महारानी सेनादेवी के गर्भ में च्यवन किया उस समय महारानी सेना देवी ने चौदह दिव्य स्वप्न देखे। महारानी ने इन दिव्य स्वप्नों की जानकारी महाराजा जितारी को दी। महाराजा द्वारा राजज्योतिषी से स्वप्नों का अर्थ पूछने पर उन्होंने सभी स्वप्नों का अर्थ बताते हुए कहा कि आपका पुत्र समस्त जगत के प्राणीमात्र का कल्याण करेगा। यह अपने ज्ञान के प्रकाश से संसार में व्याप्त अंधकार को दूर कर सभी जीवों को मोक्ष का मार्ग बताने वाला तीर्थंकर होगा। स्वप्नफल सुनकर राजमहल में खुशी की लहर दौड़ गई। सभी ओर खुशहाली का माहौल हो गया।

उचित आहार-विहार और मर्यादा

के नव महिने तक गर्भ की प्रतिपालना कर महारानी सेनादेवी ने मार्गशीर्ष शुक्ला चतुर्दशी की अर्द्धरात्रि को मृगशिर नक्षत्र में एक ओजस्वी पुत्र को जन्म दिया। प्रभु के जन्म से समस्त संसार में एक दिव्य प्रकाश की रोशनी फैल गई। इंद्रलोक से महाराजा इन्द्र अपने समस्त परिवार एवं देवताओं के साथ प्रभु का जन्म कल्याणक मनाने के लिये पधारे एवं मेरू शिखर पर प्रभु का जन्मकल्याणक महोत्सव मनाया एवं नाना प्रकार की औषधियों एवं असंख्य कलशों से प्रभु का अभिषेक किया। प्रभु के जन्म के समय चारों ओर सुख-समृद्धि हो गई। नारकीय जीवों को भी एक क्षण आनन्द की अनुभूति हुई। सारे संसार में आनंद मंगल की लहर फैल गई। जब से प्रभु माता के गर्भ में आये तब से देश में प्रभूत मात्रा में साम्ब धान, अनाज एवं मूंग आदि धान्य की उत्पत्ति हुई। चारों ओर धरती धान्य से लहलहा उठी अतः माता-पिता ने प्रभु का नाम संभवनाथ रखा।

धीरे-धीरे प्रबु अपनी बाल-लिलाओं से सबको प्रसन्न करते हुए बाल्यकालपूर्ण कर जब युवा हुए तो महाराजा जितारी ने उनका योग्य कन्याओं से परिग्रहण करवाया। धूमधाम से प्रभु का राज्याभिषेक कर उन्हें राज्य देकर स्वयं प्रव्रजित हो गये।

पिता के आग्रह से प्रभु संभवनाथ सिंहासनरूढ़ तो हो गए परन्तु वे सदैव संसार के भोगों से विरक्त रहे। संसार में रहकर भी उन्होंने संसार के विषयों को विष मिश्रित पकवान की तरह माना। वे निरन्तर विचारमग्न रहते हुए चिन्तन करते रहते कि जिस प्रकार विषमिश्रित पकवान खाने में मधुर होते हुए भी प्राणाहारी होते है वैसे ही संसार के भोग तत्काल मधुर और लुभावने होकर भी आत्मगुणों की घात करने वाले होते है।

(क्रमशः)

अनमोल बाल्यावस्था

हेमचन्द्राचार्य	9 वर्ष की उम्र में संयम लिया।
आनंद विमलसूरी	5 वर्ष की उम्र में संयम लिया।
विजय सेन सूरी	9 वर्ष की उम्र में संयम लिया।
विजयदेव सूरी	9 वर्ष की उम्र में संयम लिया।
सोमसुंदर सूरी	7 वर्ष की उम्र में संयम लिया।
विजयानंद सूरी	9 वर्ष की उम्र में संयम लिया।
मुनिसुंदर सूरी	8 वर्ष की उम्र में संयम लिया।

गुरु नहीं तो जीवन शुरू नहीं

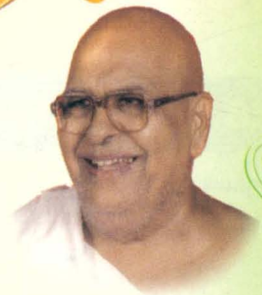

(श्री विजयसिंह लोढा 'विजय', निम्बाहेड़ा राज.)

जीवन एक भव्य जागरण है, मूर्छा से लड़ने का ।
जीवन एक दिव्य संगीत है, जयंत गुण गाने का ।।

भगवान महावीर ने हमें यही पाठ पढ़ाया है ।
पंचमहाव्रत धारी 'मधुकर' को 'विजय' गुरु बनाना है।।

युग दृष्टा धर्म चक्रवर्ती को नमन हमारा है।
यतीन्द्र गुरु ने शाश्वत आशीष दिया जिसे है।।

राजेन्द्र गुरु की शक्ति से जग अभिमंत्रित कर दो।
आध्यात्मबल से ऋस्तजनों में, खुशियाँ भर दो।।

ऐसे महाव्रती आचार्यजयंत की ज-विजय हो।
उनके पावन स्मरण से हम सब के पुण्य उदय हो।।

णमोकार है मंत्र महामणि, तन-मन जिससे मंडित है।
'विजय'जो इसका मर्म जानता, वही सच्चा पंडित है।।

जैनत्व का तेज तुम्हारा, बहा रहे करुणा की धारा।
'जयंतसेनसूरी' नाम सार्थक, 'शाश्वत धर्म' का परम सहारा।।

साधना का तेज है आपके चेहरे पर, वाणी की अभिलाषा।
चंद शब्दों में कैसे समायेगी, 'जयंत विजय' की परिभाषा।।

रतलाम की धरती बता रही, 'मिलकर रहना सीख।
चातुर्मास सफल होगा, यही बतलाती है, तारीख।।

'गुरु नहीं तो जीवन शुरू नहीं' काश्यपजी का कहना है।
जन-जन की पीड़ा हरकर, गुरु संदेश हमें निभाना है।

प्रज्ञा - पुरुष हो सद्‌गुणों की खान, जन-जन के जयंत हो।
'सत्य-पथ पर चलूं' ऐसी ऊर्जा-शक्ति मुझ में भर दो।।

भक्त-वत्सल जयंत गुरुवर ! कृपा की वर्षा मुझ पर कर दो।
मुक्ति-पथ बतला दो, मेरे सर पर 'विजय' अपना हाथ लगा दो।।

ध्यान दीजिये

* **शाश्वत धर्म का प्रकाशन प्रत्येक मास की 3 तारीख को होता है । दिनांक 10 तक आपको अंक प्राप्त न होने पर दोप. 2.30 से 5 के मध्य कार्यालय पर टेलीफोन नं. (07422) 231416 से सम्पर्क करें ।**
* **प्रकाशनार्थ लेख, रचनाऐं प्रत्येक-मास की 2 तारीख तक मंदसौर कार्यालय पर प्राप्त हो जाना आवश्यक है।**
* **प्रकाशनार्थ समाचार एवं चित्र उस मास की दिनांक 15 तक मंदसौर प्राप्त होने पर ही उनको उस मास के अंक में सम्मिलित किया जाना संभव है। समाचार हो सके तो कम्प्यूटर पर टाइप करवाकर भेजें।**
* **पते में परिवर्तन या नए ग्राहक की सूचना शाश्वत धर्म के मेल** Mail ID shashwatdharmajain@yahoo.in **पर दी जा सकती है। डाक से लिखित भिजवाने की भी सुविधा है ।**
* **शाश्वत धर्म के नए ग्राहक बनने व सहायता राशि भिजवाने हेतु शाश्वत धर्म के करंट अकाउंट नं. 63035775492 स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, शाखा मुखर्जी चौक, मंदसौर में जमा कर रसीद की फोटो कापी कार्यालय पर भिजवाऐं ।**

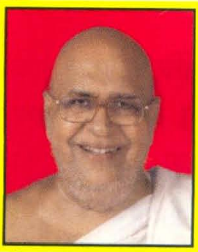

लोकसंत श्री जयंतसेनसूरीश्वरजी म.सा.

-(संकलित)

'मंत्र शिरोमणि है धुरी, महामंत्र नवकार ।
जयंतसेन जपो सदा, उतरो भव जल पार।।'

चौमुखी प्रतिभा के धनी लोकसंत आचार्यश्रीमद् विजयजयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा. का वर्णन करना किसी के लिये आसान काम नहीं है आपके इन्हीं सब गुणों को देखते हुए महामहिम तत्कालिक राष्ट्रपति डॉ. श्री शंकरदयालजी शर्मा ने 8 दिसम्बर सन् 1991 को जावरा में आपको राष्ट्रसंत की उपाधि से सम्मानित किया। समारोह में राष्ट्रसंत श्रीमद्विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी महाराज ने फरमाया कि हम राष्ट्र के प्रति अपने दायित्वों का निर्वाह करे तथा सही नागरिक होने का परिचय दें, हम राष्ट्र में कर्तव्य भाव जागृत करें सही नागरिक में अपने आपको परिणत करें जीवन में अहं की प्रवृत्ति को त्यागें तथा स्वार्थ को छोड़ें, हम सादगीपूर्ण जीवन जीना सीखें, भारत की धरा ऋषि तथा कृषि प्रधान रही है। इसने उत्तम संस्कृति को पनपाया है एवं उसका पालन किया। जैनाचार्य श्रीमद् विजयजयन्तसेनसूरिश्वरजी महाराज के पदचाप राष्ट्रीय मूल्यों के मार्ग पर ध्वनि बिखेरते रहे है, प्रारंभ से ही पहनावे में आपने खादी धारण कर रखी है, भारत-पाक युद्ध के गंभीर संकटपूर्ण समय में आपने राष्ट्रीय रक्षा कोष में अच्छी रकम देने के लिए समाज को प्रेरित किया था एवं स्वयं भी रक्तदान कर राष्ट्रीय भावनाओं को सुदृढ़ किया था। आपके साथ आपके शिष्य वर्ग ने भी रक्तदान कर राष्ट्रीय भावनाओं को सुदृढ़ किया था। वर्तमान में आपने अपना नेत्रदान भी घोषित कर रखा है मरणोपरांत नेत्र ज्योति के लिए नेत्र दिये जाए।

देश के उच्चकोटि के राजनीतिज्ञों ने भी समय-समय पर आपके संपर्क में उपस्थित होकर आशीर्वाद प्राप्त किये, आपने सदैव राष्ट्रीय जीवन में हिंसा को दूर करने का संदेश दिया, निःसंदेह आपका व्यक्तित्व राष्ट्रीय संत के रूप में मुखरित हुआ हैं।

सम्मेतशिखर तीर्थ यात्रा संघ में प्रयाण आपने भारत के कम से कम बारह प्रान्तों की भूमि पर चरण अंकित करते हुए कई ग्रामों से छात्रों व अध्यापकों को राष्ट्रीय कर्त्तव्य का ज्ञान दिया।

आचार्य - आचार्य वे हैं जो पाँच आचारों के साथ यति धर्म का पालन स्वयं करते हैं और शिष्यों से करवाते हैं।

ज्ञानाचार, दर्शनाचार, चारित्रचार, तपाचार और वीर्याचार ये पाँच आचार है आचार्य इन आचारों के साथ पाँच महाव्रतों का भी पालन करते है ये संघ प्रमुख होते है चतुर्विध संघ इनके आदेश को शिरसावद्य मान्य करते है। आचार्य संघ को मार्गदर्शन देते हैं और समय-समय पर संघ की रक्षा भी करते हैं। सौधर्म वृहत तपोगच्छीय संघ ने (राज.) की पावन धरा भाण्डवपूर तीर्थ पर हजारों की संख्या में उपस्थित होकर दिनांक 17.2 1984 को श्री यतीन्द्रविजयजी म.सा. ने आचार्य पद प्रदान किया तथा अपने संघ की बागडौर सौंपी। मुनि जयन्तविजयजी को आचार्यश्री जयन्तसेनसूरिश्वरजी नाम से सम्बोधित कर जय-जयकार से आकाश गुजायमान किया।

डॉ. शंकरदयाल शर्मा ने कहा था - 'श्रमण संस्कृति प्रायश्चित के आधार पर विकसित हुई है, पापों का प्रायश्चित कर्मकाण्डों से नहीं होता है समग्र विश्व ने मान्य कर लिया है कि जैनधर्म ने आचरण की शुद्धता पर समान रूप से बल दिया है जो आचरण का पालन करते हैं तथा उसका प्रतिपादन करते है वे आचार्य कहलाते है।'

'मिटा दे अपनी हस्ती को गर तू मर्तबा चाहे'।
दाना खाक में मिलकर ही गुलो-गुलजार होता है।।

जैनाचार्य श्री जयन्तसेनसूरिजी ने अपनी सुज्ञता तथा प्रज्ञता से किस क्षेत्र का श्रृंगार नहीं किया कौन सा क्षेत्र उनकी पुण्यशाली प्रसादी से वंचित रहा वे एक अच्छे कवि है तथा अपनी काव्य अभिव्यंजनाओं को सस्वर वाणी देने की विलक्षण क्षमता रखते हैं, उतने ही श्रेष्ठ लेखक है विचारों को शब्दों में कुशलता से उतार देते हैं और न केवल विचारों को कागज पर वाक्यों के रूप में चित्रित करने की उनकी योग्यता है बल्कि वे एक उच्चकोटि के वक्ता भी है धारा प्रवाह उनके प्रवचन श्रोताओं को अदृश्य भावतंरगों से बांधे रखते है, उनकी वाणी में ओज और मृदूता भी लुढ़कती रहती है धर्म गुरु के रूप में उनकी वाणी को उपदेश के रूप में ग्रहण किया जाता है उनके प्रवचन विशालतम धर्मसभाओं की सफलता के माध्यम बने है।

जिनशासन में एकता का शिल्पकार -

'समता का जो सिंधु है चन्दन सा वरणीय।
जयन्तसेन साधु वही, वंदनीय स्मरणीय।।
जैन सिक्ख या हिन्दु हो, अगर हो मुसलमान।
देह भेद जयन्तसेन आतम एक समान।।

परमपूज्य गुरुदेव श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी महाराज ने जिनशासन में जो क्रांतिकारी कदम उठाया, यति वर्ग की शिथिलाचारी प्रवृत्ति से निकलकर सत्यमार्ग की प्ररूपता की तथा कठोर त्याग-तपस्या के मार्ग को अपनाकर शास्त्र विरुद्ध क्रियाओं का विरोध किया इस बात को लेकर कोई कुछ भी कहे किन्तु उन्होंने कोई नया पथ नहीं चलाया शासन तो

वही तीर्थंकर महावीर का सदैव जयवंत है ही किन्तु क्रिया में थोड़ी विसंगति प्रचलित हो गयी थी उसे सुधारने के कारण त्रिस्तुतिक समुदाय के नाम से संबोधित होने लगे।

28 वर्ष पश्चात् संवत् 2040 माघ शुक्ला 12 को भाण्डवपूर में आपकी आचार्य पद्वी का महोत्सव हुआ तब कुछ लोगों ने शंका की थी मुहूर्त अच्छा नहीं हैं। तब रतलाम में स्थानकवासी समुदाय के वयोवृद्ध प्रवर्तक मुनिराजश्री कस्तूरचंदजी विराजमान थे आप ज्योतिष के अच्छे ज्ञाता थे कई भक्त उन्हें वचन सिद्ध के रूप में मानते थे उनसे भी उन्हीं भँवरलालजी (निम्बाहेड़ा) वाले ने पूछा था कि यह मुहूर्त कैसा क्या है ? तब उन अनुभवी महाराज श्री ने बताया था कि यह मुहूर्त अति उत्तम हुआ है और ये पाट पर बिराजने वाले आचार्यश्री भी गुरुदेव श्री राजेन्द्रसूरिजी महाराज के समान ही शासन की सेवा करेंगे। इस प्रकार की भविष्यवाणी वर्तमान में प्रत्यक्ष रूप से सत्य ही थी वर्तमानचार्य श्री के आचार्य पद के पश्चात् संघ में थोड़ा विवाद होते हुए भी आपने किस प्रकार बहुमुखी प्रगति की हैं।

उग्रविहार - कई बार कई लोग आपकी इस गहन अवधान शक्ति को चमत्कारिक योग्यता के रूप में लेने लगते है और कार्य प्रणाली आपकी इतनी निष्प्रमादी है कि विश्राम का कहीं नाम नहीं है जब पद विहार करते हैं तब एक दिन में चालीस-चालीस किलोमीटर तक नाम लेते है पैरों में छाले तथा बिवाइयां किन्तु कोई चिंता किये बिना लक्ष्य तक बढ़ते रहना ही आपने कर्तव्य मान लिया है। उग्रविहार करके स्थान-स्थान पर धर्म प्रचार, साधु-साध्वीयों को दीक्षा प्रदान की, बड़े संघ यात्रा का आयोजन, तीर्थोद्धार, गुरु जन्मभूमि भरतपूर का विकास कार्य। भाण्डवपूर तीर्थ पर अपूर्व गुरु मंदिर की स्थापना एवं धर्मशाला, भोजनशाला आदि निर्माण की विशेष प्रगति और भी अन्य नगरों में जहाँ पहले त्रिस्तुतिक समुदाय के घर ही नहीं थे वहाँ गुरुमंदिरों का निर्माण होने जा रहा है। महामंत्र नवकार के प्रभाव से कईयों के कार्य सिद्ध हो रहे हैं जिससे श्रद्धा पूर्वक आराधना करने वाले कई आराधक लगातार वर्षों से आपका जहाँ भी आस-पास या दूर-दूर दक्षिण प्रांत में चातुर्मास हुआ प्रतिवर्ष पहुँचते हैं। इसके अतिरिक्त चातुर्मास में दर्शनार्थ आने वालों की भी संख्या विशेष रहती है जिनकी भक्ति करने वाले भी अपूर्व लाभ लेते हैं। शिक्षा-प्रचार, छात्रवृत्ति, धर्म प्रचार आदि क्षेत्र में स्थान - स्थान पर परिषद के नवयुवक तत्पर रहते हैं। आप समाज के लिए अमूल्य धरोहर है।

'गुरुकृपा बिन जगत में कोई सफल नहीं होत ।
जयन्तसेन प्रकट यही है, अनुभव उद्योत।।

श्री जयन्त गुरुवर के गुण गाइये

(श्री अनोखीलाल कोठारी)

जयन्त गुरुवर के गुण गाइये, अपने जीवन को सरसाइये।
नाम जपे तेरा गुरु, हम पे मेहर बरसाइये ।।

नित स्मरण करे हम तेरी मूरत, सब के दिल में हैं आप बसे ।
दूर हमसे भले ही मगर, मन के मंदिर में आप सजे।।

प्यासा - प्यासा है मन यह मेरा, गुरुवर इसको न बिसराइए।
खोया खोया है मन मेरा, गुरुवर इसको तो समझाइये।।

मन करता है उड़ जाऊँ मैं, तेरे दर्शन को पा जाऊँ मैं।
मुझ को पाँखे है नहीं मिली, कैसे मन को समझाऊँ मैं ।।

तेरे वाणी का जादू गजब, देखों फैला है चहूँ ओर ।
गूंजा समता का उद्घोष है, फैले समता की स्वर्णिम किरण ।।

जियो बरसो बरस गुरु, हम सबकी है, यही भावना।
जग को रोशन करेगा सदा, तेरे जीवन की यह साधना ।।

समता जीवन में अपनाइये, अपने जीवन में मुस्काराइये।
हो जग का कल्याण सुखी इंसान, ऐसा आप हमें आशीष फरमाइये।।

जयन्त गुरुवर के गुण गाइये हम पर मेहर बरसाइये।।

गतांक के आगे

आचार्यश्री हरिभद्रसूरि (2)

(मुनिराज श्री चारित्ररत्नविजयजी म.सा.)

हंस और परमहंस के पत्रों को पढ़कर आश्चर्याभिभूत होकर बौद्धाचार्य ने कहा कि 'यहाँ कोई ना कोई जैन धर्म उपासक अत्यन्त मेधावी छात्र हमारे विद्यापीठ में है अन्यथा मैंने जिन तर्क जालों का खंडन कर दिया था उनका मण्डन करने की क्षमता जैन छात्र के अलावा किसमें हो सकती है ?'

विद्यापीठ में जैन छात्रों को खोजने के लिये बौद्धाचार्य ने विचार कर तत्काल एक जिन बिम्ब अवागमन वाले स्थान पर रख दिया और आदेश दिया कि यहाँ रहने वाले सभी आवासियों को इस जिनबिंब पर पैर रखकर ही आवागमन करना होगा। जो इस बिम्ब पर पैर रखकर आवागमन नहीं करेगा उसको विद्यापीठ में नहीं रहने दिया जाएगा। बौद्धाचार्य की आज्ञा का पालन करते हुए सभी बौद्ध विद्यार्थी जिनबिम्ब पर पैर रखकर आवागमन करने लगे। हंस और परमहंस के सम्मुख घोर प्राण एवं धर्म संकट उपस्थित हो गया। फिर उन्होंने गुरु का नाम स्मरण करते हुए विवेकपूर्वक अत्यंत चतुराई से खड़िया से जिन बिम्ब पर बौद्ध चिन्ह बनाकर उस पर पैर रखकर आवागमन किया। इससे बौद्धों को उनपर संदेह हो गया। जिसकी पुष्टि हेतु बौद्धाचार्य ने अन्य युक्ति लगाई।

एक दिन अर्द्ध रात्रि में सभी छात्र गहरी निद्रा में सो रहे थे। अचानक कांस्यपात्रों का एक ढेर उनके कक्ष में गिराया गया। पात्रों की तीव्र आवाज से दोनों भाइयों की निद्रा भंग हो गई। वे सहसा उठे एवं किसी संकट की आशंका को जानकर अपने इष्टदेव 'नमो अरिहंताणं नमो सिद्धाणं' का उच्चारण करने लगे। उनके मुख से आकस्मिक उच्चारण किए हुए नवकार मंत्र के उच्चारण को वहाँ पुष्टि हेतु छिपे बौद्ध छात्रों ने सुन लिया एवं वहाँ से जाकर बौद्धाचार्य को पूरा घटनाक्रम बता दिया।

स्वयं पर प्राणों का संकट जानकर दोनों भाई युक्तिपूर्वक वहाँ से भाग गए। उन्हें भागता हुआ देख बौद्ध सैनिक भी उनका पीछा करने लगे। सैनिकों को निकट आते देख हंस ने अपने अनुज परमहंस से कहा कि तुम तीव्र गति से दौड़कर पास के नगर में राजा सूरपाल के पास चले जाना वह तुम्हें अवश्य ही

गुरुदेव के पास पहुँचने का प्रबंध कर देगा एवं गुरुदेव से हमारे द्वारा किए अविनय की क्षमायाचना करना। वे दोनों बाई युद्ध कला में भी सर्वश्रेष्ठ थे। परमहंस के जाने के बाद हंस ने निकट आयी सेना की बड़ी टुकड़ी से अेकेले साहसपूर्वक सामना किया परन्तु पूरे शरीर पर लगे हुए बाणों से वह निष्प्राण हो गया।

परमहसं अपने ज्येष्ठ भ्राता की आज्ञानुसार राजा सूरपाल के यहाँ पहुँच गया। बौद्ध सैनिकों की टुकड़ी भी पीछा करते हुए वहाँ पहुँच गई एवं राजा सूरपाल से परमहंस को उन्हें सौंपने के लिये कहा। परन्तु सूरपाल राजा ने कहा कि मेरे पूर्वजों ने यह व्रत ग्रहण कर रखा है कि शरणागत में आए हुए किसी भी प्राणी की प्राणान्त तक रक्षा करनी चाहिए अतः मैं भी इन महान विद्वान की रक्षा करूंगा। यदि आप इन्हें ले जाना चाहते हैं तो इन्हें शास्त्रार्थ में पराजित करके ले जाओ। बौद्धों के नायक ने यह प्रस्ताव स्वीकार कर लिया और शर्त रखी कि यदि यह हमारे तर्कों का खण्डन नहीं कर सका तो इसे मृत्यु दण्ड दिया जाएगा। और यदि विजयी होता है तो यह कुशलतापूर्वक अपने घर जा सकता है।

नियत समय पर बौद्ध विद्वान एवं परमहंस के मध्य वाद प्रारंभ हो गया। कई दिनों तक वाद के चलते रहने पर परमहंस को संदेह हुआ कि ये बौद्धाचार्य छल-कपट में बड़े निष्णांत होते हैं। ऐसा प्रतीत हो रहा है कि कोई अदृश्य शक्ति मेरे तर्कों का खण्डन कर रही है अन्यथा इतना सामर्थ्य इन बौद्धाचार्यों में नहीं। परमहंस ने संकट के उन क्षणों में जिनशासनाधिष्ठात्री देवी अम्बा का स्मरण किया तभी देवी ने परमहंस के समक्ष प्रकट होकर शास्त्रार्थ के दौरान पर्दे के पीछे बौद्धधर्म की अधिष्ठात्री तारादेवी के घट में बैठकर शास्त्रार्थ करने के सत्य से अवगत कराया एवं कहा कि तुम शास्त्रार्थ के समय तुम्हारे प्रतिवादी को सबके सम्मुख वाद करने के लिए कहना इससे बौद्धों का सारा छल तत्काल प्रकट हो जाएगा।

दूसरे दिन शास्त्रार्थ में बौद्धों की देवी के बोलते रहने पर भी परमहंस ने मौन रहते हुए पर्दा उठाकर वहाँ पड़े एक घड़े को जिसमें से वह देवी बोल रही थी उसको एक पाद प्रहार से खण्डित कर दिया। (क्रमशः)

बुरा-बुरा सबको कहे, बुरा न दीखे कोई।
जो घट शोधे आपनो, मोसुं बुरा न कोई ।।

ज्ञान थकी जाने सकल, दर्शन श्रद्धा रुप ।
चारित्र थी आवत रूके, तपस्या क्षपन सरूप ।।

राग द्वेष दो बीज में, कर्म बन्ध की व्याध ।
ज्ञानातम वैराग्य में, पावे मुक्ति समाध ।।

सुख दीधे सुख होत है, दुख दीधां दुःख होय।
आप हणे नहिं अवर कुं (तो) अपने हणे न कोय ।।

निज आतमकुं दमन कर, पर आतमकुं चीन।
परमातमकुं भजन कर, सोई मत परवीन ।।

शिष्य की शोभा है गुरुभक्ति

– मुनि निपुणरत्न विजय

हर व्यक्ति अपनी शोभा बढ़ाना चाहता है। जिसके द्वारा उसकी शोभा बढ़े, वो हर पदार्थ वह प्राप्त करना चाहता है। चाहे वो गाड़ी, बंगला आदि कोई भी साधन-सामग्री हो। उसकी शक्ति के अनुरूप या उससे बढ़कर भी कोई वस्तु की अपेक्षा हो तो वो भी पाने का पूर्ण प्रयत्न करता है। बाह्य सौंदर्य क्षणिक है, जो मात्र ईहलोक सम्बन्धी है। मिले या न भी मिले, मिल भी गया तो स्थिर रहना संभव नहीं। लेकिन आंतरिक सौंदर्य की प्राप्ति तो विरले जीव ही प्राप्त कर सकते हैं। उसे पाने वाला बाह्य सौंदर्य पाने के लिए आकर्षित नहीं रहता। भवो भव को सफल करने वाले आभ्यन्तर सौंदर्य को पाने के लिए शास्त्रों में अनेकविध मार्ग बताये गये हैं। जिसमें एक है **'गुरुभक्ति'** गुरुभक्ति से गुरुकृपा एवं गुरुकृपा से मोक्ष मिल सकता है।

उपदेश कल्पवल्ली में कहा है कि

गुवाज्ञां मुकुटीकुर्वन् –गुरु आज्ञा को मुकुट की तरह मस्तक पर

गुरुक्तं कर्णपूरयन्–गुरुवचन को कुंडल की तरह कान पर

गुरुभक्तिं धरन् हारं–गुरु भक्ति को हार की तरह हृदय में धारण करने वाला

सुशिष्यः शोभते भृशम् – सुशिष्य शोभायमान होता है।

अलंकार ब्राह्य सौंदर्य में अभिवृद्धि करता है लेकिन **'गुरुभक्ति'** रूप अलंकारों को धारण करने वालों का गुणरूपी आंतरिक सौंदर्य बढ़ जाता है। गुरुभक्ति रूपी अलंकार हमारे अहंकार को भी नष्ट कर देते हैं।

एक बार गुरु-शिष्य विहार कर रहे थे... गुरु आगे चल रहे थे, शिष्य पीछे-पीछे.. रास्ते में गुरु ने एक स्वर्ण मुद्रा देखी। सोचा गुरु ने कही शिष्य लोभ में न पड़ जाये, यह सोचकर गुरु ने स्वर्ण मुद्रा पर पैर से मिट्टी डाल दी.. यह दृश्य देखकर शिष्य ने गुरुजी से कहा, गुरुदेव। मिट्टी पर मिट्टी क्यों डाल रहे हो... शिष्य के भावों को देखकर गुरु प्रसन्न हो गये.. एसी निर्मल गुरुभक्ति को जो शिष्य धारण करते है वो भी निर्मल बन जाते है। गुरु शिष्य की परीक्षा लेने के लिए तत्पर रहते है, उस परीक्षा में वही शिष्य पार उतरते हैं जो पूर्ण रूप से समर्पित होते हैं। गुरुकृपा पाने के लिए भी पूर्ण समर्पित बनना आवश्यक-अनिवार्य हैं। गुरुभक्ति में कोई विकल्प नहीं होते। गुरुभक्ति क्यों एवं कैसे करना चाहिये, अब देखेंगे हम

क्रमशः अगले अंक में...

चिंतन की चांदनी-6

* जो व्यक्ति हर रोज परमात्मा की पूजा करता है और रात्रि भोजन त्याग करता है वो कभी नर्कगामी नहीं बनता। इसलिए व्यक्ति को कम से कम ये दो नियम तो पालन करना ही चाहिए।

  – आचार्य जयन्तसेनसूरि

* मोह–माया के जाल में फसी है दुनिया सारी ।
  सब कुछ पाकर भी संतुष्ट नहीं है नर–नारी ।।
  लोभ लालच की आंच से बन गये है भिखारी ।
  अरे, अब तो जाग जा और कर ले गुरु से यारी ।। – डॉ. मुनि सिद्धरत्नविजय

* जो भी होता है अच्छे के लिये होता है, इस तरह के विचार के अभाव में जिनको प्रत्येक परिस्थिति में स्वस्थ रहते नहीं आता है वे बार–बार खुश तथा नाखुश होते रहते है उनके लिए अनुकूलता और प्रतिकूलता के अवसर चलते रहते है । – मुनि अपूर्वरत्नविजय

* राग करने से पूर्व विचार करना बहुत आवश्यक है क्योंकि राग पूर्वक की हुई पाप–प्रवृत्ति निकचित कर्म बंधन करवाती है । – मुनि चारित्ररत्नविजय

* कर्म जब निकाचित हो जाते हैं तब साक्षात् तीर्थंकर की आत्मा भी बच नहीं सकती।

  – मुनि निपुणरत्नविजय

* संत और सैनिक दोनों को कभी सोना नहीं चाहिए क्योंकि दोनों रक्षा करते हैं । एक धन की दूसरे आत्मधन की । – मुनि प्रसिद्धरत्नविजय

* धर्म जीवन में है लेकिन साथ में दुःख भी है तो समझना की धर्म शरीर में है आत्मा में नहीं (अर्थात् धर्मी व्यक्ति को दुःख – दुःख नहीं लगता।) – मुनि प्रत्यक्षरत्नविजय

* सम्पत्ति–सामग्री–सुंदरी–सत्ता और स्टेट्स इन पांचों में संसार है, उसे छोड़ संयम लेना वो ही संसार का सार है। – मुनि जिनागमरत्नविजय ।

* मरने के बाद छोड़ो अर्थात् बरबादी ।
  मरने से पूर्व छोड़ो अर्थात् आबादी ।। – मुनि पवित्ररत्नविजय

अतिथि लेख

सम्यग्दर्शन को नमस्कार

(आगमवेत्ता साध्वी श्री वैभवश्री 'आत्मा')

'अनन्तकाल से जो ज्ञान भवहेतु होता था, उस ज्ञान को एक समय मात्र में जात्यंतर करके जिसने भवनिवृत्ति रूप किया, उस कल्याणमूर्ति सम्यग्दर्शन को नमस्कार' – श्रीमद् राजचन्द्रजी।

'ज्ञान' तो जीवमात्र में सदा होता ही है, चाहे वह ज्ञान रूप हो या अज्ञान रूप। दुनिया को जानना और खुद को न जानना 'अज्ञान' है व खुद को जान लेना 'ज्ञान' है। जब खुद को जानना शुरू कर देते हैं तब दुनिया में प्राप्त हर जानकारी, हर अवस्था स्वयं को समझने में मदद करने लगती है। किन्तु खुद को जानने के लिए दृष्टि का फोकस खुद पर हो,यह जरूरी है। दृष्टि खुद पर दो तरीकों से केन्द्रित हो पाती है– एक स्वार्थ सिद्धि के लिए व दूसरी आत्मस्वरूप के शोधन के लिए।

स्वार्थसिद्धि यानि देह- इंद्रिय-मन के भोगों की प्राप्ति के लिए चिंता करते रहना। जब सुख पाने की या कुछ भी पाने की लालसा में हम अनुरक्त होते हैं, उसके लिए जितनी भी जानकारियाँ व क्षमताएँ जुटाते हैं, वह सब कुछ भववृद्धि रूप ही होती है। हर सुख दुःख को लाता है और हर बार दुःखी जीव दुःख मुक्ति व सुख प्राप्ति को लालायित रहता है। इस प्रकार का चक्र दुष्चक्र रूप चलता ही रहता है। किन्तु जिस दिन, जिस अवसर पर जीव को सम्यग्दर्शन घटित होता है, उसकी दृष्टि वस्तु-तल को कल्पनाओं व कामनाओं से मुक्त देखने लगती है, उस दिन से आत्मस्वरूप का शोधन प्रारंभ हो जाता है।

श्रीमद्जी का यह अद्भुत कथन ऐसे सम्यग्दर्शन (Right Vision)को नमस्कार करता है, जिसके होने से अनंतकाल का वह ज्ञान जो संसार को ही निर्मित कर रहा था, वह परिवर्तित होकर जीव के मुक्ति का हेतु बन जाता है, जीव को आत्मलक्षी बना देता है, उसकी दृष्टि को निर्मल व पवित्र कर देता है। ऐसे कल्याणमूर्ति सम्यग्दर्शन को नमस्कार ।

जिस दर्शन के प्रगट होने से जीव की बर्हियात्रा अन्तर्यात्रा में तब्दील हो गई, जिस दर्शन के प्रगट होने से हर एक विषम पदार्थ की उपयुक्तता व सार्थकता एवं अनुपयुक्तता व निरर्थकता निज-विवेक से समझ में आने लग गई– ऐसे सम्यग्दर्शन के प्रभाव से ज्ञानियों का उपदेश आत्मानुभव बनने लग जाता है। सम्यग्दर्शन का घटित होना सतगुरु की कृपा का परिणाम है। जिसे गुरुचरणों का ध्यान मिला, उसे निज स्वरूप का बोध

मिला।

'सम्यग्दर्शन' जिसे यहाँ नमस्कार किया गया है, वह गुरुकृपा से वह निज पुरुषार्थ से दृष्टि की विशुद्धि है। स्वयं को समझने की निष्पक्ष क्षमता का नाम सम्यग्दर्शन है। 'दर्शन' अर्थात् दृष्टि, देखने व समझने का नजरिया। यह नजरिया ही हर एक घटना को महसूस करने में व नई घटना के निर्माण में सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका रखता है। जैसे 'घर में बेटी का जन्म हुआ' यह खबर सुनकर कोई सोचता है 'लक्ष्मी आई' तो कोई सोचता है 'विपदा आई।' अब बेटी का जन्म होना जिस नजरिए से देखा जा रहा है, वैसा ही प्रतीत होने लगेगा, जैसा प्रतीत (Feel) होगा, वैसा ही दृष्टिकोण बनेगा और फिर उसके साथ वैसा ही व्यवहार होगा। किन्तु सम्यगदर्शन का माहात्म्य है कि वह बेटी के जन्म को मात्र बेटी का जन्म देखता है, न खुशी के भावों में उत्तेजित होता है, न ही कर्जा महसूस करता है। वह हर क्षण को बिना कल्पना के रंगों से रंगे मात्र सद्भावमय महसूस करता है। सद्भावमय महसूसी से आत्मिक प्रेम व आत्मविश्वास बढ़ता जाता है और परिणामतः तनाव (खुशी-गम का आवेग) घटता जाता है। इस प्रकार हरेक क्षण को देख-समझ पाएँ तो जीवन का हर पल जागृत जीवन हो, आनंदमय हो, अनासक्त हो।

पर ऐसा सम्यग् नजरिया हमारे भीतर विकसित कैसे हो सकता है ? इस हेतु श्रीमद् राजचंद्रजी के वचन इस प्रकार हैं-

जगत के अभिप्राय की ओर देखकर जीव ने पदार्थ का बोध पाया है। ज्ञानी के अभिप्राय की ओर देखकर पाया नहीं है। जिस जीव ने ज्ञानी के अभिप्राय से बोध पाया है, उस जीव को सम्यग्दर्शन होता है।'

उपरोक्त वचन में स्पष्टतया यह बोध प्रगट होता है कि हमने दुनिया को दुनिया की नजरों से देखा है, ज्ञानी जनों की नजरों से नहीं। 'अगर हम ज्ञानी जनों के अभिप्राय को, उनके भावों व वचनों को सुन-समझकर जीते तो जगत का स्वरूप कुछ भिन्नरूपेण प्रतीत होता।

दुनियावी लोगों की नजरों में जीवन की सार्थकता व सफलता के पैमाने हैं- 'ऊँची डिग्री वाली पढ़ाई, मखमली रजाई, मुलायम देह वाली लुगाई, हर रात-रंगीन मना सके ऐसी कमाई, लोगों की भलाई व समाज में नाम-पद-यश की ध्वजा फहराई तो हो गई आपके जीवन की ऊँचाई ।

किन्तु ज्ञानीजन कहते हैं कि जीवन की सार्थकता लोगों द्वारा यश पाने में नहीं वरन् आत्मज्ञान पाने में है, अज्ञान निवृत्ति व अनासक्त भावों में है। इस हेतु पक्ष-विपक्ष मुक्त नजरिया विकसित हो, प्राणी मात्र से निर्वैर हो, अपेक्षारहित प्रेम हो, सादगी व सत्यमय जीवन हो। आत्मज्ञानी श्री विराट गुरुजी कहते हैं कि 'सम्यगदर्शन का विकास आत्मा का विकास है, वह स्वभाव है, जिसे उपलब्ध होना ही जीवन की सच्ची सफलता है।'

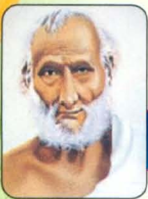

।। विश्वपूज्य श्रीमद् विजय राजेन्द्र सूरिश्वर गुरुभ्यो नमः।।

श्री राजेन्द्र जैन पर्व दिवस केलेण्डर

कार्तिक सुदी 1	- नववर्ष श्री गौतम गणधर केवल ज्ञान।
कार्तिक सुदी 2	- भाई बीज, आचार्य श्रीमद् यतीन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. की जन्मतिथि।
कार्तिक सुदी 5	- ज्ञान पंचमी।
कार्तिक सुदी 7	- चौमासी अठ्ठाई प्रारम्भ।
कार्तिक सुदी 15	- चातुर्मास समाप्त श्री सिद्धाचलजी की यात्रा-अ.भा.श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद स्थापना दिवस।
अगहन विदी 10	- भगवान महावीरस्वामी दीक्षा कल्याणक।
अगहन विदी 13	- प.पू. गच्छाधिपति राष्ट्रसंत श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. का 'जन्मोत्सव'।
अगहन सुदी 11	- मौन एकादशी।
पौष विदी 10	- भगवान पार्श्वनाथ जन्म कल्याण (पौषदशमी)।
पौष सुदी 3	- श्रीमद् यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. का स्वर्गारोहण दिवस।
पौष विदी 4	- उपाध्याय श्री माहेनविजयजी म.सा. का स्वर्गारोहण दिवस।
पौष सुदी 7	- दादा गुरुदेव श्रीमद् विजयराजेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. का जन्म व निर्वाण दिवस (गुरु सप्तमी)।
माह विदी 13	- भगवान आदिनाथ मोक्ष कल्याणक (भैरु तैरस)।
माह सुदी 4	- प.पू. गच्छाधिपति राष्ट्रसंत श्रीमद् विजय जयंतसेनसूरीश्वरजी म.सा. का 'संयम उत्सव दिवस'।
माह सुदी 7	- आचार्य श्री भूपेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. की स्वर्गारोहण दिवस।
माह सुदी 13	- प.पू. गच्छाधिपति राष्ट्रसंत श्रीमद् विजय जयंतसेनसूरीश्वरजी म.सा. का 'आचार्यपद पाटोत्सव दिवस'।
फाल्गुन सुदी 7	- चौमासी अठ्ठाई प्रारंभ।
फाल्गुन सुदी 14	- होली चातुर्मास प्रारंभ।
चैत्र विदी 8	- वर्षीतप-प्रारंभ भगवान आदिनाथ दीक्षा कल्याणक।
चैत्र सुदी 1	- नूतन चैत्री नववर्ष प्रारंभ।
चैत्र सुदी 13	- महावीर स्वामी जन्म कल्याणक।
चैत्र सुदी 15	- नवपद ओली समाप्त, श्री सिद्धाचलजी की यात्रा एवं प.पू. गच्छाधिपति राष्ट्रसंत श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. एवं आज्ञानुवर्ती मुनिभगवंत साध्वी भगवंत के चातुर्मास की उद्घोषणा का पर्व।

वैशाख सुदी 3	-	अक्षय तृतीया (वर्षीतप पारणा)।
वैशाख सुदी 10	-	भगवान महावीर स्वामी केवल ज्ञान कल्याणक।
वैशाखसुदी 11	-	भगवान महावीर स्वामी के शासन में चतुर्विध श्रीसंघ का स्थापना दिवस।
आषाढ़ सुदी 7	-	चौमासी अठ्ठाई प्रारम्भ श्रीमद् विजयविद्याचन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. की स्वर्गारोहण तिथि।
आषढ़ सुदी 14	-	चातुर्मास प्रारंभ।
श्रावण सुदी 5	-	मासीधर तप (मासक्षमण)।
श्रावण सुदी 7	-	श्री नमस्कार महामंत्र आराधना पर्व प्रारम्भ।
श्रावण सुदी 15	-	श्री नमस्कार महामंत्र आराधना पर्व समाप्त, रक्षाबंधन।
भादवा विदी 5	-	पक्खीधर।
भादवा विदी 12	-	पर्वाधिराज पर्युषण प्रारम्भ।
भादवा विदी 30	-	बड़ा कल्पसूत्र वाचन।
भादवा सुदी1	-	भगवान महावीर स्वामी जन्म वाचन महोत्सव।
भादवा सुदी 1	-	श्रीमद् विजयधनचन्द्रसूरिश्वरजी म.सा. की स्वर्गारोहण तिथि
भादवा सुदी 2	-	तेलाधर।
भादवा सुदी 4	-	संवत्सरी क्षमापना महापर्व।
कुंवरा सुदी 7	-	नवपदजी ओली प्रारंभ।
कुंवार सुदी 15	-	नवपदजी ओली समाप्त ।
कार्तिक विदी 13	-	धनतेरस।
कार्तिक विदी 14	-	रुपाकली चौदस।
कार्तिक विदी 30	-	दीपावली महावीर स्वामी निर्वाण कल्याणक (दिपावली महापर्व पर पटाखे छोड़ने का त्याग करने वालों से संकल्प पत्र भरवाना व सम्मान करना ।

लोकसंत गच्छाधिपति श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. द्वारा रचित राजेन्द्र जैन तिथि दर्पण पर आधारित उक्त पूर्व तिथियों पर विभिन्न प्रकार के जप-तप व सामाजिक, रचनात्मक आदि धार्मिक कार्यक्रम आयोजित करने के लिए मार्गदर्शिका 'पर्वदिवस केलेण्डर' के रूप में प्रस्तुत है।

- संकलन -
संयोजक : नरेन्द्रकुमार मोतीलाल
धाड़ीवाल महिदपुर (म.प्र.)
मो. 9926764241

- प्रकाशक / सौजन्य -
अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन
नवयुवक परिषद परिवार

सम्यक्श्रद्धा के बिना फलसिद्धि नहीं

(श्री शांतिलाल सगरावत, मंदसौर)

'रुचिजिनोक्ततत्वेषु सम्यक्श्रद्धानमुच्यते।
जायतेतन्निसर्गेण, गुरोराधिगमेन वा।।'

श्री जिनेश्वर भगवान के द्वारा कथित तत्वों में रुचि होना सम्यक श्रद्धा कहलाती है। सम्यक्श्रद्धा के बिना फलसिद्धि नहीं होती। या यूँ कहें सम्यक्दर्शन दो प्रकार का होता है। गुरु महाराज के उपदेश के बिना जो स्वाभाविक होता है, उसे प्रथम निसर्ग- सम्यक्त्व कहते हैं और जो गुरु महाराज के उपदेश से अथवा प्रतिमा, स्त्तम्भ, स्त्री आदि किसी भी वस्तु को देखकर होता है, उसे दूसरा अधिगम सम्यक्त्व कहते हैं।

प्रत्येक संसारी जीव यथा प्रवृत्तिकरण के योग से ग्रन्थि-प्रदेश के नजदीक आता। अत्यन्त कठिनाई से भेदन हो सकने योग्य रागद्वेष के परिणामों को ग्रंथी कहते हैं। ग्रंथी स्थान तक पहुँचा वह जीव रागादि से प्रेरित होकर फिर कर्म की उत्कृष्ठ स्थिति बाँधता है और उसके फलस्वरूप चारगतियों में भ्रमण करता रहता है। ग्रंथ स्थान तक पहुँचा हुआ जीव भविष्य में कल्याण प्राप्त करने वाला भव्य जीव भी होता है। वह अपने महावीर्य को प्रकट करते हुए कठिनता से उल्लंघन की जा सकने वाली ग्रंथी का एकदम उल्लंघन भेदन करकें उसी प्रकार आगे पहुँच जाते हैं, जिस प्रकार कोई पथिक लम्बे पथ करने योग्य मिथ्यात्व के दलों को छिन्नकर उसी समय अन्तर्मुहूत की स्थिति वाला ओपशामिक सम्यग्दर्शन प्राप्त करता है। यह सम्यग्दर्शन निसर्ग- सम्यग्दर्शन कहलाता है।

आम जीवों को गुरु महाराज के उपदेश से अथवा किसी प्रकार के आलम्बन से जो सम्यग्दर्शन प्राप्त होता है उसे अधिगम- सम्यक्त्व कहा जाता है। यह सम्यगदर्शन यम और प्रशम के औषध-समान, ज्ञान, चारित्र एवं श्रुतोदि का हेतु है। जो सम्यक्त्व ज्ञान और चारित्र से रहित होता है, तो भी वह प्रशंसनीय लेकिन मिथ्यात्व रूपी विष से दूषित ज्ञान और चारित्र प्रशंसनीय नहीं है। ज्ञान और चारित्र से रहित होने पर भी सम्राट श्रेणिक ने सम्यक्त्व के प्रभाव से अनुपम सुख निदान के समान प्राप्त तीर्थंकर नाम कर्म उपार्जन किया था। संसार समुद्र में डूबने वाले के लिये यह मौका समान हैं। दुःख रूपी वन को जलाने के लिये यह दावानल के समान है। अतः सम्यक्त्व रूपी रत्नदर्शन को ग्रहण कर जीवन को सार्थक करना चाहिए।

पीली मेथी-एक औषधी

(श्री अचलचन्द जैन, सायला जि. जालोर)

प्रकति ने हमें बहुत सी वस्तुएँ उपहार में दी है। पीली मेथी उनमें से एक है। पीली मेथी से अनेक बीमारियों का उपचार होता है। वैसे पीली मैथी दैनिक उपयोग की चीज है। वायुनाशक औषधी के रूप में इसका विशेष उपयोग होता है। वायु सम्बन्धी रोगों में मैथी का आटा छाछ में मिलाकर पीने से वायु विकार समाप्त हो जाता है।

वैज्ञानिक मतानुसार पीली मैथी में एक विशिष्ठ प्रकार का तेल और फास्फरिक एसिड होता है। इसके अलावा इसमें सोडियम, जींक, कॉपर आदि तत्त्व भी मिलते हैं, जो शरीर की तन्दुरस्ती के लिये आवश्यक है। पेट सम्बन्धी तकलीफों के लिये मैथी रामबाण औषधी है।

राजस्थान में मैथी के दानों में आमचूर, मसाले आदि मिलाकर सब्जी बनाई जाती है, जो न केवल स्वादिष्ट होती है, अपितु स्वास्थ्य के लिये भी लाभदायक होती है। अचार खाने के शौकीन लोग आम के टुकड़े कर उसमें पीसी हुई मैथी और मसाले मिलाकर अचार बनाते हैं। चूँकि कच्चे आम खट्टे होते हैं इस कारण कभी-कभी जोड़ों को जकड़ लेते हैं, परन्तु मेथी की वायुनाशक शक्ति के कारण जोड़ों में दर्द नहीं होता और वे अकड़ते भी नहीं है। पीली मैथी के विशिष्ठ गुणों के कारण मूंग के साथ इसे उबालकर सब्जी भी बनाई जाती है।

मैथी खाने के लिये सर्दी की ऋतु ज्यादा अनुकूल है। अतः इस ऋतु में मैथी पाक अथवा मैथी के लड्डु खाना लाभदायक होता है। शीतकाल में मैथी का सेवन करने वालों पर वायु रोग का असर नहीं होता। प्रसूता स्त्रियों के लिये मैथी एक उत्तम औषधी है। इससे स्त्रियों की दुर्बलता दूर होती है और शरीर में शक्ति आती है। मैथी का पाचक रस अग्नाशय को अधिक क्रियाशील बनाता है जिससे जठराग्नि प्रदीप्त होती है। मेथी का सेवन कफ को मिटाता है और ज्वर (बुखार) को भी दूर करता है। इतना ही नहीं मैथी कमर का दर्द एवं सामान्य शारीरिक पीड़ा को भी दूर करती है।

प्रतिदिन रात को दो तोला पीली मैथी के दानों को पानी में भिगोकर रख दीजिये। प्रातः उठकर उनको खूब मसलकर पानी को छानकर पी लीजिये। ऐसा लगातार एक महीने तक करने से डायबिटीज के रोगी के पिशाब में जाने वाली शर्करा कम हो जाती है। मैथी के दाने कड़वे होने से शर्करा कम करने का इसमें विशिष्ठ गुण है। इसके सेवन से डायबिटीज नियंत्रित होने के अनेक उदाहरण मौजूद है। डायबिटीज नियंत्रण की यह सस्ती परन्तु असरदार औषधी

है। पीली मैथी के दानों का लेप बालों में लगाने से बाल मजबूत होते हैं। रूसी खत्म होती है और बाल झड़ने की समस्या से छुटकारा मिलता है।

मैथी के दानों को रातभर नारियल के तेल में भिगोकर सुबह इस तेल से सिर पर मसाज कर हल्के गरम पानी से बाल धोने से बाल मुलायम होते हैं।

इस तरह मैथी एक प्राकृतिक औषधी है। इससे वायु विकार, जोड़ी की जकड़न, डायबिटीज, कफ, सामान्य दर्द, पाचन क्रिया, बालों का झड़ना, कब्ज, उच्च रक्त चाप आदि कई बीमारियां ठीक होती है।

सबसे बड़ी बात यह है कि पीली मैथी का औषधी के रूप में कोई साईड इफेक्ट नहीं होता। यह कई रोगों को ठीक करने की विश्वसनीय और असरदार दवा है। अतः इसे अजमाकर लाभ लेना चाहिए।

एक नजर "कृपा" की ...

सुरेश समीर
राणापुर

एक नजर कृपा की कर दो । एक नजर कृपा की कर दो ।
श्री जयंतसेन मतवाला ओ, पेपराल के लाला
एक नजर कृपा की-3 ।

जो मैं हूँ यदि अतिपतित तो पावन कर दो काया
मेरे मन से गायब कर दो जग की झूंठी माया
मेरी खाली झोली गुरुवर वैभवता से भर दो ।। एक ।।

जिसको मैंने अपना समझा वो ही धोखा देते
भाई-बंधु और मित्रगण सब ही मजा हैं लेते
सच कहने की ताकत मुझमें कूट-कूट कर भर दो ।। एक ।।

पेपराल में वर्षायोग जहां मधुकर वीर बिराजे
इस धरती के हर पल क्षण में नित्यानंद ही छाजे
सिद्ध-विद्वद कि देशना जल्दी पूरी कर दो ।। एक ।।

सुरेश समीर जन्मजात से चरण तुम्हारी आता
ना कोई लाग ना लपेट से तुमको ही है ध्याता
दोनों हाथ उठाओ गुरुवर मेरे सरपर रख दो ।। एक ।।

कर्म बन्धन वैज्ञानिक आधार

(श्री रितेश चौपड़ा, रतलाम)

अनादिकाल से विश्व को पहचानने के प्रयत्न हो रहे है। मानव, मस्तिष्क में यह जिज्ञासा हमेशा से रही है कि जगत किन तत्वों से निर्मित हुआ है। इसी तारतम्य में महामशीन (लार्ज हेड्रान कोलाइडर) का निर्माण किया गया जिसमें प्रोटान की आपसी टक्कर से अत्यधिक उर्जा प्राप्त कर हिंग्स बोसान (गॉड पार्टिकल) को वैज्ञानिक गणना द्वारा महसूस किया गया इसे देखा न जा सका क्योंकि यह निर्माण के तुरन्त बाद लुप्त (गल) हो गया।

जैन दर्शन में हजारों वर्षों पूर्व इस हिंग्स बोसान कण के लिये पुद्गल (परम अणु) शब्द का प्रयोग किया गया है अर्थात् पूर्ण एवं गल (गलन) एवं इसके वर्ण, गंध, रस एवं स्पर्श के बारे में विस्तार से बताया गया है। इस कण का एक सिरा स्निग्ध (चिकना) एवं दुसरा लक्ष्य (रूखा) बताया गया है इसे विज्ञान की भाषा में धन एवं ऋण समझ सकते है। जैन दर्शन के अनुसार इसके स्वरूप को केवलज्ञानी एवं परम अवधिज्ञानी ही जानते है एवं देखते हैं।

पुद्गल (परम अणु) के चार भेद बताये गये है जो भेदानुसार बंध (स्कन्ध)का निर्माण करते है। आचार्यश्री आनन्द ऋषिजी की पुस्तक दर्शन एवं विज्ञान के परिपेक्ष्य में पुद्गल में इसका पूर्णतया विवेचन किया गया है।

अब हम आत्मा (प्राण वायु/प्राण उर्जा) के आसपास उपस्थित पुद्गल (परम अणु) द्वारा निर्मित बन्ध (कर्म) को देखते है इसे हम समझने के लिये नकारात्मक कर्म (ऋण) एवं सकारात्मक कर्म (धन) की कल्पना करते है। प्रत्येक वाणी के आसपास एक औरा (मेग्नेटिक फिल्ड) को प्रयोगों द्वारा पाया गया है जो भी पुद्गलों का समूह हैं, प्राणी के भाव या कार्य नकारात्मक होने पर इस औरा में क्षोभ उत्पन्न होता है एवं औरा के पुद्गल आत्मा के आसपास पुद्गलों के धनात्मक अंशों से जाकर कर्म बन्धन का निर्माण करते है, कर्म बन्धन की मात्रा पुद्गलों के ज्यादा ऋणात्मक एवं कम धनात्मक अंशो के बन्ध को हम चिकने गाढ़े कर्म कहते है।

इसके विपरीत अच्छे भाव या अच्छे कर्म (भौतिक) की अवस्था में पुद्गल में आवेग उत्पन्न होता है जिससे वे बन्ध तोड़कर औरा के पुद्गलों से बन्ध का निर्माण करते हैं। जिसे हम निर्जरा कहते है।

यही बन्ध जन्म जन्मान्तर आत्मा

के साथ गमन करता है यहाँ यह भी जानना जरूरी है कि आत्मा एवं पुद्गल साथ होने पर भी कभी एक मेव नहीं होते है।

नकारात्मक कर्म बन्धनों से आत्मा पर बन्ध का भार अधिक हो जाता है एवं आत्मा द्वारा शरीर छोड़ने पर भार आत्मा के साथ ही रहता है। प्रकृति का नियम है की भारी वस्तुएँ निम्न (नीचे) की और एवं हल्की वस्तुएँ उर्ध्व (ऊपर) की और गमन करती है। जैन आगमों में सात नरकलोक नीचे की और एवं ग्यारह देवलोक ऊपर की और बताये गये है इस तारतम्य में आत्मा अपना स्थान ग्रहण करती है।

भाव की शुद्धता का जैन दर्शन में काफी महत्व बताया गया है। प्राणी बहुत सारे कर्मों से बच सकता है।

मन्दिर में प्रतिष्ठित प्रभुजी की मूर्ति के आसपास सिर्फ धनात्मक अंशों वाले औरा मण्डल द्वारा हमारी शुद्ध भावना से किये गये स्पर्श एवं वन्दना से तुरन्त हमारी आत्मा के आसपास उपस्थित नकारात्मक बन्ध (पाप कर्म) टूट जाते है। भावना की शुद्धता हमारे मन में प्रभु की छवि की उच्चता के अनुपात में बढ़ती जाती है हमें आँखों वाली मूर्ति में भावना की ऊचाइयाँ अनुभव होती है या हमें ध्यान मुद्रा वाली मूर्ति में भावना की ऊँचाईयाँ अनुभव होती है सारी अवस्था में हमारे भाव द्वारा कर्मों की निर्जरा होती है परन्तु मूर्ति के सम्बन्ध में वैचारिक विरोध से भावना की सारी शुद्धता नष्ट होकर कर्म बन्धन की और प्रेरित होते है। इस उदाहरण के द्वारा हम विभिन्न वैचारिक मतभेदों को समाप्त कर सकते हैं।

इसी प्रकार समस्त वैराग्यी सन्तों एवं साध्वियों में भावना एवं कर्म की शुद्धता के कारण उनके आसपास धनात्मक अंशों वाले और मण्डल का निर्माण होता है जिनके भावपूर्वक किये गए दर्शन से कर्मों की निर्जरा होती है।

खराब

अभक्ष्य पदार्थ खाने से पेट खराब होता है, पेट खराब हो तो स्वास्थ्य खराब होता है, स्वास्थ्य खराब हो तो दिनचर्या खराब होती है, आलस्य से समय खराब होता है, रात खराब होने से दिन खराब होता है, स्त्री कर्कशा हो तो रात खराब होती है, रात खराब होने से नींद खराब होती है, झूठ बोलने से बात खराब होती है, बात खराब होने से व्यवहार खराब होता है । कटु भाषण से संबंध खराब होता है, अहंकार से प्रतिष्ठा खराब होती है, लोलुपता से चरित्र खराब होता है, अनियमितता से व्यवस्था खराब होती है और कर्त्तव्यों का पालन न करने से जीवन ही खराब हो जाता है ।

गाथा पत्नी सुभद्रा

गाथा पत्नी शुभद्रा निसंतान थी। एक बार भगवान श्री पार्श्वनाथ की साध्वी प्रमुखा आर्या सुव्रताजी उसके घर में आहार-पानी के लिये पधारी तो उसने उनसे संतान प्राप्ति का उपाय पूछा।

साध्वी के लिये इस प्रकार का व्रत बतलाना निषिद्ध है, अतः आर्या सुव्रताजी ने उन्हें धर्म की शरण ग्रहण करने का उपदेश दिया और सुभद्रा ने श्राविका-धर्म ग्रहण करके साधनामय जीवन व्यतीत करना आरम्भ कर दिया अन्त में भावों को उत्कृष्टता के कारण यह साध्वी बन गई।

साध्वी-जीवन में भी वह अपनी संतान लालसा का दमन न कर पाई, अतः मृत्यु के अनन्तर साधना फल के रूप में वह देवलोकों में उत्पन्न हुई, परन्तु वहाँ पर भी वह अपनी देवी शक्ति (वैक्रिय शक्ति) से अनेक बालकों का उत्पन्न करती थी, अतः वह 'बहुपुत्रिका देवी' के नाम से प्रसिद्ध हुई।

भद्रा-3

ज्ञाता-धर्म-कथा में भी भद्रा नामक एक श्राविका का वर्णन प्राप्त होता है। यह भद्रा राजगृह के समृद्ध श्रेष्ठी धन्य सार्थवाह की पत्नी थी और इसने निसंतान होने के कारण नागदेवता की आराधना की। फलस्वरूप उसे पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई और उसने उसका नाम देवदत्त रखा।

भद्रा ने अपने पुत्र की सेवा के लिये चेटक नाम के एक दास को नौकर रख लिया। भद्रा ने एक दिन अपने पुत्र को स्नानादि कराकर वस्त्राभूषणों से सुसज्जित करके सेवक से कहा कि इसे बाहर घुमाने के लिये ले जाओ। सेवक बालक को ले गया और एक वृक्ष के नीचे उसे बिठला कर स्वयं अन्य बालकों के साथ खेलने लग गया।

इसी बीच विजय नामक चोर वहाँ से निकला और बालक को उठा ले गया। उसने वस्त्राभूषण उतारकर बालक की हत्या करके शव को एक कुएँ में फैंक दिया। सार्थवाह धन्य और भद्रा बहुत दुखी हुए परन्तु विधि के विधान को अटल समझ कर मौन हो गये।

किसी राज्यापराध के कारण धन्य सार्थवाह को कारावास का दण्ड प्राप्त हुआ। कारावास में विजय चोर पहले से

ही बंद था। धन्य सार्थवाह का भोजन घर से आता था। विजय ने उससे बहुत अनुनय-विनय की, अतः धन्य यह जानते हुए भी कि यही मेरे पुत्र का हत्यारा है, उसे भोजन का कुछ अंश देने लगा।

जब धन्य कारावास से मुक्त हुआ तो उसके परिजनों ने उसका बहुत सम्मान किया, किन्तु भद्रा ने सम्मान में भाग नहीं लिया। धन्य ने उससे पूछा तो उसने कहा- 'आप मेरे पुत्र के हत्यारे को भोजन क्यों देते रहे हैं ?'

धन्य ने कहा देवी- हत्या का फल विजय भोगेगा, परन्तु मैं एकाकी भोजन करने का पाप क्यों करता ?' भद्रा को तत्त्व समझ में आ गया और वह पूर्ववत् पति सेवा में लीन हो गई।

एक बार जब प्रभु महावीर राजगृह पधारे तो सार्थवाह धन्य भी उपदेशामृत का पान करने गए और इतने तृप्त हुए कि सर्वस्व त्याग कर साधु बन गए। भद्रा धैर्य धारण कर उनके इस कृत्य में बाधक नहीं बनी, अपितु उसने भी अपना जीवन धर्मध्यानमय बना लिया और साधनारत रहकर आत्मोद्धार करने लगी।

सात समुद्घात

1. वेदना 2. कषाय 3. मरण 4. वैक्रिय 5. तैजस 6. आहरक 7. केवली

सात भय

1. इहलोक भय 2. परलोक भय 3. आदान भय
4. अकस्मात् भय 5. आजीविका भय 6. मरण भय 7. अपयश भय

सात व्यसन

शराब, मांस, जुआ, शिकार, चोरी, परस्त्रीगमन, वेश्यागमन

सात नय

नैगम, संग्रह, व्यवहार, ऋजुसूत्र, शब्द, समभिरूढ एवं भूत ।

वासुदेव के 7 रत्न

1. पांचजन्य शंख 2. सुदर्शन चक्र 3. कौमोदिकी गदा
4. शाडर्ग धनुष्य 5. नंदक खड्ग 6. कौस्तुभ मणि 7. वनमाला

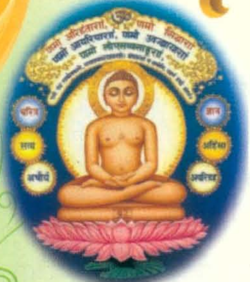

महावीर का जीवन दर्शन

(श्रीमती इंदिरा घोड़ावत, झाबुआ)

'सव्वेसिं जीवियं पियं, नाइवाएज्ज कंचणं।

अर्थात्– सबको जीवन प्रिय है अतः किसी भी प्राणी की हिंसा न करें।

–भगवान महावीर

अहिंसा के अवतार भगवान महावीर ने 'जीयो और जीने दो' का सिंहनाद करके वैयक्तिक, पारिवारिक, राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं के निराकरण का बीज-मंत्र ही दे दिया। उनकी वाणी जन-मंगल की यथार्थ वाणी है। हमारे दर्शन और धर्म की चिंतनधारा उसी शाश्वत् वाणी का आधार लेकर प्रवाहित है। भगवान की दिव्य जीवन-रेखा एवं उपदेश का आज के प्रवहमान युग के परिप्रेक्ष्य में पुनर्मूल्यांकन हो, चिन्तन-मनन हो और एक सर्व सुलभ पथ खोज निकाला जाय कि देवत्व हमारे जीवन से दूर की वस्तु न होकर हमारे जीवन के स्वस्थ विकास में परिलक्षित हो।

वीतराग महावीर अपनी साधना से सिद्ध हुए और अनन्त आनन्द-सागर और बोध को प्राप्त हुए। पुष्प से सौरभ और दीप से ज्योति स्वतः फैल जाती है। महावीर का जीवन-दर्शन लोककल्याण की दिशा में इसी प्रकार से सहज भाव से विस्तार और प्रसार पाता गया। इस विस्तार के प्रसार में न कोई हठ न कोई आग्रह और न कोई अहम् था। यही कारण है कि उनका जीवन दर्शन कोटि-कोटि मनुष्य के जीवन-विकास में दिशा-निर्देश का काम करता आ रहा है।

आत्मनिष्ठ महावीर का उपदेश व्यक्ति को समाज से पृथक करके किसी पारलौकिक सुख के लिये तत्पर करना नहीं था, अपितु मानव की अन्तरात्मा को प्रबुद्ध करने के लिये था। उन्होंने तत्कालीन जन-जीवन के लिये नये मूल्यों को स्थापित किया वे जीवित सत्य की प्राण-प्रतिष्ठा करने वाले मानवतावादी तीर्थंकर थे।

महावीर का युग देववाद का युग था। तत्कालीन जन-जीवन का भय और प्रलोभन से पीड़ित था। रूदन और हताश से भरे जीवन में महावीर की दिव्य ध्वनि गूंज उठी-'मनुष्य तू क्षुद्र नहीं है, दीन-हिन नहीं है, तू तो अनन्त शक्ति का पुंज है। तू जाग, स्वयं के कृतकर्म से, पुरुषार्थ से सब कुछ पा सकता है।' उनका कहना था- **'कडाण कम्माणं न मोक्ख अत्थि।'** आत्मा स्वयं कर्म की कर्त्ता और भोक्ता है।

कोई अन्य शक्ति न तो किसी को सुख दे सकती है और न दुःख। सम्पूर्ण जैन-दर्शन कर्म सिद्धान्त पर आधारित है।

भगवान महावीर तप-साधना में स्वावलम्बन के पक्षधर थे। उनका कहना था- 'परम् वीरता अपने आप अर्थात् क्रोध, मान, माया, लोभ एवं इन्द्रियों पर विजय प्राप्त करने में है अन्य पर विजय करने में नहीं। उनकी व्यापक दृष्टि में मानव केवल मानव है और कुछ नहीं। छुआछूत ऊँच नीच, जातिवाद आदि का जैन दर्शन में कोई स्थान नहीं। उनके समवसरण में देशना-श्रवण हेतु प्रत्येक प्राणी को आने की छूट थी। वे प्रत्येक को योग्यता के अनुसार निरखते थे। उनकी दृष्टि में मानव अपवित्र नहीं, मानव का अनाचार, दुराचार अपवित्र। शासनपति महावीर के मतानुसार धर्म मानवीय जीवन की प्रयोगशाला है। धर्म मनुष्य की आत्मा को संस्कारित करता है। जड़त्व का त्याग और निजत्व की जागृति ही धर्म है। उन्होंने आध्यात्मिक विकास के समक्ष भौतिक विकास को नगण्य माना है। मानवीय चेतना जब विकृति शून्य हो जाती है, राग- द्वेष से परे हो जाती है, तब वह नर से नारायण बन जाती है। आत्मानन्द की शाश्वत धारा प्रवाहित हो जाती है।

मुक्तिवरण महावीर की साधना शरीर की नहीं, आत्मा के सत्य की साधना है। उनके उपदेश सम्पूर्ण विश्व के लिये ऐसी संजीवनी बूटी है। जो हर काल खण्ड में प्रभावी है। वर्तमान विश्व जिन समस्याओं से जकड़ा जा चुका है हिंसा, युद्ध, अशांति, भय, तनाव, आतंक, अनैतिकता जैसी संहारक गतिविधि रोजमर्रा की दिनचर्या में शामिल हो चुकी है। सत्ता व धर्म की उन्मादकता अँधी-आर्थिक प्रतिस्पर्धा ने सम्पूर्ण मानव जाति व मानवता को उसके मूल्यों का विनाश की कगार पर ला खड़ा कर दिया है। ऐसी विषम परिस्थिति में भगवान महावीर द्वारा प्रतिपादित सर्वकालिक श्रेष्ठ सिद्धान्त- अहिंसा, परिग्रह, अनेकांतवाद, स्यादवाद का क्रियात्मक चिंतन, परिपालन-विश्व-जनमंडल की धुरी साबित हो सकती है। उनका पथ वीरों का पथ है, मानवीय गरिमा का पथ है। विश्व शांति के कल्याण महावीर ने मानव को दुःखों से मुक्त करने के लिये सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह, अचौर्य और ब्रह्मचर्य के सिद्धान्त को प्रतिपादित किया है। 'क्षमा देना और प्राणीमात्र के साथ मित्रता'- यही त्रिलोक दृष्टा महावीर, त्रिशलानन्दन महावीर के दर्शन का दिव्य संदेश है-

खामेमि सव्वे जीवा, सव्वे जीवा खमंतु में।
मित्ति में सव्वभूएसू वेरं मज्झं न केइई।।

बाल शाश्वत

– मुनि जिनागमरत्नविजयजी म.सा.

प्रिय बच्चों !!!

सहृदय धर्मलाभ...

दीपावली पूर्ण हुई, मुझे विश्वास है आपने इस वर्ष फटाके नहीं जलाये होंगे क्योंकि, आप किसी भी जीव को परेशान नहीं करना चाहते बराबर न...।

अपने प्राण प्यारे पूज्य गुरुदेव ने आप सभी को धर्मलाभ कहा है और नये वर्ष में बहुत अच्छी पढ़ाई करो पाठशाला में आगे बढ़ो ऐसे आशीर्वाद दिये हैं।

नये वर्ष की हितशिक्षा भी मैं लाया हूँ आप ध्यान से पढ़ो ।

* नये वर्ष में हर रोज माता-पिता का चरण स्पर्श करना ।
* हर रोज परमात्मा की पूजा करना।
* दोस्तों के साथ पाठशाला जाना ।
* रात्रि भोजन त्याग करना ।
* कभी भी झूठ नहीं बोलना ।

बच्चों ! यह नियम पालने से आपका पुण्य बढ़ेगा। वडीलों के आशीष मिलेंगे और आप भी कुमारपाल राजा जैसे बन पाओगे।

नये वर्ष में आपकी प्रगति हो यही मंगल भाव।

गुण माला-दर्शनोपासना

* वीतराग परमात्मा के प्रति श्रद्धा रखो।
* साधु-साध्वी के प्रति आदरभाव रखो।
* संघ और शासन के प्रति वफादारी रखो।
* परमात्मा के प्रति अपनी श्रद्धा बढ़ाने हेतु यह बात बताई है। आपकी परमात्मा के प्रति श्रद्धा बढ़ेगी तो आप जगत को सच्चा रास्ता दिखा पाओगे। * बच्चों कभी भी अपने परमात्मा के अलावा अन्य धर्म के देवी-देवता को मानना नहीं चाहिए।

अगर आप देवी-देवता की पूजा करते हो तो मिथ्यात्व नामक भयंकर कर्म बंधता है। आप जिनशासन के सेवक बनने हेतु इतना अवश्य करें ।

दर्शन प्राप्त करने हेतु :- * कभी भी साधु-साध्वी की निंदा न करो। * कभी भी जिनमंदिर में मस्ती न करो। * तीर्थयात्रा में कभी बाहर का भोजन न करो। * तीर्थयात्रा में कपड़े अच्छे पहनो। * गुरुजनों की सेवा करो।

याद रखो बड़े होकर जिनशासन आपको संभालना है। अगर आपका जीवन अच्छा बनेगा और आज से ही आप जिनशासन के प्रति अपना जीवन उत्तम बनाओगे तो आपके दर्शनावरणीय कर्म लुटेंगे और आप महान बन जाओगे।

मैं कहाँ हूँ ?

बच्चों !!! शास्त्रों में उत्तम व्यक्ति के 9 गुण बताये हैं। इन गुणों के अनुरूप आज सबको मार्क देंगे, आप देखना आप में कितने गुण हैं । एक गुण के 10 मार्क दिये जायेंगे ।

1. उत्तम व्यक्ति दूसरों की भूल नहीं देखते ।
2. उत्तम व्यक्ति सभी के गुण की प्रशंसा करता है ।
3. उत्तम व्यक्ति सभी के ऊपर उपकार करता है।
4. उत्तम व्यक्ति माता-पिता के चरण स्पर्श करता है।
5. उत्तम व्यक्ति सभी की मदद करता है।
6. उत्तम व्यक्ति कभी झूठ नहीं बोलता।
7. उत्तम व्यक्ति कभी झगड़ा नही करता।
8. उत्तम व्यक्ति कभी चोरी नहीं करता।
9. उत्तम व्यक्ति हर रोज अच्छे से पढ़ाई करता है और पाठशाला जाता है।

आपके जो मार्क आते हैं वह आप लिखकर मम्मी/पापा को बतायें और पूर्ण मार्क लाने का प्रयत्न करें ।

89-90 मार्क ✡✡✡✡✡ स्टार

60-70 मार्क ✡✡✡✡ स्टार

50 मार्क ✡✡✡ स्टार

50 से कम सुधरने की जरूरत है।

बच्चों की कहानी

विश्व पढ़ने में हमेशा अपनी कक्षा में आगे रहता था। इसलिए उसके अध्यापक उससे खुश रहते थे। परन्तु इस बार परीक्षा का जब परिणाम आया तब उसके अनुत्तीर्ण होने पर मास्टर साहब को आश्चर्य हुआ। उन्होंने विश्व से पूछा ' तुम कैसे अनुत्तीर्ण हो गए ?' तुम तो पढ़ने में काफी आगे थे ।'

इस पर विश्व ने दु:खी होकर कहा 'सर'! काफी दिनों से पिताजी की तबीयत खराब चल रही है। वे लगभग 1 महीने से चिकित्सालय में भर्ती थे। इसी कारण से मैं पढ़ाई नहीं कर पाया और मैं फैल हो गया।

कुछ दिन बाद फीस जमा करने वाले दिन मास्टर साहब फीस जमा कर रहे थे तब भूल से 50 रुपये टेबल से नीचे गिर गये। विश्व ने यह देखा और दूसरे लड़कों का ध्यान वहां नहीं था।

विश्व ने मास्टर साहब के जाने के बाद 50 रु. उठा लिए। फिर उसके मन में हुआ की यह वापस दूंगा तो पापा की दवाई कैसे लाऊँगा और न दिया तो चोरी का पाप लगेगा

आखिर पाप कार्य न करते हुए विश्व ने पैसे वापस दे दिये। मास्टर साहब ने उसको 15 अगस्त के दिन पुरस्कार दिया और परीक्षा में उत्तीर्ण भी किया।

बच्चों कभी भी चोरी न करने से यह फायदा होता है।

ज्ञान गम्मत-2

यहाँ दिये गये सवाल के उत्तर से आपका ज्ञान भी बढ़ेगा और आपका गणित भी पक्का होगा।

1. 13+2 x 3 = ... आगम है।
2. 8+100 ÷3 = ... अरिहंत के गुण
3. 70−7 ÷9 = ... नर्क के प्रकार
4. 14 ÷ 2x 3+3 =.... तीर्थंकर है।
5. 108 ÷ 12 x 4 = ... आचार्य के गुण
6. 10 x 3+ 4 x 2.... नवकार के अक्षर
7. 500 ÷ 10 - 42 =.... कर्म के प्रकार
8. 200 - 50 + 8 =.... कर्म के भेद
9. 20 x 9 ÷ 20 =.... तत्व है।
10. 8 x 9 =.... वीर प्रभु की आयु है।

सही उत्तर अंत में दिये है अपना I.Q लेवल चेक करें।

श्लोक शाश्वत-2

विनयश्च विवेकश्च, द्वयं धर्मस्य साधनम्।
तद्धयेन विना धर्मो, निर्मितोऽपि निरर्थकः।।

अर्थ– विनय और विवेक दोनों धर्म के साधन हैं, उसके बिना किया हुआ धर्म निरर्थक है।

बच्चों यह श्लोक और अर्थ याद करना और स्कूल में अपने टीचर्स एवं दोस्तों को भी बताना।

कथानुयोग वाचना

महाराजा कुमारपाल की मृत्यु के बाद अजयपाल को राजा बनाया गया। अजयपाल ने अपने प्यारे प्रभु के सभी जिनमंदिरों का नाश किया और राजसभा में कोई तिलक करके आयेगा तो उसे भी मार दिया जायेगा ऐसा एलान किया।

यह सुनकर कपर्दी मंत्री ने सभी जैन युवानों को इकट्ठा किया और राजा के वहाँ अपने प्राण देने का तय किया। दूसरे दिन राजसभा में लाखों जैन युवान इकट्ठे हुए। तब गुस्सा हुए अजयपाल ने गर्म तेल की कडाई में सभी को डालने का आदेश दिया।

21-21 पति-पत्नी ने तिलक के लिए बलिदान दिया तब यह तिलक आज हम सभी कर सकते हैं।

प्यारे बच्चों ! आप भी इस तिलक की घटना से हर रोज तिलक लगाने का नियम करो। यह तिलक प्रभु की आज्ञा को सूचित करता है।

भाइयों को बादाम के आकार का और बहनों को (o) तिलक लगाना चाहिए।

मस्तक ऊपर तिलक लगाने से शासन की प्रभावना भी होती है और पुण्य भी मिलता है।

तत्व दर्शन

गतांक से...

हाँ ! बच्चों !! नर्क की कम से कम आयु दस हजार साल की होती है। वहाँ जीव कितना भी प्रयत्न करे तो भी दुःख से छूट नहीं सकता।

शायद यहाँ गलत कार्य करने के बाद जीव बच जाये लेकिन नर्क में उसे अवश्य दुःख भुगतना पड़ता है। नर्क के अंदर दुःख देने वाले 15 प्रकार के परमाधामी होते हैं।

पहला परमाधामी का नाम अंब है। वो सभी जीवों को डराता है। वो सभी के पीछे पड़कर जीवों को पकड़ता है। फिर मारता है। वह आकाश में उछालता है फिर नीचे पटकता है।

दूसरा परमाधामी अंबरिस है, यह तो बहुत भारी है, वह सभी को मारकर बेहोश करता है फिर जैसे सब्जी काटते हैं वैसे काट देता है। इसलिए ही भाई !! अपने प्रभु पाप न करने की बात बताते हैं। पाप भूल से हो भी जाये तो उसकी आलोचना लेनी चाहिए।

बताओ आपको नर्क में जाना अच्छा लगता है ?? नहीं ना तो पापकार्य छोड़ दो ....

(क्रमशः)

बाल शाश्वत 1 के उत्तर

1. तीसरी नर्क का नाम वालुका प्रभा है।
2. देवाधिदेव का पूजन, गुरु को वंदन और मंत्रराज का स्मरण सभी पाप नाश करता है।
3. शिक्षक को आदर सम्मान देना चाहिए।
4. जो संपूर्ण विश्व को सुखी करता है। वह उत्तमोत्तम है।

ज्ञान गम्मत 2 के उत्तर

1-45, **2**-36, **3**-7, **4**-24, **5**-36, 6-68, **7**-8, **8**-158, **9**-9, **10**-72..

यहाँ दिए सवाल के जवाब लिखें ।

1. दूसरे परमाधामी का नाम क्या है ।
2. धर्म के साधन कितने हैं ? कौन से ?
3. देव-देवी की पूजा से कौन सा कर्म बंधता है ?
4. तत्त्व कितने हैं ?
5. साधु-साध्वी के प्रति क्या रखना ?

बच्चों को समाचार ...

प्रिय बच्चों !!!

* मुनिराज श्री प्रसिद्धरत्नविजयजी म.सा. द्वारा आप सभी के लिए 'द्विदल' नामक पुस्तक संपादित की गई... यह पुस्तक इंग्लिश, हिन्दी, गुजराती तीनों भाषा में है। अवश्य पढ़ें ।
* मधुकर संस्कार ज्ञानायतन के 15 सदस्यों ने बारह व्रत धारण किये उनकी अनुमोदना अवश्य करें।

ज्योतिष कुंडली-बाधक ग्रह बाधक राशि, योगकारक ग्रह

(श्री दिनेश जैन कबदी, अहमदाबाद)

ज्योतिष एक विज्ञान है कोई चमत्कारिक विद्या नहीं, ज्योतिष कुण्डली में कुल बारह भाव होते हैं। यह बारह भाव जीवन के विशिष्ट पहलुओं को अपने आप में समेटे हुए हैं और इन भावों के अध्ययन से मनुष्य का जीवन विवेचित किया जा सकता है। प्रत्येक भाव अपने आप में स्वतंत्र होते हुए भी एक - दूसरे से संबंध रखते हैं। जन्मकुण्डली के अध्ययन में 'बाधक ग्रह' के बारे में विवरण दे रहा हूँ। साथ में विभिन्न लग्नों के योगकारक अयोगकारक ग्रह की जानकारी भी दे रहा हूँ।

जन्मकुंडली के अध्ययन में बाधक ग्रहों का अध्ययन भी बहुत विचारणीय है। बाधक ग्रह भले ही इस राशि के लिये कारक हों, परन्तु फिर भी वह ग्रह कार्य को निर्विघ्न नहीं होने देते। बाधक ग्रह अपनी दशा-उपदशा में जिस भाव में बैठा होता है, उस भाव को हानि पहुँचाता है। बाधक ग्रहों की भांति बाधक राशियाँ भी होती हैं। जिस भाव की राशि बाधक होती है, उस भाव के फल में बाधा लाती है। उदाहरणार्थ जिस जातक का जन्म लग्न मेष है, उनके लिये एकादश भाव (एकादश भाव में कुम्भ राशि है) न्यून फलदायक होगा तथा कुम्भ राशि का स्वामी शनि बाधक ग्रह होने से न्यून फलदायक ही होगा। किस लग्न के लिये कौनसी राशि बाधक है, कौन सा ग्रह बाधक है और अशुभ फल कौनसी दशा में देंगे की पूरी जानकारी दे रहा हूँ और बारह लग्नों के योगकारक, अयोगकारक ग्रह की जानकारी भी दे रहा हूँ।

जन्म लग्न राशि	बाधक राशि	बाधक ग्रह	अशुभ फल की दशा
1. मेष, सिंह, धनु	कुम्भ	शनि	शनि दशा में
2. वृषभ, कन्या, मकर	वृश्चिक	मंगल	मंगल दशा में
3. मिथुन, तुला, कुम्भ	सिंह	सूर्य	सूर्य दशा में
4. कर्क, वृश्चिक, मकर	वृषभ	शुक्र	शुक्र दशा में

सामान्यतः सब सोचते हैं कि शुक्र दशा जीवन में बहुत खुशियाँ, सुख-समृद्धी लाती है। यदि यही शुक्र अगर बाधक ग्रह हो जाये तो शुक्र दशा में जो फल मिलना चाहिये उसमें बाधायें आ जाती हैं। बाधक ग्रह, राशि के अलावा विभिन्न लग्नों के लिये योगकारक ग्रह और अयोगकारक ग्रह भी होते हैं। योगकारक ग्रह शुभफल देते हैं तो अयोगकारक ग्रह अशुभ फल, उनकी दशा में देते हैं।

जन्म लग्न राशि	योगकारक ग्रह	अयोगकारक (अकारक ग्रह)
1. मेष	गुरु, सूर्य, मंगल	शुक्र, बुध, शनि
2. वृषभ	शनि,बुध, सूर्य, मंगल	चन्द्र, गुरु
3. मिथुन	शुक्र	मंगल, गुरु, सूर्य
4. कर्क	मंगल, गुरु	बुध, शुक्र
5. सिंह	सूर्य, मंगल	बुध, शुक्र
6. कन्या	शनि	मंगल, गुरु, चन्द्र
7. तुला	शनि, बुध, शुक्र	सूर्य, चन्द्र, गुरु
8. वृश्चिक	चन्द्र, सूर्य, गुरु	शुक्र, बुध
9. धनु	सूर्य, मंगल	बुध, शुक्र, शनि
10. मकर	शुक्र, बुध, शनि	चन्द्र, गुरु, मंगल
11. कुम्भ	शुक्र, सूर्य, मंगल, शनि	चन्द्र, गुरु
12. मीन	मंगल, चन्द्र	सूर्य, बुध, शुक्र, शनि

प्रत्येक जन्मलग्न कुंडली के योगकारक, अयोगकारक ग्रह अपनी दशा, अन्तरदशा में अपने से संबंधित शुभ-अशुभ फल देते हैं।

– इस लेख से संबंधित संदेह हो तो पाठक मेरे मो. 9033745679 पर पूछ सकते हैं।

प्यारा है जयंत सेनधाम

(श्री अनोखीलाल छाजेड़)

प्यारा है जयंतसेनधाम, नित उठकर करो प्रणाम
मुनि सुव्रतस्वामी का, यहां आकर जपलो नाम.......... प्यारा है जयंतसेनधाम
यात्रा इसकी कर लो, पूजा इसकी करलो
ये शांतिदाता है, महिमा गाओ इसकी,
ये प्रभु का है दरबार, यहां मिलता है आराम............. प्यारा है जयंतसेनधाम
जंगल में मंगल है, यहां खुशियां पल-पल है
नील गगन के आंगन में, खड़ा मोक्ष महल है
यहां आनंद मिलता है, यहां करलो विश्राम............. प्यारा है जयंतसेनधाम
यहां चेतना चेतन की, मिलती हरदम रहती
चलो मोक्ष महल में, आतम कहती रहती
अनोखी चीज है, अमृत का जाम है..... .... प्यारा है जयंतसेनधाम

(संकलन-सुरेन्द्र गंग, रतलाम)

जीवन कैसा हो

(डॉ. श्री प्रदीप संघवी)

पूज्य राष्ट्रसंत जैनाचार्यश्री जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. द्वारा रचित पुस्तक जीवन ऐसा हो में बताया है कि सभी ओर यह जिज्ञासा है कि जीवन कैसा हो ? जीवन कैसा हो ? जीवन कैसा हो ? इसके लिए प्रस्तुत की गई है 'जीवन ऐसा हो' । आइए जाने आचार्यश्री के विचार -

1. न्यायपूर्वक धनार्जन - आत्म कल्याण को भूलकर जो केवल लक्ष्मी की आराधना में ही लगे रहते हैं वे न्याय-अन्याय की परवाह नहीं करते हैं। इसके विपरीत आत्म कल्याण जिसका लक्ष्य होता है वे न्यायपूर्वक ही धनार्जन करते हैं। सभी को यथाशक्ति यथासम्भव न्यायपूर्वक ही धनोपार्जन करने का सभी गृहस्थों को प्रयास करना चाहिए।

2. माता-पिता की भक्ति - माता-पिता का संतान पर असीम उपकार है। उनके इस उपकारों का बदला अरबों, खरबों वर्षों तक उनकी सेवा करके भी चुकाया नहीं जा सकता है। गौरव की दृष्टि से दस उपाध्यायों के बराबर एक आचार्य, सौ आचार्यों के बराबर एक पिता और हजारों पिताओं के बराबर एक माता होती है। अतः माता-पिता को प्रसन्न रखने के लिए पुत्र में कुछ विशेष गुण जैसे तीन बार दिन में प्रणाम करना, किसी की निन्दा नहीं सुनना आदि प्रमुख गुण विकसित करना चाहिए।

3. अपव्यय का संतुलन- उतने ही पाँव फैलाने चाहिए जितनी लम्बी चादर हो अन्यथा पाँव खुले रहेंगे कष्ट भी उठाना पड़ेंगे। इसी प्रकार आय से अधिक व्यय करने वाले अविवेकी को भी कष्ट उठाना पड़ता है। कहने का आशय यह है कि सुख-संतोषमय जीवन बिताने के लिए आय - व्यय का संतुलन रखना चाहिए।

4. नियमित भोजन- धार्मिक दृष्टि से रात्रि भोजन का निषेध किया है। सूर्य के अस्त होने पर जल रूधिर और अन्न मांस के समान हो जाता है। अनियमित भोजन से रोग पैदा हो जाते हैं। नियमित भोजन के लिए सुपाच्य आहार ग्रहण करना चाहिए। सबसे महत्वपूर्ण नियम यह है कि भोजन करते समय मन शान्त रहे।

5. आतिथ्य- अतिथि का यथा योग्य सत्कार करना उसकी सेवा करना उसके लिए आवश्यक सामग्री की व्यवस्था करना आतिथ्य है। साधु, मुनि, भिक्षुक आदि सब अतिथि में समा जाते हैं। अतिथि वह है जिसका आचरण उत्तम है। जिसका आचरण श्रेष्ठ नहीं उसका आतिथ्य सत्कार नहीं किया जाता है।

6. व्रतधारी ज्ञानी की पूजा- इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र कोई दूसरी वस्तु नहीं है ज्ञान के बिना मुक्ति नहीं है। ज्ञान की आराधना करने से आत्मा अज्ञान को नष्ट करती है और इसी से आत्मा का आत्मत्व प्रकट हो कर मुक्ति सुलभ हो जाती है। सदा व्रतधारी ज्ञानी की उपासना करना चाहिए। उनके उपकारों का सदा स्मरण करना चाहिए। उन्हें प्रणाम करें। विनम्रता से बात करें। आदरपूर्वक आवश्यक वस्तुएं समर्पित करें।

-क्रमशः

मन-बुद्धि और आत्मा

(कटारिया श्री अशोक कुमार जैन, झाबुआ)

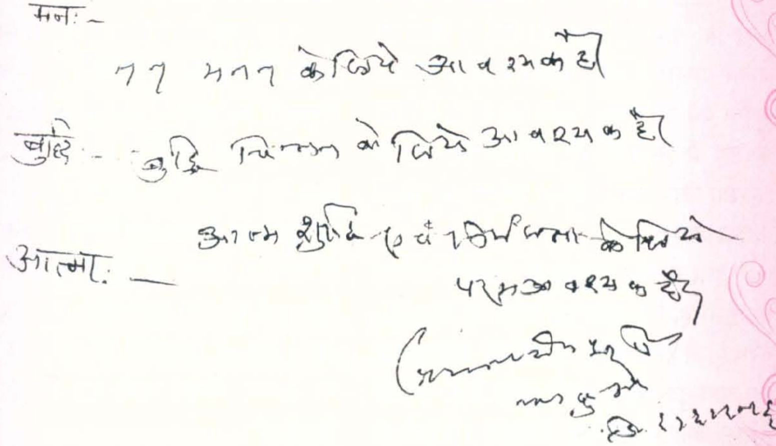
मनः - मनन के लिये आवश्यक है।
बुद्धि - बुद्धि चिन्तन के लिये आवश्यक है।
आत्मा: - आत्म शुद्धि एवं निर्मलता के लिये परम आवश्यक है।

इस संसार में सुखे रेगिस्तान में हरियाली उत्पन्न करने वाले वैज्ञानिक जीवित हैं। अनुपयोगी को उपयोगी अर्थात फटे हुए दूध में से मावा का निर्माण करने वाले हलवाई मौजूद हैं। खदान से खनन करके निकाले गए बेडौल पत्थर में से नयनरम्य प्रतिमा बनाने वाले शिल्पकार मौजूद हैं। आड़े टेढ़े कांठ के ठूंठ में से आकर्षक फर्नीचर बनाने वाले कारीगर यहाँ निवासरत हैं।

इसी तर्ज पर इस असार संसार में से सारभूत धर्म को ग्रहण कर अपनी आत्मा को परमात्मा बनाने वाली, पुण्यशाली, भाग्यशाली आत्माएँ भी यहाँ मौजूद हैं। कषायों के आक्रमण को निष्फल बनाकर सद्गति में ही रहने वाले धर्मात्मा भी इस संसार में कम नहीं हैं।

उपरोक्त सारभूत तथ्यों को ध्यान में रख दिनांक 6.6.2016 को झाबुआ में विराजित पूज्य गुरुदेव के समक्ष मैंने शीर्षक में अंकित शब्दों की परिभाषा उत्सुकतावश ज्ञात करना चाही तो गुरुदेव श्री जयन्तसेनसूरिश्वरजी म.सा. ने लिखित रूप से समाधान कर संतुष्ट किया जो अविकल रूप से निम्नानुसार है-

मन – मनन के लिये आवश्यक है।

बुद्धि – चिन्तन के लिये आवश्यक है।

आत्मा–आत्मशुद्धि एवं निर्मलता के लिए परम आवश्यक है।

अपने जीवन में शासकीय सेवा में 42 वर्ष से अधिक का समय व्यतीत किया जिसमें 36 आय.ए.एस. अधिकारियों के अधिनस्थ शासकीय कार्य सम्पादित किया। पूज्य गुरुदेव का सान्निध्य सन् 1957 से रानापुर से प्रारंभ होकर वर्तमान में निरन्तर है। शीर्षक के अनुरूप एक घटना का स्मरण हो आया जो एक संक्षिप्त कहानी के रूप में निम्नवत प्रस्तुत है।

जिले में पदस्थ एक श्री एस.के. शर्मा आय.ए.एस. अधिकारी अपनी ईमानदार छवि के कारण दूर-दराज के क्षेत्र में प्रख्यात थे। नियमित रूप से जिले में भ्रमण कर जनता की समस्याओं को हल करते थे। एक दिन

प्रातः 9 बजे भ्रमण पर जाने को प्रस्थान कर ही रहे थे कि गेट के बाहर एक व्यक्ति आया एवं सुरक्षागार्ड से कहने लगा कि कलेक्टर साहब से कहो कि मामाजी आए हैं। गार्ड ने वैसा ही जाकर बोला। कलेक्टर साहब ने अन्य कार्यरत व्यक्ति को यह कहकर भेजा कि बंगले में गेस्ट के रूप में मामाजी को सुविधाजनक ढंग से ठहराया जाए एवं समुचित प्रबन्ध-भोजनादि कराया जाये।

इधर कलेक्टर साहब की धर्मपत्नी को यह आभास रहा कि आगुन्तक व्यक्ति कलेक्टर सा. के मामाजी हैं। कलेक्टर सा. को यह आभास रहा कि आगन्तुक व्यक्ति उनकी धर्मपत्नी के मामाजी हैं। इस प्रकार मामाजी सा. ने गेस्ट रूम में रहते हुए पाँच दिवस व्यतीत किए किन्तु उनके समक्ष भेंट करने हेतु कोई भी नहीं आया। आखिरकार, मामाजी एक दिन बंगला छोड़कर कलेक्टोरेट आने-जाने लगे एवं कलेक्टर कार्यालय के स्टेनो, अधीक्षक, रीडर आदि अधिनस्थ स्टॉफ से मेलजोल बढ़ाकर प्रतिदिन कार्यालय में समय व्यतीत करने लगे। कार्यालय स्टॉफ से व्यवहार कुशलता बढ़ाकर इतना प्रभाव बढ़ाया कि कोई भी आगन्तुक व्यक्ति मामाजी से प्रत्यक्ष सम्पर्क किए बिना अथवा उनसे अनुमति लिए बगैर कलेक्टर सा. से उनके चेम्बर में प्रवेश नहीं कर सकता था। चतुर्थ श्रेणी से लेकर ऊपर तक के कर्मचारी/अधिकारी श्री मामाजी के नाम की दुहाई देने लगे। इधर मामाजी ने बगैर भेंट पूजा के किसी भी व्यक्ति के जाने पर अघोषित प्रतिबन्ध लागू करवा दिया।

एक दिन की घटना है। कलेक्टर सा. से मिलने हेतु उनका एक मित्र कार्यालय आया जो सम्भवतः उनका क्लासमेट रहा था। भेंट करने हेतु जमादार को पर्ची थमाई। जमादार ने कहा पहले आप मामाजी से सम्पर्क करें। पश्चात में वे समय तय करवाएंगे।

आगन्तुक मित्र ने वैसा ही किया। समय तय कर भेंट की गई। मित्र ने कलेक्टर सा. से कहा कि मैं तुम्हारी ईमानदारी के चर्चे सुनकर मिलने आया था किन्तु बाहर तुम्हारे जो मामाजी बैठे हुए हैं वे बिना भेंट पूजा के किसी को भी तुमसे मिलने हेतु नहीं आने देते हैं। यह क्या स्थिति है। इतना सुनते ही कलेक्टर महोदय के पैर के नीचे की जमीन खिसकती हुई नजर आने लगी। तत्काल उन्होंने अपने मित्र को समझाया एवं संध्या को बंगले पर आकर भोजन करने का निमंत्रण देकर बिदाई ली।

बंगले पर पहुँचकर कलेक्टर साहब ने अपनी धर्मपत्नी के समक्ष में बैठाकर मामाजी की अशोभनीय करतूतों से अवगत किया। धर्मपत्नी बोली इसमें मेरी क्या त्रुटि है। मामाजी आपके हैं, सो आप जानो। कलेक्टर सा. को यह जानकर अत्यन्त क्रोध आया एवं आश्चर्य भी हुआ कि आखिर यह मामाजी मेरे भी नहीं हैं, धर्मपत्नी के भी नहीं हैं तो है कौन ? पति-पत्नी दोनों को समक्ष में बैठाया जाकर आगन्तुक मामाजी ने समझाया कि जो कुछ भी घटना घटित हुई है उसका एक मात्र उद्देश्य मन, बुद्धि और आत्मा का सामन्जस्य स्थापित करना था।

प्रिय पाठकगण इस कहानी में मन की भूमिका मामाजी ने निभाई। बुद्धि की भूमिका धर्मपत्नी ने एवं आत्मा की भूमिका कलेक्टर साहब ने। हमें यही प्रेरणा प्राप्त होती है कि अपनी आत्मा की शुद्धि के लिये बुद्धि का सहारा अर्थात निरन्तर संवाद की स्थिति मन के साथ सामन्जस्य स्थापित कर प्रगति के सौपान पर अग्रसर होना चाहिए।

रतलाम नगर में लोकसंत गच्छाधिपतिश्रीमद् विजयजयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. के चातुर्मास अंतर्गत नवकार मंत्र आराधना निमित्त प्राप्त सहायता राशि

क्र.	नाम/पता	सहायता राशि	रसीद क्र.
1.	श्री कांतिलालजी हंजारीमलजी रांका, इंदौर	500/-	1501
2.	श्री दीपककुमार कांतिलालजी जैन, गुन्टूर	500/-	1502
3.	श्री कैलाशचंद्रजी धारीवाल, राजगढ़	100/-	1503
4.	श्रीमती विजयाजी पारख, बड़वाह	200/-	1504
5.	स्व.श्री यशवंतजी लोढ़ा एवं स्व. श्रीमती पुष्पादेवी लोढ़ा की छठी एवं तृतीय पुण्यतिथि की स्मृति में भेंट। द्वारा पुत्र श्री संदीप कुमारजी लोढ़ा, नीमच	333/-	1505
6.	श्री बाबूलानी टीलचन्दजी स्वरूपचंदजी दोशी, वैराग्य बेन नवीन भाई, शारदा बेन बाबूलालजी, मुक्ष, चीनुभाई इढ़ाटा, थराद (आराधना निमित्त)	200/-	1506
7.	श्रीमती कांता माणकचंदजी हरण, वैभवनगर, राजगढ़	200/-	1508
8.	श्रीमती कांता कांतिलालजी रांका, अंजड़	200/-	1509
9.	श्रीमती सुशीला रमणलालजी मुथा, थांदला	500/-	1510
10.	श्रीमती कलाबाई जैन, बरडिया	100/-	1512
11.	श्रीमती सुभद्राबेन मोहनलालजी जैन, अहमदाबाद	100/-	1513
12.	श्रीमती सुभद्राजी सकलेचा, इंदौर	100/-	1514
13.	श्री सोहनलालजी पारीख, राजेन्द्र नगर, रतलाम	100/-	1515
14.	श्री रमेशजी श्री समीरमलजी लुणावत, इंदौर	50/-	1517
15.	श्रीमती निर्मला भंवरलालजी मेहता, बड़वाह	100/-	1518
16.	श्री मुकेशजी राठौर, बड़वाह	100/-	1521
17.	श्री यशवंतजी भण्डारी, झाबुआ	100/-	1522
18.	श्री राजेश कुमारजी मण्डलेचा, लाबरिया	200/-	1523
19.	श्रीमती मानकुंवरबाई जैन, इंदौर	100/-	1524
20.	श्रीमती मांगुबाई ललवानी, बखतगढ़	250/-	1525
21.	श्री नाथुलालजी श्री शैतानमलजी बाफना, राजगढ़	250/-	1526
22.	श्री पारसमणि गार्डन C/o श्री पारसमलजी शैतानमलजी सियाल भाटपचलाना	300/-	1529
23.	श्री प्रकाशचंदजी डांगी, डबलचौकी	200/-	1533
24.	श्री एस.एम.जी. संघवी, इंदौर	200/-	1534

क्र.	नाम/पता	सहायता राशि	रसीद क्र.
25.	श्रीमती रसिलाबेन वाघजीभाई डायालालजी वोहरा (मुंबई), थराद	300/-	1535
26.	श्री जिनेन्द्रकुमारजी कस्तूरचंदजी बठिया (टाण्डा वाले) विकास मेडिकोज, इंदौर	500/-	1537
27.	श्रीमती मनोरमाजी रांका, रतलाम	100/-	1538
28.	श्री सुरेशजी शीतल, जोबट	200/-	1540
29.	श्रीमती हर्षाजी नांदेचा, खाचरौद	300/-	1541
30.	श्रीमती प्रेमलताजी मेहता	100/-	1542
31.	श्रीमान् प्रकाशचंजी संजयकुमारजी सियाल	100/-	1543
32.	श्रीमती सरलाबेन जयंतीलालजी भण्डारी, गूंन्टूर	500/-	1544
33.	श्रीमती हंसाबेन डोसी, नागपुर	100/-	1548
34.	श्रीमती गुणमाला मनोहरलालजी नाहर, उज्जैन	200/-	1549
35.	श्री संतोषजी मेहता, खाचरौद	100/-	1550
36.	श्रीमती राजकुमारी मेहता, खाचरौद	251/-	1551
37.	श्रीमती शारदाबेन शिरिषभाई, अहमदाबाद	400/-	1552
38.	श्रीमती विमलाजी सकलेचा, नागदा जं.	100/-	1556
39.	श्री वोहरा रमेशकुमारजी जयंतीलालजी कांदीवली, सांईनगर, मुंबई	200/-	1561
40.	श्रीमती पुष्पादेवी नगीनचन्दजी सकलेचा, जावरा	100/-	1563
41.	श्रीमती मोहनबेन चण्डालिया (धामन्दावाले) इंदौर	101/-	1566
42.	श्री रमेशचन्द राहुलकुमारजी श्रीश्रीमाल 386, कालानी नगर, इंदौर	100/-	1568
43.	श्री मांगीलालजी नरेन्द्रकुमारजी राठौर 232, अपनी नगर, इंदौर	100/-	1569
44.	श्री अमृतलालजी मामा, 262, कालानी नगर, इंदौर	50/-	1570
45.	श्री अशोककुमारजी मांगीलालजी गोस्वामी, रत्तागढ़खेड़ा, जि.रतलाम	200/-	1575
46.	श्री शांतिलालजी बापुलालजी मारू, मंदसौर	200/-	1576
47.	श्री अशोकजी जैन, आम्बा	100/-	1578
48.	श्रीमती ओटीबाई कांतिलालजी, कराड़	200/-	101
49.	श्री सज्जनलालजी बसंतीलालजी कटारिया, रानापुर जि. झाबुआ	300/-	103
50.	श्री अशोककुमारजी शांतिलालजी कटारिया रानापुर, जि. झाबुआ	100/-	104
51.	श्री मुक्तिमलजी टीलचंदजी, मुंबई	100/-	106
52.	संघवीश्री सुरेशचन्द्रजी बापूलालजी मेहता, खाचरौद, जि. उज्जैन	500/-	108
53.	श्री मोहनलालजी सकलेचा, बड़ावदा, जि. रतलाम	200/-	109
54.	श्री मनोहरलालजी चम्पालालजी राठौर, (झकनावदवाला) रायपुरिया	200/-	110
55.	श्रीमती दाखाबाई महेन्द्रसिंह जैन, मेघनगर	500/-	112

क्र.	नाम/पता	सहायता राशि	रसीद क्र.
56.	श्री मनोहरलालजी कावड़िया की स्मृति में भेंट, मेघनगर	500/-	113
57.	श्री धरू स्वरूपचंदजी देवचन्द्रजी, पेपराल	1100/-	115
58.	श्री बाबुलाल कोकिलाजी मधु भारतीय, खाचरौद	500/-	116
59.	श्रीमती प्रभाबेन सेवंतिलालजी दोशी, अहमदाबाद	100/-	119
60.	श्रीमती धुडीबेन प्रवीणचन्द्रजी वोहरा, पालनपुर	100/-	120
61.	श्री कांतिलालजी गेंदालालजी भंड़ारी, रतलाम	300/-	123
62.	श्री सुमित कुमारजी चौपड़ा, द एड्रेस टाउनशिप, इंदौर	200/-	124
63.	श्री शांतिलालजी दसेड़ा, जावरा	200/-	125
64.	श्रीमती सुन्दरबाई हीरालालजी भंडारी, कालुखेड़ा, जि. रतलाम	200/-	126
65.	श्री फतेहचंदजी घेवरलालजी नांदेचा, खाचरौद	300/-	128
66.	श्री चांदमलजी चंपालालजी सेठ, रानापुर	500/-	129
67.	श्री दाडमचंदजी बागरेचा, इंदौर	500/-	131
68.	श्री वर्धमानजी सागरमलजी भंडारी, 81 भगतसिंह मार्ग, खाचरौद, उज्जैन	200/-	132
69.	श्री शांतिलालजी विनोद कुमारजी कोठारी, खानपुरा, मंदसौर	200/-	133
70.	श्री विनयकुमार उमेदमलजी बाफना, सदर बाजार, टाण्डा, जि. धार	500/-	135
71.	श्री सुरेशचंदजी रांका, ग्राम भरावदा (लेटगांव)	200/-	138
72.	श्रीमती शांताबाई रतनलाल गिरिया (भाटपचलानावाला) बड़नगर	500/-	140
73.	श्री शांतिलालजी केसरीमलजी डूंगरवाल (संदलावाले), बदनावर	100/-	142
74.	श्रीमती हंसाबेन रमेशजी नाहर, रानापुर, जि. झाबुआ	500/-	144
75.	श्रीमती चांदबाई चांदमलजी तांतेड़, धार	100/-	145
76.	श्री बाबूलालजी धाडीवाल, नागेश्वर उन्हेल, जि. झालावाड़ (राज.)	100/-	146
77.	श्री अशोककुमारजी भूरमलजी जैन, सियाणा	200/-	147
78.	श्रीमती शकुन्तला धूलचन्दजी बाफना, राजगढ़, जि. धार	400/-	152
79.	श्री मांगीलालजी सर्राफ, राजगढ़, जि. धार	250/-	153
80.	श्री भेरूलालजी सौभागमलजी भंडारी, राजगढ़,जि. धार	300/-	154
81.	श्रीमती मनोरमा भेरूलाल भण्डारी, राजगढ़, जि. धार	100/-	155
82.	श्रीमती प्रमिला सौभागमलजी भण्डारी, राजगढ़, जि. धार	100/-	156
83.	श्री दिलीप कुमार राजमलजी भण्डारी, राजगढ़, जि. धार	200/-	157
84.	श्रीमती लक्ष्मीबाई राजमलजी भण्डारी, राजगढ़, जि. धार	100/-	158
85.	श्री दिनेशकुमार शांतिलालजी डोसी, बरमण्डल, जि. धार	200/-	159
86.	श्री ज्ञानचंद संतोषकुमारजी बागरेचा, नवकार श्रीपान कार्नर बस स्टेण्ड, खवासा	108/-	161

क्र.	नाम/पता	सहायता राशि	रसीद क्र.
87.	श्री कांतिलालजी फतेहचन्दजी वागरेचा, राजवाड़ा, खवासा	500/-	162
88.	श्रीमती लीलाबेन बछराजी चौरडिया, जावरा	200/-	164
89.	श्री विमल कुमारजी डूंगरवाल, खाचरौद	250/-	165
90.	श्री हीरालालजी देवेन्द्रकुमारजी चपरोत, मंदसौर	500/-	170
91.	श्री प्रकाशजी सुराणा (अमलावाला) सौ. का. रीना विनय सुराणा के मासक्षमण तपस्या के उपलक्ष्य में भेंट	500/-	176
92.	श्री मिश्रीलालजी वर्दीचंदजी पारख, महु-नीमच रोड़, कचनारा फ्लेग	200/-	178
93.	श्रीमती कलाबेन वोहरा, भाटपचलाना	101/-	180
94.	श्री बाबूलालजी मिश्रीमलजी चौपड़ा, नयाबाजार, रिंगनोद तह. जावरा, जि. रतलाम	100/-	185
95.	श्री भेरूलालजी नीरज कुमारजी सुराणा, इंदौर	150/-	187
96.	श्री विकासजी जैन, जावरा	150/-	188
97.	श्री माणकलालजी कन्हैयालालजी छाजेड़, महिदपुर	100/-	192
98.	श्री सुश्रावक आराधक हस्ते श्री सचिनजी, जावरा	150/-	198
99.	श्रीमती निर्मलाजी संघवी, न्यू संघवी मेडिकल, भाटपचलाना	200/-	199
100.	श्री चिरागजी भंसाली, अभय कुमारजी भंसाली, रिंगनोद	100/-	200
101.	श्रीमती शशीप्रभा प्रभात कुमार जैन, कुक्षी वाले, इंदौर	100/-	602
102.	श्रीमती अंगुरबाला खाबीया, दसई	100/-	603
103.	श्री दिनेशचन्द्र वरदीचन्दजी- सेक्रेटी, बाग	100/-	604
104.	श्री महावीरजी चौरड़ीया, बदनावर	100/-	605
105.	श्रीमती धनसुखबाला डोसी, बदनावर	100/-	606
106.	श्री यशवंत जैन, भास्कर मेडिकल, हिरणमगरी, सेक्टर 14 उदयपुर (राजस्थान)	100/-	609
107.	श्री सुपार्श्व हार्डवेयर प्रिन्ड C/o प्रमोद कुमार वागरेचा, खवासा	200/-	610
108.	श्री जिनेन्द्र कुमारजी इन्दरमलजी पोरवाल, गुरु राजेन्द्र कॉलोनी राजगढ़	301/-	611
109.	श्री रितेश कुमार प्रकाशचंदजी संघवी, नयापुरा, उज्जैन	100/-	613
110.	श्री भूपेन्द्र कुमारजी संघवी, इंदौर	100/-	614
111.	श्री महिला परिषद, पिपलौदा	1100/-	617
112.	गुप्त दान	100/-	618
113.	श्री प्रभात कुमार राजमलजी जैन (कुक्षी वाले), इंदौर	100/-	601

ગુર્જર જૈન જયોત

સંપર્ક-સંપાદક : **સુરેશ એચ. સંઘવી**
૧૦૬, શિવશક્તિ, એ.બી.સી. ટાવર, દેવ ચકલા,
જૈન દેરાસર સામે, નડીઆદ. જી. ખેડા.
મો. ૯૭૨૪૫ ૭૧૦૭૯

શ્રી સકળ સંઘને નૂતન વર્ષાભિનંદન

જીવન વ્યવહારોની સમરસતાના તાણાવાણાથી ગુંથાયેલા હોવા છતાં શ્રી જૈન સંઘોના વિવિધ સ્થળોએ વસવાટ કરતા શ્રાવક-શ્રાવિકાઓ મોટી સંખ્યામાં જોડાઈ તપ-આરાધના સંપન્ન કરી રહ્યા છે તેના પરથી નિશ્ચિતપણે કહી શકાય કે ધર્મ સંસ્કૃતિએ શાસનનો મહિમા અને પ્રભાવ પ્રસ્થાપિત કર્યો છે.

કર્મસતાએ કોઈની પણ કસોટી કરવામાં કસર છોડી નથી તેમ છતાં પણ તેની સામે શાસન અને ધર્મીજનોનો પુરૂષાર્થ તેમજ દેવ, ગુરૂ, ધર્મ પ્રત્યે રહેલી શ્રધ્ધાએ અપૂર્વ સુખશાતા બક્ષી છે.

ધર્મમય વાતાવરણ શ્રી સકળ સંઘને નવી સદીના બૌધ્ધિક સર્વોપરિતાના યુગમાં ધર્મ આરાધના ધ્વારા આત્મશુધ્ધિનું અનુપમ સોપાન કરવા સાથે પુણ્યનું ભાથું બાંધવા શાસન-સમાજ અને ગચ્છ માટે સક્ષમ બનવાની પ્રેરણા આપે છે. ભૌતિક વિકાસ આધુનિકતા માટે અનિવાર્ય છે તેમ માનવ સંસ્કૃતિનો વિકાસ પણ અનિવાર્ય છે. સ્વસ્થ સંસ્કારી ધર્મીજનો શાસન-સમાજની આધારશીલા છે.

જે દિલના દેવાલયને અજવાળે... અંતરના આકાશને ઉઘાડે... પ્રાણોને પ્રેમથી પલાળે અને ધર્મ આરાધના ધ્વારા દેહના દીપને ઉજમાળે એનું નામ દિવાળી સહુ જીવો સાથે મન જો મળે... વેરની ગાંઠો ગળે અને દિ'જો વળે તોજ સાર્થક બને દિવાળી.

દર વરસે દીપ સે દીપ જલે નો સંદેશો લઈ આવે છે આ દિવાળીનું પર્વ અને સ્વસ્થ સંપન્ન સંસ્કાર સાથે ધર્મ આરાધના ધ્વારા વિશ્વમાં દિવ્ય પ્રકાશ આપવાનું આહવાન કરે છે નવા વર્ષની સુપ્રભાત... માટે જીનેશ્વર પરમાત્માની અસીમ કૃપાથી.. દાદા ગુરૂદેવ શ્રીમદ્ વિજય રાજેન્દ્ર સૂરિશ્વરજી મ.સા. ના દિવ્ય આશિષ અને વર્તમાન લોકસંત ગુરૂદેવ શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. ના શુભાશુભ આશિર્વાદ મેળવી સંવત ૨૦૭૩ ના કારતક સુદ-૧ નવા વરસની સુપ્રભાતથી ધર્મઉધ્ધમમાં જોડાઈ જીવન સફરની શરૂઆત કરી આવતા વરસની દિવાળીને પણ સફળ બનાવીએ તેવી અંતઃકરણ પૂર્વકની શુભેચ્છા સાથે સકળ સંઘને નૂતન વર્ષાભિદનંદન

લિ. "ગુર્જર જૈન જયોત" પરિવાર-સુરેશ સંઘવી

લોકસંત

લોકનો મતલબ છે કે જેમને લોકોના હૃદયમાં સ્થાન પ્રાપ્ત કર્યું છે.

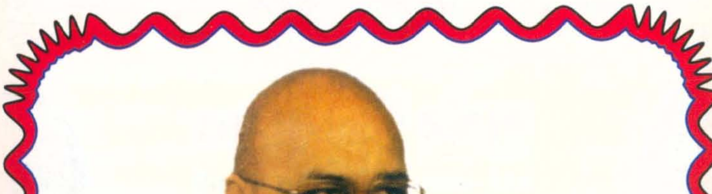

રતલામ ચાતુર્માસ આયોજક અને વિધાયક શ્રી ચેતન્યજી કાશ્યપના સ્વાગત હેઠળ ભય્યાજી જોશી, સહસ્ત્રબુધ્ધેજી, સાંસદ, મ.પ્ર. ના મોટી સંખ્યામાં વિધાયક, મહાપોર, વિગેરે દ્વારા સંઘ રાષ્ટ્રીય અદયક્ષ શ્રી વાઘજીભાઈ વોરા, સંઘ રાષ્ટ્રીય મહામંત્રી શ્રી સુરેન્દ્રજી લોઢા તેમજ હજ્જારો ભકતોની ઉપસ્થિતિમાં જયંતસેનધામ રતલામનગરના એક સમારોહમાં પૂજ્યશ્રીને લોકસંતની પદવીથી અલંકૃત કરાયા હતા ત્યારે સમસ્ત સમાજમાં હર્ષની હેલી વરસી ગઈ હતી અને આનંદની અમી વર્ષા વરસી ગઈ હતી.

દુઃખીજનોને દુઃખ દળવાની ધર્મ પ્રેરણા આપી દુઃખમાં પ્રસન્ન રહેવાનો દિલાસાનો દીવો ચેતવનાર છત્રીસે કોમના જન-જનમાં પ્રતિષ્ઠા સ્થાપિત કરનાર લાખો લોકોના હૃદય સમ્રાટ, યુગ પ્રભાવક, લોકસંત સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમ પૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. ને લોકસંત ની પદવી દ્વારા અલંકૃત કરાયા હતા તે બદલ ''ગુર્જર જૈન જ્યોત'' પરિવાર અંતઃ કરણ પૂર્વક કોટી કોટી વંદના કરે છે.

કાશ્યપ પરિવારની પ્રબળ ભાવનાને સાકાર કરતું પૂજ્યશ્રી સપરિવારનું ૨૦૧૬ ના વર્ષનું ચાતુર્માસ દીપી ઉઠ્યું

ચાતુર્માસ પ્રવેશ થી જ જયંતસેનધામ રતલામ નગરમાં ઉભરાયો માનવ મહેરામણ.. પૂજ્યશ્રીના પાવન પગલે રતલામનગર ગુંજી ઉઠ્યું.

દાદા સ્વ. કનૈયાલાલજી. કાશ્યપ
દાદી સ્વ. શ્રીમતી ઝમકુબાઈ કાશ્યપ

પિતાશ્રી સ્વ. અશોકકુમારજી કાશ્યપ
માતૃશ્રી તેજકુંવરબાઈ કાશ્યપ

શ્રી ચેતન્યકુમાર કાશ્યપ-વિધાયક
શ્રીમતિ નીતાબેન ચેતન્યકુમાર કાશ્યપ

શ્રી સિદ્ધાર્થ ચેતન્યકુમાર કાશ્યપ
શ્રીમતિ પૂર્વી સિદ્ધાર્થ કાશ્યપ

શ્રી શ્રવણ ચેતન્યકુમાર કાશ્યપ
શ્રીમતિ અમી શ્રવણ કાશ્યપ

સમીક્ષા કાશ્યપ

સારાંશ કાશ્યપ

તપોનિષ્ઠ પરમપૂજ્ય પ્રાતઃ સ્મરણીય દાદા ગુરૂદેવ શ્રીમદ્ વિજય રાજેન્દ્ર સૂરિશ્વરજી મ.સા. ના છઠ્ઠા આધ્યાત્મિક વારસ જે વાત્સલ્ય મૂર્તિના સાનિધ્યમાં શંકાઓ

શમે છે, દ્વિધાઓ દુર થાય છે. આઘાત અદૃશ્ય થાય છે. મન શાંતિનો અનુભવ કરે છે, અને નિર્વ્યાજ વાત્સલ્યની અપાર વર્ષામાં બાળકો, યુવાનો, વૃધ્ધો, ભણેલા કે અભણ, દેશના કે વિદેશના સૌ કોઈ ધન્ય બની જાય છે. જેઓના ૬૨ વર્ષ દીક્ષા પર્યાય સમય દરમ્યાન કઠીન પુરૂષાર્થથી એક વિરાટ તંદુરસ્ત સમાજ ખડો થયો છે.

શાસન-સમાજ-ગચ્છ અને માનવતાના કાર્યોથી લઈને અબોલ પશુઓ સુધી જેમની કરૂણા વહી રહી છે. તેવા વિશ્વની વિરલ સંત વિભૂતિઓમાં અગ્રસ્થાને નામ અંકિત કરનાર "બીજાના ભલામાં આપણું જ ભલું" ના સુત્રધાર-સમાધાન વૃતિ ધરાવનાર અને લાખો લોકોને ધર્મની હુંફ આપનાર યુગ પ્રભાવક, લોકસંત, સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમ પૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા., વરિષ્ઠ મુનિરાજ શ્રી નિત્યાનંદ વિજયજી મ.સા. તથા હોનહાર તેજસ્વી શિષ્યરત્નો અને પૂજ્ય સાધ્વીજી ભગવંતોનું ચૈત્ર માસમાં સન ૨૦૧૬ ના વર્ષનું શ્રી ચેતન્યજી કાશ્યપ પરિવાર ધ્વારા ચાતુર્માસ રતલામનગરે નક્કી થતાં જ સૌધર્મ બૃહતતપોગચ્છીય શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘના લાખો ભક્તોના મનના મોરલીયા નાચવા લાગ્યા હતા.

શ્રી રતલામ ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘના સાથ સહકારથી શ્રી ચેતન્યજી કાશ્યપ પરિવાર ધ્વારા રતલામનગરના પૂજ્યશ્રીના આ ચાતુર્માસને સુવર્ણ અક્ષરે લેખવા યોગ્ય તડામાર તૈયારીઓ આદરી દેવાઈ હતી.

જૈનોના ચારેય ફીરકાઓમાં આ ચાતુર્માસ ધર્મ ભાવનાથી ગુંજી ઉઠે તે માટે પુણ્યાનુંબંધ પુણ્યનીનો છુટા હાથે સદ્વ્ય કરી કાશ્યપ પરિવારે જયંતસેન ધામને ઈન્દ્રપુરી નગરી જેવું નિર્માણ કરાવી ગુરૂનું ઋણ અદા કરવાની પ્રબળ ભાવના સાર્થક કરવા સાથે સ્વપ્ન સાકાર કર્યું છે. અને પૂજ્યશ્રી સપરિવારનું ૨૦૧૬ ના વર્ષનું રતલામ નગરનું ચાતુર્માસ દીપી ઉઠ્યું છે. પૂજ્યશ્રી સપરિવારના ચાતુર્માસ પ્રવેશથી જ જયંતસેનધામ રતલામનગરમાં માનવ મહેરામણ ઉભરાવા લાગ્યો છે. પૂજ્યશ્રીના પાવન પગલે રતલામ નગરની ધન્યધરા ગુંજી ઉઠી છે.

યુગ પ્રભાવક, લોકસંત સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમપૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા., વરિષ્ઠ મુનિરાજ શ્રી નિત્યાનંદ વિજયજી મ.સા. આદિ મુનિમંડળ તથા પૂજ્ય સાધ્વીજી ભગવંતોનો સંવત ૨૦૭૨ ના અષાઢ સુદ-૬ ને રવિવાર તા. ૧૦-૭-૨૦૧૬ ના રોજ શ્રી ચેતન્યજી કાશ્યપ પરિવાર ધ્વારા જયંતસેન ધામ રતલામનગરે ધામધૂમપૂર્વક ઐતિહાસિક, ભવ્યાતિભવ્ય રજવાડી ચાતુર્માસ પ્રવેશ થયો હતો પુરા રતલામ નગરમાં માનવ મહેરામણનું ઘોડાપુર ઉમટ્યું હતું.

પૂજ્યશ્રી સપરિવારના ચાતુર્માસ અર્થે આ શુભાગમનથી હરખ ઘેલા બની ગયેલા જૈન સંઘો સહિત દરેક કોમના આગેવાનો અને ચાતુર્માસ આયોજક શ્રી ચેતન્યજી કાશ્યપ પરિવાર ધ્વારા પૂજ્યશ્રી આદિઠાણાનું ભવ્યાતિભવ્ય સામૈયું કરાયું હતું.

ચાર માસના વિરાટ કાર્યક્રમો અને પ્રસંગોને દીપાવવા મહેમાનો માટે આવાસ-

નિવાસ અને સવારની નવકારશી અને બન્ને ટાઈમના ભોજનની સુંદર વ્યવસ્થા કરાઈ રહી છે. પૂજ્યશ્રી સપરિવારનું આ ચાતુર્માસ ઐતિહાસિક, યાદગાર અને યશસ્વી બની રહે તેવું સુંદર આયોજન શ્રી ચેતન્યજી કાશ્યપ પરિવાર ધ્વારા ઘડાયું છે. અને આ ચાતુર્માસને અકલ્પનીય સફળતા હાંસલ થઈ છે. ચાતુર્માસ દરમ્યાન રજવાડી પ્રવેસોત્સવ, શ્રધ્ધાપૂર્વક ગુરૂ પૂર્ણિમાની ઉજવણી. ૧૮૦૦ થી અધિક આરાધકોની નવદિવસીય નવકાર મહામંત્રની આરાધના તે દરમ્યાન સ્વતંત્રતા દિવસની ઉજવણી, વિક્રમ સર્જક તપ અનુમોદનાનો વરઘોડો, શ્રી મુનિસુવ્રતસ્વામી ભગવાન જિનાલય અને ગુરૂમંદિરે પ્રતિષ્ઠાંજનશલાક મહામહોત્સવ, પર્યુષણ મહાપર્વની આરાધના, કાશ્યપ પરિવાર ધ્વારા ઉતરાધ્યનસુત્ર વહોરાવાનો કાર્યક્રમ, સંવત્સરી ક્ષમાપના, પૂજ્યશ્રીના દર્શન-વંદનાર્થે જાનાપીઝ ભક્તો સહિત શ્રી સંઘોનું મોટી સંખ્યામાં આવા-ગમન ૫૦ થી વધુ માસક્ષમણ, ૨૫ સિધ્ધિતપ, ૧૦૦ થી અધિક અન્ય તપસ્યા અને ૨૧૬ અઠ્ઠાઈના તપસ્વીઓના બહુમાન વિગેરે કાર્યક્રમો રંગેચંગે સંપન્ન થયા છે. આગામી દિવસોમાં મહાવીર નિર્વાણ દિપાવલી પર્વ તેમજ ગૌતમ સ્વામી કેવળજ્ઞાનની ઉજવણી તેમજ નવાવરસના પર્વ તેમજ ગૌતમસ્વામી કેવળજ્ઞાનની ઉજવણી તેમજ નવા વરસના નવલા દિવસે પૂજ્યશ્રીના મુખકમલ ધ્વારા માંગલિક વિગેરે કાર્યક્રમો સંપન્ન થનાર છે. ધન્ય છે ચાતુર્માસ આયોજક કાશ્યપ પરિવારને..

ચાતુર્માસ આયોજક કાશ્યપ પરિવાર ધ્વારા આયોજિત
જયંતસેન ધામ રતલામ નગરે લોકસંત પૂજયશ્રીની નિશ્રામાં અ.ભા. શ્રી રાજેન્દ્ર જૈન નવયુવક/મહિલા/તરૂણ પરિષદનું રાષ્ટ્રીય અધિવેશન સંપન્ન

યુગ પ્રભાવક, લોકસંત, સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમ પૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા., વરિષ્ઠ મુનિરાજ શ્રી નિત્યાનંદ વિજયજી મ.સા. આદિ મુનિ મંડળ અને સાધ્વીજી મંડળની પાવનકારી નિશ્રામાં ચાતુર્માસ આયોજક કાશ્યપ પરિવાર ધ્વારા આયોજિત જયંતસેનધામ રતલામનગરે અ.ભા. શ્રી રાજેન્દ્ર જૈન નવયુવક પરિષદ/મહિલા/તરૂણ પરિષદનું બે દિવસીય અધિવેશન તા. ૨૪-૨૫ સપ્ટેમ્બર ૨૦૧૬ ના રોજ ઉત્સાહી માહોલ વચ્ચે સંપન્ન થયું હતું.

તા. ૨૪ સપ્ટેમ્બર ૨૦૧૬ ના રોજ આ અધિવેશનના પ્રારંભે પૂજ્ય લોકસંતશ્રી, વરિષ્ઠ મુનિરાજ શ્રી નિત્યાનંદ વિજયજી મ.સા. આદિ મુનિમંડળ અને સાધ્વીજી મંડળની નિશ્રામાં બેન્ડવાજા સાથે વાજતે-ગાજતે પરિષદની સંયુક્ત પ્રભાત ફેરી કાઢવામાં આવી હતી અને મંચ પર સ્થાન ગ્રહણ કરેલ અતિથીઓની ઉપસ્થિતિમાં ધ્વજા રોહણ કાર્યક્રમ સંપન્ન થયો હતો. પરિષદ સ્મારિકા, પુસ્તકદ્ર દલ, જિનેન્દ્ર ચૌબીસા અને પર્યુષણ પાઠ્ય ક્રમનું વિમોચન કરાયું હતું.

ત્રણેય પરિષદના શાખા પ્રતિનિધિઓએ એમના ધ્વારા થયેલા કામોની તથા આગામી આયોજનની જાણકારી આપી હતી. ધાર્મિક, સામાજિક, જનકલ્યાણ, સેવા

પ્રકલ્પ અને જીવદયાક્ષેત્રમાં શ્રેષ્ઠ ત્રણ પુરસ્કારમાં સર્વશ્રેષ્ઠ તરૂણ પરિષદ (શાખા-ડીસા) દ્વિતીય (રાજગઢ), તૃતિય (સુરત) ને પુરસ્કૃત કરવામાં આવ્યા હતા. તે સિવાય ૨૦ અન્ય પરિષદોને પોત પોતાના ક્ષેત્રમાં સેવા સંચાલન માટે પુરસ્કૃત કરવામાં આવ્યા હતા. સામાયિક ક્ષેત્રે સર્વશ્રેષ્ઠ મહિલા પરિષદ પ્રથમ (સુરત) દ્વિતીય (ઉજ્જૈન નમકમંડી શાખા), તૃતિય (અમદાવાદ), શિક્ષાક્ષેત્રમાં (કુશલગઢ), સર્વાધિક ઉપસ્થિતિ (રતલામ) તથા સક્રિય રૂપમાં મહિલા પરિષદ (ખાચરોદ) ને પુરસ્કૃત કરવામાં આવેલ.

સત્ર દરમ્યાન પૂજ્ય લોકસંતશ્રી સાથે પૂજ્ય મુનિરાજ શ્રી ચારિત્ર્યરત્ન વિજયજી અને પૂજ્ય મુનિરાજ શ્રી નિપૂણરત્નવિજયજી મ.સા. એ પણ પરિષદોને આશિર્વચન પ્રદાન કર્યા હતા. તરૂણ પરિષદ માટે રાષ્ટ્રીય સંયોજક સમિતીની પણ રચના કરાઈ હતી જેમાં ગુજરાતમાંથી (પક્ષાલ કોરડીયા), (કરણ મોરખીયા), (કેયુર દોશી), મધ્યપ્રદેશમાંથી (હર્ષ બાફના), (પવન કટારીયા), (આદિત્ય ધોકા), (વૈભવ ગાદિયા), (આદિત્ય ભરવેરા), રાજસ્થાનમાંથી (અવિ મોદી) બીજાપુરથી (કીરણ વાણીગોતા) વિગેરે નામોની ઘોષણા કરાઈ હતી, નિવર્તમાન અધ્યક્ષ અભય બરબોટાએ સહુને વધાઈ આપી હતી.

પૂજ્ય લોકસંતની નિશ્રામાં મંચ પર ઉપસ્થિત અધિવેશન આયોજક, રાજ્ય યોજના અયોગ ઉપાધ્યક્ષ શ્રી ચેતન્યજી કાશ્યપ પરિષદના રાષ્ટ્રીય અધ્યક્ષ શ્રી રમેશભાઈ ધરૂ, પરામર્શદાતા શ્રી શાંતિલાલ રામાણી, શ્રી જે. કે. સંઘવી, ઉપાધ્યક્ષશ્રી ઓ.સી. જૈન, શ્રી રમેશજી ઘાડીવાલ, શ્રી સંઘ મહામંત્રી શ્રી સુરેન્દ્રજી લોઢા, રતલામ સંઘ અધ્યક્ષ ડૉ. ઓ.સી. જૈન, સુરત સંઘના નિતિન કોરડીયા તેમજ રાષ્ટ્રીય અને પ્રદેશના કાર્યકારીણી સભ્યો એ તેમના વિચારો રજૂ કર્યા હતા.

પૂજય લોકસંતશ્રીએ મંગલાચરણ બાદ પરિષદના કાર્યકરોને સંબોધી સદ્સ્યતા અભિયાનનો પ્રારંભ કરી અધિક થી અધિક સદસ્યો બનાવે અને પરિષદને મજબુત કરી જે સેવા પ્રકલ્પ સંચાલિત છે તેના માધ્યમથી જનકલ્યાણના કાર્યો કરવા આહવાન કર્યું હતું. તેઓશ્રીએ વધુમાં કહ્યું કે કાર્યકર્તાઓ આસપાસના ગામોની પરિષદ શાખામાં જાય અને કાર્યકર્તાઓ સાથે વિચાર-વિમર્સ કરી પરસ્પર સહયોગ કરે, યુગ બદલાઈ રહ્યો છે તે માટે સમાજને સંગઠિત કરવાની આજની મહત્વપૂર્ણ જરૂર છે. પરિષદના કાર્યકર્તાઓની સેવાભાવની લાગણી પ્રબળ છે. એમને જિન શાસન, જિનવાણી અને આત્મ-સ્વરૂપની ભાવનાને સમજી સમાજકલ્યાણ કાર્યકમાં અગ્રેસર રહેવું જોઈએ. પરિષદના કાર્યકર્તા સમર્પિત હોવા જોઈએ. ધર્મ-સંસ્કારોથી પૂર્ણ થઈ એના આચરણનું અનુકરણ કરે જેથી સમાજના લોકોનું ઉત્થાન કરી શકે. મહિલા પરિષદની સદસ્યો પરિવારમાં ધર્મ-સંસ્કારોનું સિંચન કરે. ત્યારબાદ મુનિરાજશ્રી પ્રસમસેન વિજયજી મ.સા. એ કહ્યું કે પૂજ્ય લોકસંતશ્રીની પ્રેરણાથી છેલ્લા ૫૮ વર્ષથી શાખા પરિષદ, સમર્પણ, અનુશાસન એકતાના માધ્યમથી સેવાક્ષેત્રમાં અગ્રેસર છે. તેમને આહવાન કરતાં કહ્યું કે કાર્યકર્તાનું પણ ગુરૂ પ્રત્યે કર્તવ્ય છે કે પોતાના કાર્યોમાં આચરણ અને સંસ્કારો પ્રત્યે જાગૃત રહી જ્ઞાનાવાન, વિનયવાન બને, મુનિરાજશ્રી પ્રસિધ્ધરત્ન વિજયજીએ કહ્યું કે પરિષદ સંસ્થાપક ગુરૂદેવશ્રી યતિન્દ્ર સૂરિશ્વરજી મ.સા. એ પરિષદ અને મુખપત્ર શાશ્વતધર્મના સંચાલનની જવાબદારી જે

વિશ્વાસ સાથે મુનિરાજ જયંતવિજયજી ને સોંપી હતી તેને પૂજ્ય લોકસંતશ્રીએ પરિષદ પ્રણેતાના રૂપમાં સિધ્ધ કરી બતાવી છે. વિશ્વાસ એક શબ્દ છે લખવા-વાંચવામાં એક મિનીટથી પણ ઓછો સમય લાગી જાય છે. પરિષદના દરેક કાર્યકર્તાનું દાયિત્વ બની રહે છે કે વિશ્વાસ કાયમ માટે રાખે. મુનિરાજ શ્રી ચારિત્રરત્ન વિજયજી અને મુનિરાજશ્રી નિપુણરત્ન વિજયજીએ કહ્યું કે પરિષદનું અધિવેશન સદસ્યો માટે રીચાર્જ કરવાનો અવસર છે. વર્ષમાં એકવાર આના માધ્યમથી જે ઉર્જા મળે છે તે કેટલાય ઐતિહાસિક કાર્યો કરાવે છે.

એમને અધિકથી અધિક કાર્યકર્તાઓને પરિષદમાં જોડાવા અને સમર્પણ સાથે અનુશાસનબધ્ધ કરવાનો સંદેશો આપ્યો. સત્ર દરમ્યાન દેશના વિભીન્ન સ્થાનોમાંથી આવેલ પદાધિકારીઓએ ધાર્મિકશિક્ષા, ચિકિત્સા અને જનકલ્યાણ ક્ષેત્રમાં પરિષદ ધ્વારા કરાયેલ કાર્યોની જાણકારી આપી હતી. સ્ટેજ સંચાલન પરિષદના મહામંત્રી શ્રી અશોકજી શ્રી શ્રી માલે કર્યું હતું.

રાષ્ટ્રીય અને પ્રાદેશિક પદાધિકારીઓની ઘોષણા

અધિવેશનના સમાપન સત્રમાં પૂજ્ય લોકસંતશ્રીએ પરિષદના નવા રાષ્ટ્રીય અને પ્રાદેશિક પદાધિકારીઓની ઘોષણા કરી હતી.

નવયુવક પરિષદમાં રાષ્ટ્રીય અધ્યક્ષ શ્રી રમેશભાઈ ધરૂ (પેપરાલ-મુંબઈ) મહામંત્રી શ્રી અશોકજી શ્રીશ્રીમાલ (ઈન્દોર), વરિષ્ઠ ઉપાધ્યક્ષ શ્રી ઓ.સી.જૈન (બેંગ્લોર), ઉપાધ્યક્ષ શ્રી સુશીલ ગીરીયા (ઉજૈન), મધ્યપ્રદેશ પરિષદ અધ્યક્ષ શ્રી રમેશજી ઘાડીવાલ (કુક્ષી), મહામંત્રી શ્રી સુધીરજીલોઢા (મંદસોર), ઉપાધ્યક્ષ શ્રી મોહિત તાંતેડ (ધાર), રાજસ્થાન પ્રદેશ અધ્યક્ષ, શ્રી બાબુલાજી (દિલ્હી), મહામંત્રી શ્રી સુજીત ઓરા, મહારાષ્ટ્ર પ્રદેશ અધ્યક્ષ શ્રી મોહનજી ઢાલાવત (મુંબઈ) મહામંત્રી શ્રી અનીલજી રાણાવત (પુના), ગુજરાત પ્રદેશાધ્યક્ષ શ્રી અરવિંદભાઈ દેસાઈ (થરાદ-અમદાવાદ), મંત્રી શ્રી સંજયભાઈ અદાણી (થરાદ-સુરત), દક્ષિણભારત પ્રદેશાધ્યક્ષ શ્રી બાબુલાલજી જૈન (બેંગલુર), મહામંત્રી શ્રી સુજીત જી. સોલંકી (વિજયવાડા), મહિલા પરિષદમાં અધ્યક્ષ ડૉ. શ્રીમતી અંગુરબાલા શેઠીયા (નિમ્બાહેડા), ઉપાધ્યક્ષ શ્રીમતી ગુણમાલા નાહર (ઉજૈન), શ્રીમતી રમીલાબેન ભણસાળી (થરાદ-અમદાવાદ), શ્રીમતી કલાબેન (ભાટ પચલાણા), મહાસચિવ શ્રીમતી પદમાશેઠ (રાણાપુર), સહ સચિવ શ્રીમતી આશાબેન કટારીયા (જાબુઆ), કોષાધ્યક્ષ શ્રીમતી પારસમણીબેન મારવાડી (જાવરા), સહકોષાધ્યક્ષ શ્રીમતી સરોજબેન કાંસવા (રતલામ) સંગઠન મંત્રી શ્રીમતી વર્ષાબેન (થરાદ-આણંદ), સહસંગઠન મંત્રી શ્રીમતી હર્ષાબેન નાન્દેચા (ખાચરોદ), પ્રચારમંત્રી શ્રીમતી રાશિ લુણાવત (રીંગનોગ), સહપ્રચારમંત્રી શ્રીમતી બચીબેન દોશી (થરાદ-મુંબઈ), શિક્ષામંત્રી શ્રીમતી અલકાબેન સંઘવી (થરાદ-સુરત), સહશિક્ષા મંત્રી શ્રીમતી આશિતા સંઘવી (થરાદ-સુરત), કેન્દ્રીય કાર્યકારીણી સદસ્યોમાં શ્રીમતી નીતાબેન કાશ્યપ (રતલામ), શ્રીમતી કુસુમબેન ગીરીયા (ઉજૈન), શ્રીમતી તર્લિકાબેન નાહટા (કુશલગઢ), શ્રીમતી રાખીબેન રાંકા (ઈન્દોર), શ્રીમતી રાજકુમારી દસેડા (જાવરા), શ્રીમતી ગુણીબેન (થરાદ-આણંદ), શ્રીમતી વિમળાબેન અરવિંદભાઈ દેસાઈ (થરાદ-અમદાવાદ), શ્રીમતી સંતરીબેન રામાણી (નેલ્લુર), શ્રીમતી ચંદ્રકાંતાબેન ગાદીયા, મધ્યપ્રદેશ ઈકાઈમાં

શ્રીમતી પુષ્પાબેન ભંડારી (મનાવર), ઉપાધ્યક્ષ શ્રીમતી મધુલિકા તાંતેડ (રાજગઢ), રાનીલોઢા (નિમ્બાહેડા), કલાવોરા (ભાટ પચલાના), મહામંત્રી હેમા હિંગડ (મંદસૌર), કોષાધ્યક્ષ વિમળાબેન પગારીયા (પારા), સહકોષાધ્યક્ષ માયા લુણાવત (રતલામ), સહમંત્રી અનિતા સરાફ (બડનગર), પ્રચાર મંત્રી સ્નેહલતા ડુંગરવાલ (ઈન્દોર), સહપ્રચાર મંત્રી મંગલા ધારીવાલ (કુક્ષી), શિક્ષામંત્રી સવિતાબેન (કુક્ષી), સહશિક્ષામંત્રી (નિર્મલા લોઢા) (મંદસૌર) ગુજરાત ઈકાઈમાં અધ્યક્ષા શ્રીમતી કંચનબેન અદાણી (થરાદ-અમદાવાદ), ઉપાધ્યક્ષ શ્રીમતી કોકીલાબેન મોદી (થરાદ-સુરત), શ્રીમતી વર્ષાબેન (થરાદ-આણંદ), મહામંત્રી શ્રીમતી અલકાબેન અદાણી (થરાદ-સુરત) સહમંત્રી શ્રીમતી જ્યોત્સનાબેન વેદલીયા (ડીસા), કોષાધ્યક્ષ સવિતાબેન અદાણી (થરાદ-સુરત), સહકોષાધ્યક્ષ કંચનબેન પાલુક (મુંબઈ)

શ્રેષ્ઠ પરિષદોને પુરસ્કૃત કર્યા

પૂજ્ય લોકસંતશ્રીની નિશ્રામાં રાષ્ટ્રીય અધિવેશનમાં પરિષદોને મળેલ પુરસ્કાર સર્વશ્રેષ્ઠતા માટે સ્વ. ભંવરલાલ છાજેડ સ્મૃતિ પુરસ્કાર : પ્રાર્થના સમાજ મુંબઈ શાખા, પ્રથમ પુરસ્કાર સુરત, દ્વિતીય પુરસ્કાર રાજગઢ, તૃતિય પુરસ્કાર રતલામ, સેવાક્ષેત્રમાં અશોકકુમાર કાશ્યપ પુરસ્કાર : વિજયવાડા, ચિકિત્સા ક્ષેત્રમાં મણીલાલ પ્રેમચંદભાઈ મોરખીયા પુરસ્કારઃ અલિરાજપુર, રચનાત્મક કાર્યોના ક્ષેત્રમાં શાંતિલાલ રામાણી પુરસ્કારઃ નયાપુરા ઉજૈન, જીવદયાક્ષેત્રમાં પ્રકાશ રાંકા પુરસ્કાર : મૈસુર, યતીન્દ્ર જયંત જ્ઞાનપીઠની ગુણાત્મકતાના ક્ષેત્રમાં : અમાદાવાદ પરિષદ, શિક્ષાક્ષેત્રમાં જે.કે.સંઘવી પુરસ્કાર : ડીસા, અહિંસા ક્ષેત્રમાં કંચનબાઈ આર.પી. ચેરીટેબલ ટ્રસ્ટ પુરસ્કારીઃ બેંગલુર, શાશ્વત ધર્મ પ્રચાર-પ્રસાર ક્ષેત્રમાં શ્રી વિપુલ દોશી પુખરાજ જૈન પુરસ્કારઃ દિનેશ મામા રાજગઢ, કેન્દ્રીય કાર્યાલયથી સંપર્ક માટે રાજમલજી લોઢા પુરસ્કાર : આલોટ, શાખા કાર્ય હેતુ તગરાજ હીરાણી પુરસ્કારઃ બડનગર, વૈયાવચ્ચ પુરસ્કારઃ રીંગનોદ, સર્વાધિક ઉપસ્થિતનો સૌભાગ્યમલ શેઠીયા સ્મૃતિ પુરસ્કારઃ જાવરા.

સંઘવી હકમચંદજી ચંદાજી પરિવાર સંચાલિત

સંઘવી ભીખાલાલ સરૂપચંદ પરિવાર દ્વારા આયોજિત

પૂજ્યશ્રીના દર્શન-વંદન સહિત બે દિવસીય યાત્રા પ્રવાસ સંપન્ન

સંઘવી હકમચંદજી ચંદાજી પરિવાર સંચાલિત... સંઘવી ભીખાલાલ સરૂપચંદ પરિવાર દ્વારા જયંતસેનધામ રતલામ નગરે ચાતુર્માસ બિરાજમાન યુગ પ્રભાવક, લોકસંત સુવિશાલ ગચ્છધિપતિ પરમ પૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. સપરિવારના દર્શન-વંદન અને શ્રી મોહનખેડાતીર્થ ને જુહારવાનું ભવ્ય આયોજન કરાયું હતું.

સંઘવી ભીખાલાલ સરૂપચંદ પરિવારની થરાદ જૈન સમાજના દરેક સભ્યોને પૂજ્યશ્રીના દર્શન-વંદન અને શ્રી મોહનખેડા તીર્થને જુહારવા માટેની ભાવના જાગૃત થતાં તા. ૧૭-૯-૨૦૧૬ અને તા. ૧૮-૯-૨૦૧૬ ના રોજ બે દિવસીય યાત્રા પ્રવાસનું ભવ્યાતિભવ્ય આયોજન કરાયું હતું.

સંવત ૨૦૭૨ ના ભાદરવા સુદ-૧૫ ને શુક્રવાર તા. ૧૬-૯-૨૦૧૬ ની રાત્રીએ અમદાવાદથી ૨૬ લકઝરી બસો ધ્વારા આયોજક પરિવાર સહિત સમાજના યાત્રિકોએ ઉષ્માભેર વિદાય લઈ રતલામ નગરે ચાતુર્માસ બિરાજમાન પૂજ્યશ્રી સપરિવારના દર્શન-વંદનાર્થે જવા મંગલમય પ્રસ્થાન કર્યું હતું. ૧૩૦૦ થી વધુ યાત્રિકો તા. ૧૭-૯-૨૦૧૬ ની વહેલી સવારે રતલામ નગરે પૂજ્યશ્રીના સાનિધ્યમાં પહોંચ્યા હતા. જ્યાં ચાતુર્માસ આયોજક અને વિધાયક શ્રી ચેતન્યજી કાશ્યપ ધ્વારા સ્વાગત કરાયું હતું. પૂજ્યશ્રીના દર્શન-વંદન કરી સહુએ પ્રાતઃ કાર્ય પતાવી નવકારશી કરી હતી. ત્યારબાદ પ્રવચન હોલમાં સહુ ગોઠવાઈ ગયા હતા અને પૂજ્યશ્રીના સામૂહિક વંદન કરી પૂજ્યશ્રીના મુખકમળ ધ્વારા વ્યાખ્યાનનું શ્રવણ કર્યું હતું. અને માંગલિક સાંભળી સહુએ ધન્યતા અનુભવી હતી. બપોરનું જમણ પતાવી આખા દિવસની ચાતુર્માસ આયોજક કાશ્યપ પરિવારની મહેમાનગતી માણી સાંજના ચૌવિહાર કરી શ્રી મોહનખેડા તીર્થે જવા પ્રયાણ કર્યું હતું. મોડી રાત્રે શ્રી જયંતસેન મ્યુઝીયમ ખાતે પહોંચી રાત્રી સ્થીરતા કરી હતી તા. ૧૮-૯-૨૦૧૬ ની સુપ્રભાતે પ્રાતઃ કાર્ય પતાવી વાજતે-ગાજતે આયોજક પરિવાર સહિત ૧૩૦૦ થી અધિક યાત્રિકો શ્રી મોહનખેડા તીર્થ ખાતે પહોંચ્યા હતા જ્યાં ભવ્ય સ્વાગત કરાયું હતું.

શત્રુંજય અવતાર શ્રી મોહન ખેડા તીર્થરાજમાં બિરાજિત શ્રી આદિનાથ ભગવાન આદિ જિનબિંબોની સેવા-પૂજા કરી દાદા ગુરૂદેવના સમાધિ મંદિરે જઈ તપોનિષ્ઠ યોગિન્દ્રાચાર્ય પ્રાતઃ સ્મરણીય દાદા ગુરૂદેવ શ્રીમદ્‌વિજય રાજેન્દ્ર સૂરિશ્વરજી મ.સા. ની સેવા-પૂજા કરી નાચી-ગાઈને ભક્તિ કરી હતી. ત્યારબાદ પૂજ્ય આચાર્યદેવેશ શ્રીમદ્ વિજય ધનચંદ્રસૂરિશ્વરજી, શ્રી ભૂપેન્દ્ર સૂરિશ્વરજી, શ્રી યતિન્દ્રસૂરિશ્વરજી અને શ્રી વિદ્યાચંદ્ર સૂરિશ્વરજીની સેવા-પૂજા કરી ધન્યતા અનુભવી હતી. શ્રી મોહનખેડાતીર્થને જુહારી સહુ યાત્રિકો મ્યુઝીયમ ખાતે પરત આવ્યા હતા અને બપોરનું જમણ પતાવ્યું હતું. બપોરે માતૃ-પિતૃ નો ભવ્ય કાર્યક્રમ સંપન્ન થયો હતો. જ્યાં શ્રી જયંતસેન મ્યુઝીયમ ટ્રસ્ટ ધ્વારા યાત્રા પ્રવાસના આયોજક પરિવારનું ભવ્ય બહુમાન કરાયું હતું.

સંઘવી ભીખાલાલ સરૂપચંદ પરિવાર ધ્વારા આયોજિત સમાજના ૧૩૦૦ થી અધિક યાત્રિકોનો બે દિવસીય યાત્રા પ્રવાસ સુખરૂપ ઉત્સાહી માહોલ વચ્ચે સંપન્ન થયો હતો. સમસ્ત સમાજના યાત્રિકોમાં ઓજસ્વી અને તેજસ્વી આભને આંબતો ઉત્સાહ વ્યાપી ગયો હતો. કોઈપણ યાત્રિકને અગવડ વેઠવી ન પડે તે માટેની તકેદારી પૂર્વક આયોજક પરિવાર ધ્વારા સુંદર સગવડ આપવામાં આવી હતી.

આ બે દિવસીય યાત્રા સુખરૂપ સંપન્ન કરી સમાજજનોએ સ્નેહની સાંકળ રચી અવસરની મીઠી અને અવિસ્મરણીય યાદ સાથે શ્રી જયંતસેન મ્યુઝીયમ ખાતેથી સાંજના ચૌવિહાર કરી ભક્તિ ભાવના બાદ અમદાવાદ ખાતે પરત આવવા પ્રયાણ કર્યું હતું.

દુધવા નિવાસી વોરા નેમજીભાઈ ગોકળભાઈ પરિવાર સંચાલિત

વોરા રમણલાલ ચુનીલાલ પરિવાર દ્વારા
શ્રી મોહનખેડા તીર્થનો બે દિવસીય કુટુંબ યાત્રા પ્રવાસ સંપન્ન

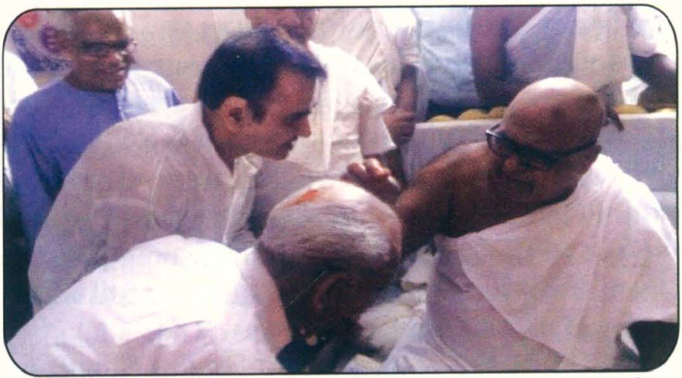

પૂજ્યશ્રીના વંદન કરી આશીર્વાદ લેતા શ્રી રમણલાલ વોરા અને હરેશ વોરા દ્રષ્ટિ ગોચર થાય છે.

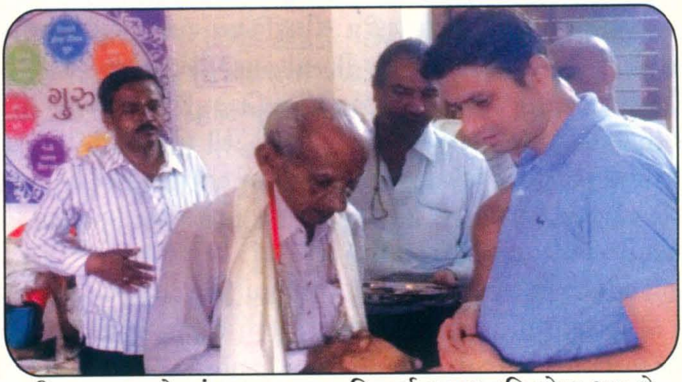

શ્રી રમણલાલ વોરાનું બહુમાન કરતા સિદ્ધાર્થ કાશ્યપ દ્રષ્ટિ ગોચર થાય છે.

ચાતુર્માસ દરમ્યાન જયંતસેનધામ રતલામ નગરમાં ધર્મભક્તિના ઘોડાપુર ઉમટાવનાર યુગ પ્રભાવક, લોકસંત સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમ પૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. ના શુભાશુભ આશિર્વાદ, પૂજ્ય સાધ્વીજી શ્રી શશીકલાશ્રીજી મ.સા. ની સુશિષ્યા પૂજ્ય સાધ્વીજી શ્રી અવિચલદ્રષ્ટાશ્રીજી મ.સા. ના ઉપદેશ તપસ્વીરત્ના પૂજ્ય સાધ્વીજી શ્રી મૈત્રીકલાશ્રીજી મ.સા. તથા તપસ્વીરત્ના પૂજ્ય સાધ્વીજી શ્રી નિરંજનકલાશ્રીજી મ.સા.ની પ્રેરણાથી દુધવા નિવાસી વોરા નેમજીભાઈ ગોકળભાઈ પરિવાર સંચાલિત વોરા રમણલાલ

ચુનીલાલ પરિવાર ધ્વારા પૂજ્યશ્રીના દર્શન-વંદન કરવા સાથે શ્રી મોહનખેડાતીર્થના બે દિવસીય કુટુંબ યાત્રા પ્રવાસનું આયોજન કરાયું હતું.

સંવત ૨૦૭૨ ના ભાદરવા સુદ-૮ ને શુક્રવાર તા. ૯-૯-૨૦૧૬ ના રોજ મુંબઈથી પ્રસ્થાન કરી સમસ્ત વોરા નેમજીભાઈ ગોકળભાઈ પરિવારના સભ્યો ટ્રેન ધ્વારા ભાદરવા સુદ-૯ ને શનિવાર સિધ્ધિયોગમાં જયંતસેનધામ રતલામ નગરે પહોંચ્યા હતા. પૂજ્યશ્રીને રમણલાલ વોરાએ જણાવ્યું હતું કે ઘણા વર્ષોથી કુટુંબ યાત્રા કરાવવાની ભાવના હતી જે આપના આશિર્વાદથી અત્યારે સાકાર થવા જઈ રહી છે જવાબમાં પૂજ્યશ્રીએ રમણલાલ વોરાને કહ્યું હતું કે પરમાત્મા તમને ખુબ જ ધર્મભક્તિ કરવાની શક્તિ આપે અને દરેક ધર્મ અનુષ્ઠાનોમાં તમને લાભ પ્રાપ્ત થાય તેવા અમારા અખંડ આશિર્વાદ છે. પૂજ્યશ્રીના પ્રવચનનું શ્રવણ કરી માંગલિક સાંભળી ભોજન પતાવી બપોરે ૧ કલાકે બડનગર જવા પ્રયાણ કર્યું હતું. ચાતુર્માસ આયોજક શ્રી ચેતન્યજી કાશ્યપ પરિવારના શ્રી સિધ્ધાર્થ કાશ્યપે શ્રી રમણલાલ વોરા અને શ્રી રસીકલાલ વોરાનું બહુમાન કર્યું હતું.

બપોરે ૨-૩૦ કલાકે બડનગર પહોંચી પૂજ્ય સાધ્વીજી શ્રી અવિચલદ્રષ્ટા શ્રીજી મ.સા. તથા સંસારી સુપુત્રીઓ પૂજ્ય સાધ્વીજી શ્રી મેત્રીકલાશ્રીજી મ.સા., પૂજ્ય સાધ્વીજીશ્રી નિરંજન કલાશ્રીજી મ.સા. આદિઠાણાના દર્શન-વંદન કરી સમસ્ત કુટુંબીજનોએ આશિર્વાદ મેળવ્યા હતા. ત્રણેય સાધ્વીજી ભગવંતોએ ૧ કલાક સુધી પ્રવચન આપ્યું હતું ત્યારબાદ બડનગર સંઘ ધ્વારા રમણલાલ વોરા, જયેશ વોરા અને સવિતાબેન વોરાનું બહુમાન કરાયું હતું.

બડનગરમાં ચૌવિહાર પતાવી સાંજે ૭ કલાકે શ્રી જયંતસેન મ્યુઝીયમ ખાતે જવા પ્રયાણ કર્યું હતું. રાત્રે ૯-૦૦ કલાકે પહોંચી આરતી કરી રાત્રિ સ્થિરતા કરી હતી.

ભાદરવા સુદ દ્વિતીય નોમ ને રવિવારના દિવસે છ'રી પાલક સંઘ સ્વરૂપ ૯ છાબ, (અષ્ટ પ્રકારી પુજાની છાબ) નૈવેધ, કુટ અને ભગવાનને તથા દાદા ગુરૂદેવને પહેરાવવા સોનાની ચેઈન લઈને વાજતે-ગાજતે શ્રી મોહનખેડાતીર્થ ખાતે પહોંચ્યા હતા ત્યાં સેવા-પૂજા ભક્તિ કરી ધન્યતા અનુભવી હતી. સમસ્ત કુટુંબીજનો ભક્તિમાં લીન બની નાચી ઉઠ્યા હતા. શ્રી મોહનખેડા તીર્થની યાત્રા પૂર્ણ કરી મ્યુઝીયમ ખાતે પરત આવ્યા હતા જ્યાં શ્રી જયંતસેન મ્યુઝીયમ ટ્રસ્ટ ધ્વારા વોરા પરિવારનું બહુમાન કર્યું હતું. ભોપાવર, મેઘનગર સહિત પાંચેય તીર્થોનો શુભ અવસર સાંપડ્યો હતો દરેક તીર્થોમાં ઉદારતાથી વોરા પરિવારે સાધારણ ખાતામાં રકમ લખાવી હતી અને પ્રભાવના કરી હતી.

શ્રી રમણલાલ વોરા તથા શ્રીમતી સવિતાબેન વોરાની વર્ષોની ભાવના પૂર્ણ થતાં ભાવ વિભોર બની કુટુંબીજનોનો આભાર માની હર્ષની લાગણી વ્યક્તિ કરી હતી. પૂજ્ય માતા-પિતાની કુટુંબ યાત્રાની ભાવના પૂર્ણ થતાં સુપુત્ર ચિ. હરેશ રમણલાલ વોરાની ખુશી સમાતી ન હતી.

થરાદનગરની પુણ્યધરા શ્રી સકલ તીર્થ વરખડી ધામ ખાતે નવ્વાણુ યાત્રા સંપન્ન.
ધરણેન્દ્ર દેવ સ્વરૂપ નાગરાજા અખંડ કાંચળી મુકી ગયા

થરાદનગરના પૂર્વજોની સાત પેઢીના ઈતિહાસને અજવાળતા અવસરના શુભ ચોઘડીયા રણકતાં શ્રી ગોડીજી પાર્શ્વનાથ ભગવાનની અસીમ કૃપા, તપોનિષ્ઠ પ્રાતઃ સ્મરણીય દાદા ગુરૂદેવ શ્રીમદ્ વિજય રાજેન્દ્રસૂરિશ્વરજી મ.સા. ના દિવ્ય આશિષ અને યુગ પ્રભાવક, લોકસંત સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમ પૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્ર્વજી મ.સા. ના શુભ આશિર્વાદ અને આજ્ઞાથી થરાદ ખાતે ચાતુર્માસ સ્થિત પૂજ્યશ્રીની આજ્ઞાનુવર્તીની પૂજ્ય સાધ્વીજી શ્રી કૈવલ્ય ગુણાશ્રીજી મ.સા. આદિઠાણાની પ્રેરણા અને નિશ્રામાં થરાદનગરના શ્રી સકલ તીર્થ વરખડી ધામ ખાતે પ્રથમવાર નવ્વાણું યાત્રાનું ભવ્યાતિભવ્ય આયોજન કરાયું હતું.

સંવત ૨૦૭૨ ના ભાદરવા સુદ-૧૪ ને ગુરૂવાર તા. ૧૫-૯-૨૦૧૬ ના રોજથી તા. ૨૮-૯-૨૦૧૬ ના રોજ દરમ્યાન યોજાયેલ આ નવ્વાણું યાત્રામાં ૧૬૦ યાત્રિકો જોડાયા હતા. દરેક યાત્રિકોએ નવ્વાણું યાત્રામાં થતી સંપૂર્ણ ક્રિયા સાથે એકાસણુ કરી નવ્વાણું યાત્રા સંપન્ન કરી હતી.

થરાદનગરના પુણ્યોદયે સમાજજનોના ઉત્સાહના બળે મીઠડા સ્નેહના પ્રતિકરૂપે ૧૩ લાભાર્થી પરિવારોના સૌજન્યથી થરાદનગરની પુણ્યધરા પર પ્રથમવાર શ્રી સકલ તીર્થ વરખડી ધામ ખાતે નવ્વાણુ યાત્રાનું આયોજન થતાં સંઘમાં ઉત્સાહનું મોજું ફરી વળ્યું હતું.

તા. ૧૫-૯-૨૦૧૬ ના રોજ પૂજ્ય સાધ્વીજી ભગવંતોના સાનિધ્યમાં સકળ સંઘ સાથે યાત્રિકોએ શ્રી મહાવીર સ્વામી જિનાલયથી (મોટા દેરાસર) વાજતે-ગાજતે જય જય કારના બુલંદ નારાઓ સાથે શ્રી સકલ તીર્થ વરખડી ધામ ખાતે જવા પ્રસ્થાન કર્યું હતું આ સમયે શ્રી શત્રુંજય મહાતીર્થધિરાજ પાલીતાણાની યાદ અપાવતી થરાદનગરની બજાર ધર્મમય બની ગઈ હતી.

શ્રી થરાદ જૈન સમાજની એકતા માટેની પ્રખ્યાતિ પ્રથમ થી જ રહેલી છે ઉચ્ચકોટીની ઉદારતા સાથે આ ભવ્યાતિભવ્ય નવ્વાણુ યાત્રા આયોજનને ચાર ચાંદ લગાવવાની તેર લાભાર્થી પરિવારોની ભાવનાને અને પૂજ્ય સાધ્વીજી ભગવંતોની પાવન પ્રેરણાને અદ્ભુત સફળતા અપાવવા શ્રી સકલ તીર્થ વરખડી ધામના નિર્માણમાં પોતાનું લોહી પરસેવો એક કરી દેનાર વરખડી પ્રમુખ શ્રી રમેશકુમાર બાબુલાલ વોહેરા (નડીઆદ), કર્તવ્યનિષ્ઠ શ્રી વસંતકુમાર ગગલદાસ દોશી તેમજ તમામ ટ્રસ્ટીગણોએ તમામ જવાબદારી ઉપાડી લઈ આ નવ્વાણુ યાત્રાને અદ્ભુત સફળતા અપાવી હતી જેથી આ પ્રસંગ દીપી ઉઠ્યો હતો.

તા. ૨૮-૯-૨૦૧૬ ના રોજ શ્રી સકલ તીર્થ વરખડી ધામના ટ્રસ્ટી મંડળ દ્વારા ૧૩ લાભાર્થી પરિવારોનું ઉષ્માભેર બહુમાન કરી સન્માન પત્ર અર્પણ કરાયું હતું. અને ભવ્યાતિભવ્ય વરઘોડો નીકળ્યો હતો.

શ્રી સકલ તીર્થ વરખડી ધામનો પ્રભાવશાળી ઉદય થવાના સંકેત દર્શાવતી પ્રભાવકતા...!!!

થરાદનગરની પુણ્યધરા શ્રી સકલ તીર્થ વરખડી ધામનાં પ્રભાવશાળી ઉદય થવાનો છે તેનો પ્રત્યક્ષ પુરાવો નવ્વાણું યાત્રાના આ પ્રથમ પ્રસંગે જોવા મળ્યો હતો. શ્રી ગોડીજી પાર્શ્વનાથ ભગવાનના અધિષ્ટાયક ધરણેન્દ્રદેવ સ્વરૂપ નાગદેવતાએ શ્રી સકલ તીર્થ વરખડી ધામની પ્રદક્ષિણા કરી અખંડ કાંચળી મુકી તેમના સ્થાને પહોંચી ગયા હતા. આ એક આશ્ચર્ય ચમત્કાર કે પ્રભાવકતા જે કહો તે શ્રી સકલ તીર્થ વરખડી ધામના પ્રભાવશાળી ઉદયના શુભ સંકેતો દેખાઈ રહ્યા છે.

સ્વર્ગસ્થ કુમાર વંદન ભાગ્યવાન સંઘવીને "ગુર્જર જૈન જ્યોત" પરિવાર અર્પે છે આદરાંજલિ... પુષ્પાંજલિ... સ્મરણાંજલિ અને શ્રધ્ધાંજલિ

માનવ કિડીયારાથી ઉભરાતી આ વિશાળ દુનિયા પર પ્રતિક્ષણ માનવ જન્મ ધારણ કરે છે અને અસંખ્ય લોકો મૃત્યુને ભેટે છે. જેની કોઈ ખાસ નોંધ પણ લેવાતી નથી પરંતુ જ્યારે કોઈ ધર્મના રંગે રંગાઈ અન્યને ધર્મ વિશેની સમજણ આપવા એટલે કે સાધુ-સાધ્વીજી ભગવંતોની નિશ્રા ન હોય તે સ્થળે પર્યુષણ મહાપર્વની આરાધના કરાવવા જવાની તત્પરતા દાખવનાર આ દુનિયાને આખરી અલવિદા કરી દે છે ત્યારે હજ્જારો આંખો આંસુઓ વહાવી દે છે. સારી કરણીવાળા માનવીની વિદાય ઘણી વસમી હોય છે.

કંઈક આવોજ શોક થરાદ નિવાસી ભાયંદર મુંબઈ સ્થિત શ્રી જ્યંતીલાલ મોહનલાલ સંઘવી પરિવાર સહિત સમસ્ત થરાદવાસીઓ અને ભાયંદરના જૈનોને વેઠવાનો મનહુસ દિવસ તા. ૭-૯-૨૦૧૬ ના રોજ આવ્યો હતો.

પર્યુષણ મહાપર્વની આરાધના કરાવવા થરાદ નિવાસી વંદન ભાગ્યવાન સંઘવી અને અન્ય ત્રણ બાળ શ્રાવકો કલકત્તા ગયા હતા. આનંદ ઉલ્લાસ સાથે ભાવપૂર્વક આરાધના સંપન્ન કરાવી શ્રી સમેત શિખરજીની યાત્રા કરવા જતાં તા. ૭-૯-૨૦૧૬ ના રોજ અકસ્માત થતાં ૧૪ વર્ષીય વંદન ભાગ્યવાન સંઘવીએ ઘટના સ્થળે જ અચાનક આંખો બંધ કરી દઈ આં દુનિયાને આખરી અલવિદા કરી દીધાના સમાચાર સમાજમાં ફેલાઈ જતાં સંઘવી પરિવાર સહિત થરાદવાસીઓ અને ભાયંદરમાં વસતા સમસ્ત જૈન પરિવારોમાં શોકના વાદળ ઘેરાઈ ગયાં હતાં. સ્વર્ગસ્થ વંદન સંઘવીના પાર્થિવ દેહને ભાયંદર મુંબઈ ખાતે લવાયો હતો. તા. ૮-૯-૨૦૧૬ ના રોજ ૧૧ કલાકે વંદનની અંતિમ યાત્રા (સ્મશાનયાત્રા) નીકળી હતી જે અંતિમ યાત્રામાં કિડિયારૂં ઉભરાય તેવી જનમેદની ઉભરાઈ ગઈ હતી. ભાયંદરના મુક્તિધામ ખાતે પહોંચી વંદનાના સન્માન પૂર્વક અગ્નિસંસ્કાર કર્યા હતા અને ઉપસ્થિત હજ્જારો લોકોએ વંદનની આત્માની શાંતિ માટે પ્રાર્થના કરી શ્રધ્ધાંજલિ અર્પીત કરી હતી. પ્રાર્થના સભામાં સમાજના આગેવાનો-નેતાઓ વિગેરે ઉપસ્થિત રહ્યા હતા જ્યારે પૂજ્યશ્રીઓ ધ્વારા તેમજ સામાજિક સંસ્થાઓ ધ્વારા પત્રથી શોક સંદેશ પાઠવવામાં આવ્યા હતા. થરાદ જૈન સમાજે એક ધર્મનિષ્ઠ યુવાનને ગુમાવ્યો છે તેની ખોટ ક્યારેય પુરાય તેમ નથી. સ્વર્ગસ્થ વંદન સંઘવીને "ગુર્જર જૈન જ્યોત" પરિવાર અંતઃકરણ પૂર્વક ભાવભીની આદરાંજિલ, પુષ્પાંજલિ, સ્મરણાંજલિ અને શ્રધ્ધાંજલિ અર્પે છે.

શ્રાવિકારત્ન શ્રીમતી તેજકુંવરબાઈ કાશ્યપની સેવામય સ્મૃતિ અંગે..

અમૃત મહોત્સવ સંપન્ન

યુગ પ્રભાવક, લોકસંત સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમપૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. સપરિવારની પાવનકારી નિશ્રામાં અ.ભા. બૃહતતપોગચ્છીય ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ દ્વારા શ્રી ચેતન્યજી કાશ્યપ ઉપાધ્યક્ષ-રાજ્ય યોજના અયોગ-મ.પ્ર. વિધાયકના માતૃશ્રી શ્રાવિકારત્ન શ્રીમતી તેજકુંવરબાઈની જીવન પર્યંત સેવામયી સ્મૃતિ યાદ કરાવતો સંવત ૨૦૭૨ ના આસો સુદ-૧૫ ને રવિવાર તા. ૧૬-૧૦-૨૦૧૬ ના રોજ જયંતસેનધામ રતલામ નગરે ભવ્યાતિભવ્ય અમૃત મહોતસ્વ સંપન્ન થયો હતો. અને શ્રીમતી તેજકુંવરબાઈ કાશ્યપને શ્રાવિકારત્નથી અલંકૃત કરાયા હતા.

આ અવસરે સવારે ૯-૦૦ કલાકે સંગીત સાથે માતૃવંદનાનો કાર્યક્રમ સંપન્ન થયો હતો. આ કાર્યક્રમ શ્રી સિધ્ધાર્થ કાશ્યપે પ્રસ્તુત કર્યો હતો. ૧૧ કલાકે અમૃત મહોત્સવ કાર્યક્રમ સંપન્ન થયો હતો ત્યારબાદ સકલ જૈન શ્રી સંઘ અને આમંત્રિત મહેમાનોનું સ્વામીવાત્સલ્ય યોજાયું હતું.

શ્રીમતી તેજકુંવરબાઈ કાશ્યપની જીવન ઝરમર

ધર્મ પાયારણ શ્રીમતી તેજકુંવરબાઈનો જન્મ ૧૭ માર્ચ ૧૯૪૩ ના રોજ મધ્ય પ્રદેશના કુક્ષી ખાતે થયો હતો. તેમના પિતા સ્વ. ચમ્પાલાલ ખુંટવાલા એ પાલિતાણા તીર્થમાં ત્રિસ્તુતિક જૈન સમાજની પ્રથમ ધર્મશાળા ચમ્પા નિવાસનું નિર્માણ કરાવ્યું હતું. તેમના લગ્ન ૧૯૫૮ માં રતલામના શ્રી અશોકકુમાર કાશ્યપ સાથે થયાં હતાં, તેમના સ્વસુર સ્વ. શેઠ શ્રી કનૈયાલાલજી કાશ્યપ દાદા ગુરૂદેવ શ્રીમદ્ વિજય રાજેન્દ્ર સૂરિશ્વરજી મ.સા. સમાધિ સ્થળ મોહનખેડા તીર્થ પેઢીના સંસ્થાપક અને જીવન પર્યંત કોષધ્યક્ષ રહ્યા હતા. સાસુજી દાનશીલા શ્રીમતી ઝમકુબાઈ કાશ્યપ જસ્સુપન્ના પારેખ પરિવારના હતાં જેમણે અભિધાન રાજેન્દ્ર કોષ પ્રકાશનમાં મુખ્ય યોગદાન આપ્યું હતું.

વર્ષ ૧૯૬૪ માં શ્રી અશોકકુમાર કાશ્યપના આકાસ્મીક અવસાન થતાં ૨૧ વર્ષની અલ્પઆયુ થી જ તેજકુંવરબાઈ એ તેમની બેવડી જવાબદારી નિભાવી હતી. સુપુત્ર ચેતન્ય અને સુપુત્રી ભાવના ના પાલણ-પોષણ અને તેમને સુસંસ્કારીત જીવન શિક્ષણ સાથે સાથે સાસુ-સસરા સાથે રહી પારિવારિક દાયિત્વોનું નિર્વાહ કરતા સ્વયં જીવનને સાધના મય અને ધર્મનિષ્ઠ બનાવ્યું હતું.

સેવા-સમર્પણ ના ૧૧ વર્ષ : અહિંસા ગ્રામ

વર્ષ ૨૦૦૫ માં તેમના સુપુત્ર ચેતન્ય કાશ્યપ ધ્વારા રતલામમાં સંસ્થાપિત અહિંસા ગ્રામ, જેમાં ૧૦૦ અલ્પનસીબ પરિવારો માટે નિઃશુલ્ક આવાસ, આજીવિકા, રોજગાર પ્રશિક્ષણ, સંસ્કાર, શિક્ષણ અને સ્વાસ્થ્યના સમન્વિત પ્રકલ્પ ના પ્રબંધનમાં તેમનો સક્રિય સહયોગ રહ્યો. ૧૧ વર્ષથી નિયમિત રૂપથી હિતગ્રાહીયો ને સ્વાવલંબી અને સંસ્કારવાન બનાવવા માટે માર્ગદર્શન આપી રહ્યા છે. મહિલા હિતગ્રાહીયોમાં વ્યક્તિગત રૂચી અને યોગ્યતાઓનું આંકલન કરી તેમને સિલાઈ, બુનાઈ, કઢાઈ, કોશિયા વિગેરે કૌશલ્ય વિકાસમાં સ્વયં પ્રશિક્ષિત કર્યું. એ સાથે સ્વસહાયતા સમૂહ બનાવી પાપડ, અચાર, કાપી-કિતાબ નિર્માણ તથા અગરબત્તી પેકીંગ વિગેરેના કુટીર અને લઘુ ઉદ્યોગ સ્થાપિત કરી સ્વરોજગાર અને આજીવિકાના અવસરો ઉપલબ્ધ કરાવ્યા. હિતગ્રાહિયોનો આર્થિક, સામાજિક જ નહીં પણ સર્વાંગીક ઉન્નતીનો માર્ગ પણ પ્રશસ્ત થયો. જે એમના જીવનમાં સ્વાવલંબન અને સમૃધ્ધિની નવી સવાર લઈને આવી !

-: તપસ્યા - તીર્થ દર્શન :-

તેમને તેમના જીવનમાં બે વરસીતપ, એક માસક્ષમણ, નવ અને આઠ ઉપવાસ, વીસ સ્થાનક ઓળી પૂર્ણ કરી, સમેત શિખરજી, પાલીતાણા, ગિરનાર સહિત દેશના વિભિન્ન જૈન તીર્થો સાથે સિધ્ધાચલમ (યુ.એસ.એ.) ની તીર્થ યાત્રા અને લિસ્ટર (યુ.કે.) ના જિનાલયની પ્રતિષ્ઠામાં ભાગ લીધો.

-: જન કલ્યાણ :-

આદર્શ માનવ સેવા ટ્રસ્ટ મુંબઈના ટ્રસ્ટી છે. આદર્શ જૈન હેલ્થ સેન્ટરના પ્રબંધનમાં તેમની સક્રિય ભૂમિકા રહી છે. અહીં જરૂરતમંદોની રાહતદરે સામાન્ય અને દાંતનું નિદાન કરવામાં આવે છે. મુંબઈમાં એકસો થી અધિક સંપન્ન મહિલાઓના સમૂહ પ્રોગેસિવ લેડીઝ વેલફેયર સોસાયટીના વિશિષ્ટ સહયોગી છે. આ સંસ્થા જરૂરતમંદોને અનાજ, કપડા અને સિલાઈ મશીન સાથે સ્વરોજગાર અને ઉપચાર હેતુ અન્ય આર્થિક સહાયતા પ્રદાન કરે છે.

-: સમાજ - સંગઠન :-

તેમને પાર્શ્વનાથ મહિલા મંડળની સ્થાપના કરી અને ધર્મોતેજક મહિલા મંડલ અને સુવિધિનાથ જયંત મહિલા મંડલની અધ્યક્ષતાનું દાયિત્વ સક્રિય રીતે નિભાવ્યું. મહિલા મંડલની સદસ્યોને સમેત શિખર, પાલિતાણા, ગિરનાર તથા ઉવસગ્ગહરમ તીર્થની યાત્રોનો ધર્મલાભ આપ્યો હતો.

"શ્રાવિકારત્ન" શ્રીમતી તેજકુંવરબાઈ કાશ્યપનું ધર્મનિષ્ઠ, સુસંસ્કારીત અને જનસેવાને સમર્પિત સાદગીપૂર્ણ જીવન સમાજ માટે પ્રેરણા પૂંજ છે.

ધાર્મિક પુસ્તકોના વાંચકો જોગ

યુગ પ્રભાવક, લોકસંત સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમ પૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. ધ્વારા વિવિધ વિષયો પર સુંદર શૈલીમાં લેખીત-સંપાદીત ધાર્મિક પુસ્તકો વાંચવાની રૂચી ધરાવતા વાંચકો નીચે મુજબના સરનામા પર પુસ્તકનું નામ નોંધાવી લેવું જેથી ઘરબેઠા પુસ્તક મળી જશે. રાજેન્દ્ર કોષમાં અ.બ. ગુજરાતી અને "મનવા પલપલ બીતી જાય" આ પુસ્તકો વાંચવા હાથમાં લીધા પછી પૂર્ણ વાંચ્યા વિના મુકી શકાશે નહીં.

સંપર્ક :- હસમુખભાઈ વેદલીયા

૫૯, ખુશ્બુ શોપીંગ સેન્ટર કોર્ટ રોડ, ડીસા - ૩૮૫૫૩૫ બનાસકાંઠા - ઉ. ગુજરાત

ભાવભીની શ્રધ્ધાંજલિ

થરાદ નિવાસી નડીઆદ સ્થિત લોકસંત પૂજ્યશ્રીના પ્રખર ગુરૂભક્ત શ્રી રસીકલાલ ચુનીલાલ વોહેરાના પુત્રવધુ તથા શ્રી અશોકકુમાર (દાદુ) ના ધર્મપત્નિ

કોકીલાબેન અશોકકુમાર વોહેરાનું

ગત તા. ૨૫-૯-૨૦૧૬ ના રોજ નડીઆદ ખાતે દુઃખદ અવસાન થયેલ છે જે સદ્ગત આત્માને પ્રભુ શાંતિ અર્પે એજ અભ્યર્થના સહ... "ગુર્જર જૈન જ્યોત" પરિવાર ભાવભીની શ્રધ્ધાંજલિ અર્પે છે.

गुजरात की जैन प्रतिभा पद्मश्री डॉ. कुमारपाल देसाई

'गुजरात समाचार' के प्रसिद्ध स्तंभ लेखक डॉ. कुमारपाल देसाई को विशेष गुजराती समाज द्वारा सन् 2015 का वार्षिक श्री कानजीभाई देसाई गुजरात तिभा एवार्ड दिया जाना घोषित किया गया है। इस एवार्ड में सम्मान पत्र एवं एक लाख रु. की धनराशि तथा स्मृति चिन्ह अर्पित किया जायेगा। यह एवार्ड डॉ. कुमारपाल देसाई को साहित्य, शिक्षण, पत्रकारिता धर्मदर्शन और गुजरात विश्वकोष में योगदान के लिये सम्मानित कर दिया जा रहा है।

साहित्य परिषद के प्रमुख रह चुके श्री कुमारपाल भाई देसाई ने चारित्र, विवेचन, संशोधन, चिन्तन, अनुवाद, कथा, धर्मदर्शन आदि विषयों पर गुजराती, हिन्दी और अंग्रेजी में कुल सवा सौ पुस्तकें लिखी हैं। गुजरात विश्वविद्यालय से कला संकाय के अध्यक्ष के रूप में निवृत्तश्री कुमारपाल देसाई वर्तमान में जैन विश्वभारती इंस्टीट्यूट में प्रोफेसर अभारिटस हैं। सन् 1962 से 'गुजरात समाचार' से आप जुड़े हुए हैं।

इस दैनिक समाचार पत्र में आपके पिता प्रख्यात लेखक श्री जयभिख्खु ने सन् 1953 में प्रारंभ किये स्तंभ 'ईंट व ईमारत' को उनके पुत्र डॉ. कुमारपाल देसाई ने सन् 1970 में संभाला तथा वे आज भी निरंतर इसमें आलेखन कर रहे हैं। इस प्रकार विगत 67 वर्ष से पिता व पुत्र ने एक ही समाचार पत्र में सतत् एक कालम लिख कर विरल उदाहरण निर्मित किया है।

जैन दर्शन के विचारक के रूप में अनेक देशों का प्रवास कर चुके डॉ. कुमारपाल देसाई अभी गुजराती विश्व कोष का भागीरथ कार्य संभाल रहे हैं तथा उसे गुजरात की जीवंत सांस्कृतिक संस्था का रूप दिया है।

आईकेयर फाउण्डेशन के अंतर्राष्ट्रीय डायरेक्टर के रूप में तथा अनुकम्पा ट्रस्ट एवं हेल्थ एण्ड हार्ट केयर सेण्टर के ट्रस्टी के रूप में आपने मानवसेवा के कार्य किये हैं। आपके सभी सेवा कार्यों के लिये वर्ष 2004 में भारत के राष्ट्रपति ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने आपको पद्मश्री से सम्मानित किया। साहित्य, शिक्षण, धर्मदर्शन, पत्रकारिता, विदेश प्रवास, मानवसेवा तथा गुजरात विश्वकोष के सर्जन द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में डॉ. कुमारपाल देसाई ने गुजरात की प्रतिभा की सुवास प्रसारित की है।

कुमकुम सने पगलिये

अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् का राष्ट्रीय अधिवेशन

रतलाम। समाज में मान-मर्यादा, अनुशासन और संस्कारों के अभाव को दूर करने के लिए युवा संकल्पित हों। हमारे पूर्वजों ने जो सामाजिक व्यवस्थाएँ बनाई थी, उनको तोड़ना सामाजिक ताने-बाने के लिए उचित नहीं है। परम्परा और संस्कारों की रक्षा के लिए आगे आकर देश की तरुणाई-युवा अपनी जिम्मेदारी निभाएं।

यह आह्वान जयन्तसेन धाम में, लोकसन्त आचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. ने अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद्, महिला परिषद् एवं तरुण परिषद् के दो दिवसीय संयुक्त राष्ट्रीय अधिवेशन का शुभारम्भ करते हुए किया। समारोह में अ.भा. त्रिस्तुतिक जैन श्रीसंघ के राष्ट्रीय परामर्शदाता, चातुर्मास आयोजक व राज्य योजना आयोग उपाध्यक्ष श्री चेतन्य काश्यप, श्रीसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री वाघजीभाई वोरा, पूर्व सांसद श्री पुष्प जैन (पाली), म.प्र. के ऊर्जा मंत्री व परिषद् के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री पारस जैन व परिषद् के राष्ट्रीय परामर्शदाता श्री शांतिलाल रामाणी अतिथि रहे। समारोह की अध्यक्षता राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रमेशभाई धरू ने की। श्रीसंघ के महामंत्री श्री सुरेन्द्र लोढ़ा, महिला परिषद् राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. श्रीमती अंगूरबाला सेठिया, पूर्व अध्यक्ष डॉ. श्रीमती कोकिला भारतीय, श्री ओ.सी. जैन व

तरुण परिषद राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री बरबोटा आदि मंचासीन रहे।

उड़ी के शहीदों को श्रद्धांजलि

लोकसंतश्री जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. ने देशभर से आए परिषद् पदाधिकारियों व सदस्यों ने काश्मीर के उड़ी के शहीदों को नवकार महामंत्र का जाप कर श्रद्धांजलि अर्पित की। लोकसंतश्री ने देश के लिए त्याग करने हेतु सदैव तैयार रहने का आह्वान किया और कहा कि जीवन में अनुशासन बहुत आवश्यक है। इसी से स्वयं तथा संस्था की उन्नति होती है। उन्होंने युवाओं से कहा कि पश्चिमी जीवनशैली से जो विसंगतियां और विकृतियां हमारे बीच पनपी हैं, उनको समाप्त करें। घर-परिवार में बड़ों का मान-सम्मान करें, मर्यादाओं का पालन करते हुए आदर्श सामाजिक जीवन की ओर अग्रसर हों।

परिवारों का विखण्डन बड़ी चुनौती - श्री काश्यप

अधिवेशन आयोजक चेतन्य काश्यप ने कहा कि परिवारों का विखण्डन, संस्कारों की कमी और सामाजिक मूल्यों का ह्रास वर्तमान समय की सबसे बड़ी चुनौती है। समाज में स्वतंत्रता के बाद स्वच्छंदता आई और अब समानता की बात हो रही है, लेकिन स्वच्छंदता का अर्थ अनुशासनहीनता नहीं होना चाहिए। परिवारों का विखण्डन जैन समाज नहीं पूरे देश के लिए गंभीर समस्या है। तलाक बढ़ रहे हैं, युवाओं को सोचना होगा और परिषद् के माध्यम से समाज को नई दिशा देना होगी। परिषद् आज जैन समाज की सबसे बड़ी सुगठित

संस्था है। अधिवेशन में देश के विभिन्न प्रांतों के 60 से अधिक ग्रामों, नगरों से आए करीब 130 शाखाओं के दो हजार से अधिक प्रतिनिधियों का स्वागत करते हुए श्री काश्यप ने कहा कि लोकसन्तश्री की निश्रा में परिषद् के राष्ट्रीय अधिवेशन से समाज में कार्य करने वाले नवयुवकों, तरुणाईयों और महिलाओं में नवप्रेरणा का संचार होगा, जिससे जैन दर्शन जन-जन का दर्शन बनेगा और संगठन के कार्यों को नई ऊंचाईयां प्राप्त होगी।

परिषद् ने नई ऊँचाईयां दी- श्री वोरा

श्रीसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष वाघजीभाई वोरा ने सभी से उत्तरोत्तर आगे बढ़ने का संकल्प लेकर संस्था के कार्यों को तत्परतापूर्वक अंजाम देने का आह्वान करते हुए कहा कि श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद्, त्रिस्तुतिक जैन समाज का ऐसा संगठन है जो अपने सेवा कार्यों से लगातार समाज को नई ऊंचाईयां दे रहा है। काश्यप परिवार द्वारा रतलाम चातुर्मास के इस सफलतम आयोजन में अधिवेशन स्वर्णिम अक्षरों में अंकित हो गया है।

समय के साथ चिन्तन परिष्कृत हो- श्री जैन

पूर्व सांसद पुष्प जैन ने कहा कि जैन दर्शन ने विश्व को दिशा दी है। हम सौभाग्यशाली हैं कि सम्पूर्ण विश्व को अहिंसा का पैगाम देने वाले भगवान महावीर स्वामी के हम उपासक हैं। उन्होंने समाज के गौरवशाली इतिहास को रेखांकित करते हुए कहा कि अनुशासन और संस्कारों के साथ समय के अनुरूप अपने चिन्तन को परिष्कृत करना आवश्यक है।

परिषद् के कार्यों की सुवास फैली

ऊर्जा मंत्री श्री पारस जैन ने

कहा कि गुरुदेव श्री यतिन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. ने परिषद् के रूप में जो पौधा रोपा था, वह आज आचार्यश्री की निश्रा में वटवृक्ष के रूप में फलीभूत हो चुका है। परिषद् के कार्यों की सुवास चारों ओर फैल रही है। परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश भाई ने गत तीन वर्षों में जाने-अनजाने में हुए अविनय के लिए क्षमायाचना करते हुए कहा कि परिषद्, श्रीसंघ के मार्गदर्शन में कार्य करने वाली संस्था है, जिससे समाज का हर वर्ग सक्रिय रूप से जुड़कर गुरुदेव के संकल्प को पूर्ण करने के लिए प्रतिबद्ध है। महिला परिषद् अध्यक्ष डॉ. अंगूरबाला सेठिया ने बताया कि परिषद् की 24 नई शाखाओं का गठन करते हुए स्नेह, सामंजस्य और समन्वय के साथ संस्था कार्यरत है। राष्ट्रीय महामंत्री अशोक श्रीश्रीमाल ने तीन वर्षीय कार्यों का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। तरुण परिषद् महामंत्री राजीव पटवा ने प्रतिवेदन रखा।

काश्यप परिवार का अभिनन्दन

अधिवेशन में सफल चातुर्मास आयोजन के लिए चेतन्य काश्यप, श्रीमती तेजकुंवरबाई काश्यप व श्रीमती नीता काश्यप का परिषद् परिवार की ओर से शॉल, श्रीफल, अभिनन्दन पत्र एवं स्मृति चिन्ह भेंटकर मंचासीन अतिथिगण की उपस्थिति में अभिनन्दन किया गया। अभिनन्दन पत्र का वाचन राष्ट्रीय उपाध्यक्ष रमेश धाड़ीवाल ने किया। गुजरात के अध्यक्ष श्री अरविन्द देसाई, राजस्थान के अध्यक्ष श्री बाबूलाल कटारिया आदि उपस्थित रहे। भरतपुर ट्रस्ट और म.प्र. इकाई ने भी श्री काश्यप का बहुमान किया। प्रदीप ढालावत तथा साध्वीजी से केशलोचन करवाने वाली चार वर्षीय बालिका लवि-लखन भण्डारी का बहुमान चेतन्य काश्यप व अतिथिगण ने किया।

अधिवेशन की शुरूआत में लोकसंतश्री

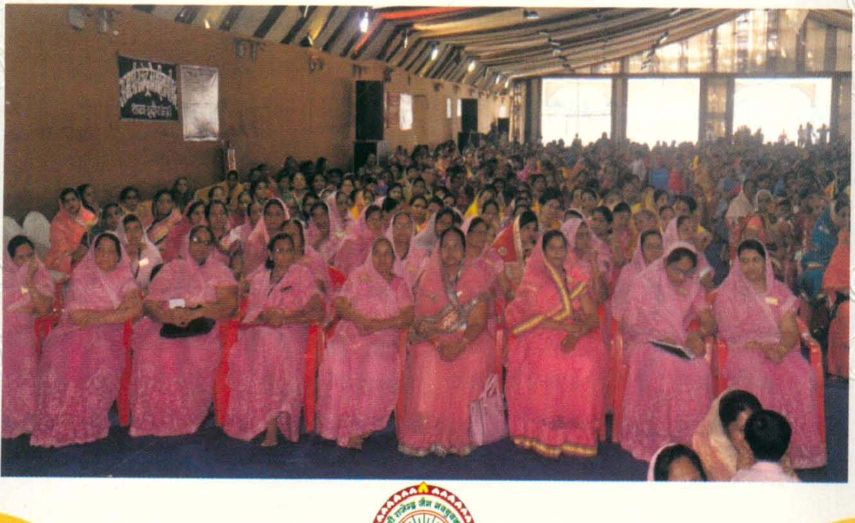

की निश्रा में प्रातः परिषद् की संयुक्त प्रभात फेरी बैण्डबाजे के साथ निकाली गई। जिसमें वरिष्ठ मुनिराज श्री नित्यानन्द विजयजी, मुनिमण्डल व साध्वीवृन्द भी शामिल हुए। ध्वजारोहण अतिथियों की उपस्थिति में किया गया। परिषद् स्मारिका, पुस्तक द्वीदल, जिनेन्द्र चौबीसा व पर्युषण पाठ्यक्रम का विमोचन हुआ।

दोपहर सत्र में परिषद् की तीनों इकाईयों के शाखा प्रतिनिधियों ने अपने कार्यों का प्रतिवेदन व आगामी योजनाओं की जानकारी दी। धार्मिक, सामाजिक, जनकल्याण, सेवा प्रकल्प व जीवदया के क्षेत्र में श्रेष्ठता के तीन पुरस्कारों में सर्वश्रेष्ठ तरुण परिषद् शाखा डीसा (गुजरात), द्वितीय राजगढ़ (म.प्र.), तृतीय सूरत (गुजरात) को पुरस्कृत किया गया। इसके अतिरिक्त 20 अन्य तरुण परिषदों को अपने-अपने क्षेत्र में श्रेष्ठ सेवा प्रकल्पों के संचालन हेतु पुरस्कृत किया गया। वहीं सामायिक के क्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ महिला परिषद् शाखा सूरत प्रथम, द्वितीय उज्जैन नमक मण्डी शाखा, तृतीय अहमदाबाद शाखा को तथा शिक्षा के क्षेत्र में कुशलगढ़ शाखा, सर्वाधिक उपस्थिति रतलाम शाखा तथा सक्रिय रूप में सामायिक क्षेत्र में महिला परिषद शाखा खाचरौद को पुरस्कृत किया गया। सत्र के दौरान लोकसन्तश्री के साथ मुनिराजश्री चारित्ररत्न विजयजी, श्री निपुणरत्न विजयजी ने सभी परिषदों को आशीर्वचन प्रदान किए। तरुण परिषद् के सत्र में राष्ट्रीय संयोजक समिति का गठन किया गया, जिसमें गुजरात से पक्षाल कोरडिया, करण मोरखिया, केयूर डोसी, म.प्र. से हर्ष बाफना, पवन कटारिया, आदित्य धोका, वैभव गादिया, आदित्य भटेवरा, राजस्थान से अवि मोदी, बीजापुर से किरण वाणीगोता के नामों की घोषणा की गई। निवृत्तमान अध्यक्ष अभय बरबोटा ने सभी को बधाई दी।

परिषद् के दो दिवसीय राष्ट्रीय अधिवेशन का समापन 25 सितम्बर को हुआ। प्रथम सत्र में प्रातः 8.00 बजे लोकसन्तश्री व मुनि भगवन्तों के आशीर्वचन, मार्गदर्शन एवं राष्ट्रीय पदाधिकारियों के उद्बोधन पश्चात दोपहर सत्र में शाखाओं से प्राप्त विभिन्न प्रस्तावों पर चर्चा की गई। नवीन राष्ट्रीय कार्यकारिणी का गठन कर श्रेष्ठ नवयुवक परिषद् शाखाओं को पुरस्कृत किया गया।

जयन्तसेन म्युजियम में होगा मंदिर निर्माण

जयन्तसेन धाम में लोकसंतश्री ने मोहनखेड़ा स्थित जयन्तसेन म्युजियम में सीमंधर स्वामी जिनमंदिर और पालीताणा में यतीन्द्र भवन विहार धाम बनाने के खनन मुहूर्त प्रदान किए। इससे पूर्व विभिन्न ट्रस्टों ने रतलाम में ऐतिहासिक चातुर्मास आयोजित करने पर चातुर्मास आयोजक व राज्य योजना आयोग उपाध्यक्ष चेतन्य काश्यप का अभिनन्दन किया। लोकसंतश्री ने परमार्थ के कार्य करते रहने की प्रेरणा दी।

रतलाम के लालचन्द, रतनलाल सुराना परिवार ने जयन्तसेन म्युजियम मोहनखेड़ा में भगवान सीमंधर स्वामी जिनमंदिर निर्माण का लाभ लिया एवं खनन (भूमिपूजन) का मुहूर्त प्रदान करने की विनती की, जिस पर 10 नवंबर 2016 का मुहूर्त प्रदान किया गया। मोहनखेड़ा में स्थित श्री जयंतसेन म्युजियम के नजदीक जल्द ही श्री सीमंधरस्वामी भगवान का विशाल शिखरीय मंदिर बनेगा। यह भव्य मंदिर करोड़ों की लागत से तैयार होगा । बड़ी बात यह है कि इसका निर्माण 365 दिन के भीतर करने का प्रयास किया जाएगा। इसी प्रकार पालीताणा में भवन निर्माण के लिए 16 जनवरी 2017 का मुहूर्त प्रदान किया गया। राज राजेन्द्र श्वेताम्बर जैन तीर्थ दर्शन पब्लिक चेरिटेबल ट्रस्ट और राज राजेन्द्र जयन्तसेन मिलापचन्द चौधरी ट्रस्ट ने चातुर्मास आयोजक का सम्मान कर रतलाम चातुर्मास को अविस्मरणीय बताया। ट्रस्ट के मिलापचन्द चौधरी, मुकेश जैन, वीरेन्द्र राठौर, राजेन्द्र दंगवाड़ा, प्रकाश तलेसरा, धर्मचंद वोरा, मोतीलाल हरण, राजेन्द्र भंडारी, दिनेश मामा आदि मौजूद थे।

जिले में प्रतिष्ठा के मुहूर्तों की धूम

आचार्यश्री से प्रतिष्ठा का मुहूर्त लेने जिले के कई श्रीसंघ जयन्तसेन धाम पहुंचे। नामली, सरसी, जावरा और पिपलौदा के जिनमंदिरों में प्रतिष्ठा के मुहूर्त घोषित होते ही वातावरण में हर्ष और उल्लास छा गया। केशरिया-केशरिया गूंज करते हुए श्रीसंघ प्रतिनिधियों ने उत्साह और उल्लास प्रदर्शित किया।

लोकसंतश्री ने नामली के श्री सुमतिनाथ जिनालय में 16 नवंबर बुधवार सरसी के श्री कुंथुनाथ जिनालय में 19 नवंबर शनिवार, जावरा के श्री पार्श्वनाथ जिनालय श्री राजेन्द्रसूरि वाटिका में 25 नवंबर मंगलवार और पिपलौदा के श्री पार्श्वनाथ जिनालय श्री राजेन्द्रसूरि दादावाड़ी में 5 दिसंबर 2016 बुधवार को प्रतिष्ठा के मुहूर्त प्रदान किए। इससे पूर्व श्रीसंघों के प्रतिनिधियों इन्दरमल दसेड़ा, जयन्त डांगी, श्रेणिक चत्तर आदि ने मुहूर्त प्रदान करने और 27 नवंबर रविवार को गच्छाधिपतिश्री का जन्मोत्सव मनाने की अनुमति प्रदान करने की विनती की। प्रतिष्ठा के मुहूर्तों के साथ जन्मोत्सव पर आचार्यश्री के जावरा में रहने की घोषणा की गई।

खाचरौद में आचार्यश्री की प्रेरणा से स्थापित श्री राज राजेन्द्र जयन्तसेन विद्यापीठ के ट्रस्टी, प्राचार्य और शिक्षक-शिक्षिकाओं ने आशीर्वाद लिया। श्री राजेन्द्र जैन धार्मिक पाठशाला राजगढ़ के विद्यार्थियों ने तरुण परिषद् राष्ट्रीय संचालन समिति सदस्य हर्ष बाफना के नेतृत्व में दर्शन-वन्दन कर आशीष लिया। उन्हें संबोधित करते हुए लोकसंतश्री ने कहा कि वर्तमान शिक्षा पद्धति ने भले ही शिक्षाकर्मी बना दिए हों, लेकिन प्राचीनकाल से शिक्षकों को गुरुजन के रूप में वंदनीय और सम्माननीय माना गया है।

दिव्यांगों ने लिया आशीर्वाद

जनचेतना परिषद् द्वारा संचालित मूकबधिर विद्यालय के 50 से अधिक दिव्यांग छात्र-छात्राओं ने आचार्यश्री के दर्शन-वंदन कर आशीर्वाद लिया। विद्यार्थियों ने लोकसंतश्री के समक्ष अपनी अभिनव सांस्कृतिक एवं योग की प्रस्तुतियां भी दी। आचार्यश्री ने संस्था को सहयोग एवं सेवा प्रदान करने वाले चेतन्य काश्यप परिवार की सेवा भावों की अनुमोदना की। आचार्यश्री ने कहा कि परमात्मा की कृपा से सभी दिव्यांग बालक शारीरिक तकलीफ से मुक्त होंगे। इस अवसर पर संस्थाध्यक्ष एम.एल. दुबे, प्राचार्य सतीश तिवारी, उपाध्यक्ष डॉ. लीला जोशी, सुषमा श्रीवास्तव व श्रीमती गीता पोरवाल एवं संरक्षिका श्रीमती नीता काश्यप की उपस्थिति में चातुर्मास आयोजक परिवार की ओर से श्री दुबे का बहुमान सिद्धार्थ काश्यप ने किया।

साध्वीश्री के दीर्घ तप का पारणा

साध्वीश्री राजयशाश्रीजी म.सा. के 31 उपवास (मासक्षमण) का पारणा 29 सितम्बर को हुआ। साध्वीजी के सांसारिक परिजन रमेश भाई लक्ष्मीचंद भण्डारी सियाणावाला (बैंगलरू) सहित करवड़, अहमदाबाद, खाचरौद आदि नगरों के श्रीसंघ प्रतिनिधियों ने उपस्थित होकर तप अनुमोदना की। मासक्षमण तपस्वी सुनील पालरेचा गजनीखेड़ीवाला ने भी लोकसंतश्री से प्रत्याख्यान लिए। दादा गुरुदेव की आरती का लाभ कांतिलाल राजकमल रितिक दुगड़ ने लिया।

नवपद ओली की आराधना

रतलाम। लोकसंत, आचार्य गच्छाधिपति श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. की निश्रा में 8 अक्टूबर से शाश्वती सिद्धचक्र नवपद ओलीजी की आराधना शुरू हुई। जयन्तसेन धाम में इस आराधना का क्रम 16 अक्टूबर तक चला। जिसमें लोकसंतश्री ने धर्म को कल्याण का मार्ग बताते हुए कहा कि मानव जीवन को सार्थक करने के लिए हर व्यक्ति को धर्म करना चाहिए। इस दौरान प्रदेश संगठन महामंत्री श्री सुहारा भगत, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ प्रांत प्रचारक श्री पराग अभ्यंकर के साथ भाजपा संभागीय संगठन महामंत्री प्रदीप जोशी, पिछड़ा वर्ग प्रकोष्ठ के प्रदेश महामंत्री राकेश डागोर, जिला प्रचारक भालचन्द्र तारे, जिला भाजपा अध्यक्ष बजरंग पुरोहित, उपाध्यक्ष मनोहर पोरवाल व जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक के अध्यक्ष अशोक चौटाला ने लोकसंतश्री के दर्शन-वंदन कर आशीर्वाद प्राप्त किया।

लोकसंतश्री को अखिल भारतीय पोरवाल शोध समिति संयोजक अशोक सेठिया व अखिलेश गुप्ता ने पोरवाल इतिहास का ग्रंथ भेंट किया। उन्होंने बताया कि 500 पृष्ठ की इस ग्रंथ की प्रस्तावना लोकसंतश्री के द्वारा लिखी गई है। इस दौरान मंजूला सेठिया, मधु गुप्ता सहित समाजजन उपस्थित थे।

नारियल जैसा है संयम जीवन- मुनिराजश्री

नारियल बाहर से कठोर होकर अच्छा दिखाई नहीं देता, लेकिन अंदर से काफी नरम होकर उपयोगी रहता है। संयम जीवन भी ऐसा है, जो ऊपर से भले ही कठिन दिखाई देता है लेकिन अंदर से उसके परिणाम आत्मकल्याण करने वाले होते हैं। यह बात मुनिराजश्री निपुणरत्नविजयजी म.सा. ने कही। जयन्तसेनधाम में उपस्थित श्रद्धालुओं को उत्तराध्ययन सूत्र का वाचन करते हुए उन्होंने कहा कि संसार बाहर से भले ही आकर्षित करता है, लेकिन इसके आंतरिक परिणाम ठीक नहीं होते हैं। मनुष्य जीवन में पाप करना सरल है, लेकिन धर्म करना कठिन है। प्रभु का शासन कहता है कि मनुष्य जीवन दुर्लभ है, इसलिए आत्मा के प्रति चेतन्य होकर इसे जीयें। इस मौके पर अलकापुरी जैन महिला मण्डल द्वारा चातुर्मास आयोजक व राज्य योजना आयोग उपाध्यक्ष चेतन्य काश्यप परिवार की वरिष्ठ श्रीमती तेजकुंवरबाई काश्यप का अभिनन्दन किया गया। दादा गुरुदेव की आरती का लाभ इन्दरमल हजारीमल कांकरिया विजयवाड़ा वाले ने लिया।

सम्यक् ज्ञान के बिना नहीं होती सुंदर गुणों की प्राप्ति - मुनिराजश्री

लोकसंतश्रीजी की निश्रा में चतुर्थदिन सिद्धचक्र नवपद ओलीजी की आराधना में मुनिराजश्री निपुणरत्नविजयजी म.सा. ने श्रद्धालुओं को संबोधित करते हुए कहा कि सम्यक ज्ञान के बिना जीवन में सुन्दर गुणों की प्राप्ति नहीं हो सकती। सम्यक ज्ञान की प्राप्ति उपाध्याय के सान्निध्य में ही होती है।

मुनिराजश्री ने कहा कि जमीन, बीज, पानी, खाद आदि होने पर भी जैसे बिना किसान के खेती नहीं होती, वैसे ही बिना उपाध्याय के सद्गुणी फसल नहीं हो सकती। इसलिए उपाध्याय पद की आराधना एक दिन तक सीमित नहीं रखकर प्रतिदिन करते हुए कुछ समय ज्ञान प्राप्ति में व्यतीत करना चाहिए। इससे मानव जीवन को सार्थकता मिलेगी। श्रीपाल रास का वाचन करते हुए मुनिराजश्री ने महिलाओं से सहनशील बनने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि बेटियां दो कुलों को रोशन करती हैं, लेकिन सहनशीलता के अभाव में कितने ही घर बिगड़ रहे हैं। प्रवचन के अन्त में दादा गुरुदेव की आरती का लाभ बक्तावरमलजी हरण मदुरई वाले ने लिया।

आराधना के पांचवें दिन मुनिराज ने श्रमण जीवन का महत्व बताया। उन्होंने कहा कि श्रमण जीवन मोक्ष जाने का राजमार्ग है। श्रमण बनने का भाव जो व्यक्ति रखता है, वो ही श्रावक होता है। संयम का जीवन केवल मनुष्य को ही प्राप्त होता है। अरिहंत, सिद्ध, आचार्य व उपाध्याय बनने वाले को भी सर्वप्रथम साधु बनना पड़ता है। साधु वहीं होता है, जो जीव मात्र के प्रति दया का भाव रखता है।

पूज्य गुरुदेव एवं आमंत्रित अतिथिगण

रेवतड़ा श्रीसंघ सदस्यों के साथ मातुश्री
श्रीमती तेजकुंवर बाई काश्यप

श्री जयंत ज्योति के संपादक बनने के पश्चात्
पूज्य लोकसंतश्री से आशीर्वाद लेते हुए
श्री सुधीरजी लोढ़ा

विभिन्न श्री संघों को मुहूर्त प्रदान
करते हुए लोकसंत श्री

रेवतड़ा श्रीसंघ सदस्यों को प्रतिष्ठा का
मुर्हूत प्रदान करते हुए।

अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद

राष्ट्रीय पदाधिकारी/कार्यकारिणी

रतलाम-अधिवेशन 2016

संस्थापक : पूज्य गुरूदेव श्रीमद्विजय यतिन्द्र सूरीश्वरजी म.सा.

आशीर्वाद दाता : पूज्य गुरूदेव श्रीमद्विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा.

मार्गदर्शन – श्री शांतीलाल रामाणी, नैल्लौर
अध्यक्ष – श्री रमेशभाई धरू, मुम्बई
वरिष्ठ उपाध्यक्ष – श्री ओ.सी.जैन, बैंगलोर
महामंत्री – श्री अशोक श्रीश्रीमाल, इन्दौर
उपाध्यक्ष – श्री पारस जैन, उज्जैन
– श्री जावन्तराज वाणीगोता, बीजापुर
उपाध्यक्ष – श्री नवीन बल्लु, मुम्बई
उपाध्यक्ष – श्री सुशील गिरिया, उज्जैन
उपाध्यक्ष – श्री राजेन्द्र दंगवाड़ा, बड़नगर
कोषाध्यक्ष – श्री धरमचन्द्र बोहरा, इन्दौर
सह-कोषाध्यक्ष – श्री सुनील बाठिया, इन्दौर
राष्ट्रीय मंत्री – श्री प्रकाश हिराणी, बैंगलोर
राष्ट्रीय मंत्री – श्री दिनेश मामा, राजगढ़
राष्ट्रीय मंत्री – श्री अतुल अढ़ाणी, सूरत
सह मंत्री – श्री चेतन वैदलिया, डीशा
सह मंत्री – श्री रवि मोदी, निम्बाहेड़ा
सह मंत्री – श्री कमलेश काकड़ीवाला, अलिराजपुर
सह मंत्री – श्री भरतभाई बबलदास व्होरा, अहमदाबाद
सह मंत्री – श्री राजकमल दुग्गड़, रतलाम
शिक्षामंत्री – श्री भारत भाई बाघजी भाई व्होरा, मुम्बई
सह-शिक्षामंत्री – श्री संजय मेहता, झाबुआ
जनकल्याण मंत्री–श्री सुशील छाजेड़, रतलाम
पर्यावरण मंत्री – श्री अनिल दसेड़ा, जावरा
मीडिया प्रभारी – श्री ब्रजेश बोहरा, नागदा
अल्पबचत मंत्री – श्री प्रकाश तलेसरा, पारा
प्रचार मंत्री – श्री शांतीलाल गोखरू, बड़नगर
सह प्रचार मंत्री – श्री अनिल वागरेचा, खाचरौद
संगठन मंत्री – श्री शशांक लुणावत, रिंगनोद
सह संगठन मंत्री–श्री प्रवीण डुंगरवाल, नयागांव

कार्यकारिणी सदस्य

श्री अमृतलाल जैन, मैंसूर
श्री ललित जैन, हुबली
श्री सुरेश तलावत, राजमेन्द्री
श्री प्रकाश दान्तेवाड़िया, राजमेन्द्री
श्री सुरेश कोठारी, टांडा
श्री माणकलाल छाजेड़, महिदपुर
श्री डॉ. निर्मल मेहता, रतलाम
श्री भाविक भाई माजनी, अहमदाबाद
श्री आशीष जैन, बाग
श्री तरूण चौपड़ा, नामली
श्री संजय डुंगरवाल, आलोट
श्री महावीर जैन, बदनावर
श्री भरत कोठारी, कोसेवाल, मुम्बई
श्री विजय सुराणा, दलोदा
श्री नलीन संघवी, नागपुर
श्री पंकज भण्डारी, मेघनगर
श्री दिलीप लुक्कड़, अंजड
श्री अजयसिंह चौधरी, नीमच
श्री मनोज नांदेचा, नागदा, उज्जैन
श्री जगदीश भाई, डीसा
श्री कांतिलाल डामरानी, दिल्ली
श्री जेठमल भंडारी, विजयवाड़ा
श्री उमेश बाबूलाल पिचा, थांदला
श्री कमलेश कावडिया, कुशलगढ़

पांथेडी चातुर्मास में मची तप-त्याग की धूम

पांथेडी। साध्वीजी श्री शासनलता श्रीजी म.सा. एवं साध्वीजी श्री अनेकान्त लताश्रीजी म.सा. आदि ठाणा 13 का चातुर्मास पांथेडी नगर में होने से राजस्थान दियावट्ट पट्टी पांथेडी नगर तपोमय, ज्ञानमय, भक्तिमय बन गया। पांथेडी नगर में प्रतिवर्ष वर्षा तो बरसती ही है लेकिन इस वर्ष प्रभु की कृपा से जिनवाणी की अमृत वर्षा का योग बना जिससे हमारी नगरी में एक नये इतिहास का सर्जन हुआ।

सान्निध्य कितना समर्थ हो सकता है उसका अनुभव हमें हुआ। पूज्या गुरुवर्यां जब से पधारीं तब से लेकर घर में बाल, युवान, वृद्ध भाई-बहिनों में अपूर्व भावोल्लास का जागरण हुआ। भावोल्लास की तरंगें दिन दुगुनी रात चौगुनी बढ़ती गईं। हृदय परिवर्तन के अखण्ड दीपक को प्रज्ज्वलित किया गया। अद्भुत तात्त्विक एवं सुमधुर प्रवचनों द्वारा हमें जिनशासन के तत्त्व की समझ से श्रद्धा का बल प्राप्त हुआ। हमारा प्रवचन मण्डप प्रतिदिन बढ़ते ज्ञान पिपासुओं के कारण छोटा पड़ने लगा।

पर्युषण पर्व के कर्त्तव्य स्वरूप एवं तपस्वियों के अनुमोदना स्वरूप राजवाड़ी, बादशाही भव्यातिभव्य रथयात्रा, तपयात्रा, शोभायात्रा निकाली गई। पांथेडी नगर के अन्दर चैत्यपरिपाटि का आयोजन भव्य रूप से किया गया।

भाद्रवा सुद छठ के दिन प्रातः काल में संघ ने प्रस्थान किया संघपति बनकर भाग्यशाली परिवार ने अनुपम लाभ लिया। जिसमें तोपों के द्वारा पुष्पवृष्टि की गई, 1 हाथी, 4 घोड़े, 4 रथ, 4 ऊँट, शहनाई, बैंडबाजा, ढोल-नगाडे के साथ 1 कि.मी. का वरघोड़ा चला। मासक्षमण-सिद्धितप अट्ठाई आदि तपस्यावालों ने पैदल यात्रा की। छः बजे निकला छरीपालित संघ 8 बजे उन्नडी (राज नगर) दस किलोमीटर चलकर वहाँ के संघ ने सामैया सहित भव्य प्रवेश करवाया। चैत्य प्रवासी पौषणा नगर पहुँची। वहाँ भव्य स्वागत हुआ। देवदर्शन, व्याख्यान, स्वामी वात्सल्य रखा।

पांथेडी नगर में रत्नत्रयी आराधना का त्रिवेणी संगम हुआ। चातुर्मास के अंदर ज्ञान-ध्यान, तप-त्याग की झड़ी लग गई है। प्रातः काल में शहनाई की सुरावली में जागृत होना तथा उपाश्रय में जाकर प्रतिक्रमण 6 बजे भक्तामर के लिए प्रस्थान शहनाई के साथ गुरुवर्या श्रवण, गुरु गुण इक्कीसा, सामूहिक सामायिक बहनों के लिए, 4 बजे भाइयों के लिए सूत्र अर्थ क्लास तथा शाम को प्रतिक्रमण रूप दैनिक क्रिया चलती थी। प्रति मंगलवार दोपहर में 2 से 4 बजे तक महिला शिविर तथा रविवार को 2 से 4 बजे तक परिवार शिविर का आयोजन किया। जिसमें संतानों, माता-पिता, भाई-बहन के कर्त्तव्यों का ज्ञान करवाया गया।

250 प्रश्नों की परीक्षा का आयोजन किया गया। प्रतिदिन व्याख्यान में व्याख्यान सम्बन्धी प्रश्न पूछे जाते थे। बाल शिविर, युवा शिविर और युवती शिविर का भी आयोजन किया गया।

गुरुवर्या के प्रवेश से ही तपाराधना की धूम मची थी। प्रवेश के दिन अनेक लोगों ने आयंबिल किया। चातुर्मासिक मांगलिक आराधना के निमित्त शंखेश्वर पार्श्वनाथ के जाप सहित अट्ठम करवाए गए जिसमें साध्वीजी ज्योतिलता श्री म.सा. सहित दो बहनों ने मासक्षमण चालू किया।

साध्वीजी श्री यशोलताश्रीजी ने भद्रतप, साध्वी वीतरागलताश्रीजी, सा. परमेष्ठीलताश्रीजी, सा. संभवलताश्रीजी, सा. ह्रींकारलताश्रीजी ने सिद्धितप की महान तपस्या की।

सामूहिक तपस्या के अन्तर्गत सिद्धितप, 36 उपवास, मासक्षमण, 21, 16, 15, 11, 10, 9 उपवास, अट्ठाई में प्रायः 300 आराधकों ने भाग लिया। जीरावला पार्श्वनाथ के अट्ठम तथा जाप करवाए। चंदनबाला के अट्ठम में चंदनबाला का स्टेज प्रोग्राम हुआ।

नवकार महामंत्र के एकासने करवाए और पारणे के दिन तपस्वियों का वरघोड़ा निकाला गया। आराधना के अंतर्गत 68 तीर्थों की भावयात्रा 5 दिन में पूर्ण की संप्रति महाराजा, कुमारपाल, आमराजा आदि बनाकर घर से रथ में बैठाकर बाजेगाजे के साथ संघपति का प्रवेश करवाते थे। संगीत के साथ यात्रा का आनंद लेते लोग झूम उठते थे। एक दिन नवकार राउण्ड जाप 108 मेम्बर सहित 3 घण्टे चला। नवलाख नवकार का जाप तीन दिन चला। सवा करोड़ नवकार का जाप 68 दिनों तक चला जिसमें प्रतिदिन कलश और नवकार पट लाजते गाजते 1-1 के घर ले जाते और उनके घर 50 माला 'नमो अरिहंताणं' पद की सभी भाग्यशाली गिनते और दोनों टाइम आरती उतारते थे। नवकार आराधना और पर्व पर्युषण में रात्रि को भक्ति संगीतकारों ने की। प्रत्येक कार्यक्रम चाहे भावयात्रा हो या भक्ति हो स्टेज प्रोग्राम हो या पूजा हो 3-3 लक्की ड्रा कूपन भाग्यभक्ति का आयोजन श्रीसंघ की तरफ से किया गया।

'भक्तामर अभिषेक' में अखंड धारा से प्रभु का अभिषेक तथा 1-1 गाथा से अष्टप्रकारी पूजा की गई। श्री गिरनार तीर्थ की गौरव गाथा का कार्यक्रम रखा गया। आँखों में आँसू के साथ सभी ने वर्ष में एक बार गिरनार यात्रा का नियम लिया।

पर्व पर्युषण में अष्टान्हिका, कल्पसूत्र और बारसासूत्र श्रवण के साथ प्रथम दिन दोपहर में धन्नाशाल्लिद्र का भव्य चढ़ावों के साथ रखा गया तथा 99 पेटीयां उतारी गईं। दूसरे दिन 18 हजार मुनि वंदना कृष्ण महाराजा बनकर करवाया तथा तीसरे दिन पुणिया श्रावक की सामायिक स्टेज प्रोग्राम सहित हुई। अट्ठाई महोत्सव के दौरान रात्रि में भक्ति के अन्दर 'जिनशासन के चमकते सितारे कवि सम्मेलन', संयम बिना नहीं उद्धार, पाठशाला तु ही तारणहार, बेटी कहीं भाग मत जाना आदि कार्यक्रमों में बच्चों ने भरपूर उत्साह से भाग लिया। संवत्सरी के दिन शाम को कुमारपाल महाराजा की आरती उतारी गई।

संयम उपकरण संवेदना में सभी उपकरणों की बोली आराधना में बोली गई चढ़ते भावों से उपकरण लेकर प्रभु के सामने झूमने लगे।

मातृ-पितृ वंदना का स्टेज प्रोग्राम हुआ। जिसमें माता-पिता को उच्च स्थान पर बिठाकर संगीत के साथ दूध से चरण प्रक्षालन, अक्षत वर्धापन, पुष्पार्पण किया गया। संतानों ने अश्रुधारा बहाते हुए माता-पिता की आजीवन सेवा करने का संकल्प लिया।

'आ पापमय संसार छोड़ी श्रवण हुंयारे बनुं' 18 पाप स्थानक की आलोचना करवाई गई। पुद्‌गल वोसिराने की विधि बाल-युवान एवं वृद्धों ने की। पर्व पर्युषण के अन्दर तप की झड़ी लगी हर घर में तपस्या पच्चक्खाण के दिन तो लोगों का पूर आ गया। लगभग 5000 से अधिक पुण्यशाली आत्माओं ने अपनी उपस्थिति देकर भव्यातिभव्य वरघोड़ा निकालकर जिनशासन की प्रभावना की।

सामूहिक पारणा का आयोजन किया गया। राजशाही ठाठ से शहनाई के सुरों के साथ दूध से चरण प्रक्षालन कर पारणा करवाया गया।

पांथेड़ी नगर में प्रथम बार चातुर्मास होने से लोगों के दिल में खुशी का कोई पार नहीं था।

परम पूज्या गुरुमैया श्री कोमललताश्रीजी म.सा. की प्रथम पुण्यतिथि निमित्ते भक्तामर पूजन सत्र त्रिदिवसीय महोत्सव तथा नवपद शाश्वत ओलीजी में उजमणा सहित अष्टान्हिका महोत्सव किया गया।

नगर में राजकीय विश्वविद्यालय में 15 अगस्त स्वतंत्रता दिवस बहुत सुन्दर रूप से मनाया गया। सरपंच तथा विद्यालय के शिक्षकों की विनंती से गुरुवर्या स्कूल प्रांगण में पधारीं। अलग-अलग स्कूलों से कुल 1100 बच्चों का आगमन हुआ तथा अन्य 500 लोग उपस्थित थे सभी ने गुरु मैया का स्वागत किया। वहाँ पर गुरुवर्या ने प्रवचन किया। उपस्थित सभी ने सुबह उठकर माता-पिता के चरण-स्पर्श का नियम लिया। बच्चों को नोटबुक, पेन, मिठाई और नमकीन का वितरण किया।

नव्वाणु यात्रा में विशिष्ट स्नात्र अनुष्ठान

जालोर। साध्वीश्री काव्यरत्नाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा 3 की निश्रा में जालोर में चल रही स्वर्णगिरी तीर्थ की 99 यात्रा के अन्तर्गत रायण पगला के सामने स्नात्र महोत्सव रखा गया। जिसमें सभी यात्रियों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया।

यतीन्द्रसूरीजी म.सा. द्वारा रचित स्नात्र पूजा के कार्यक्रम को बड़े हर्षोल्लास के साथ सबने गाया। इस दौरान प्रभु की आरती और मंगलदीवा का लाभ युवा मंडल ने लिया। शांति स्नात्र का लाभ करिश्मा कानूंगा ने लिया। स्नात्र महोत्सव में आज सबको बड़ा ही आनन्द आया। प्रभु भक्ति के रस में डूबकर भक्ति में झूम उठे। बालिका मंडल ने प्रभु भक्ति के गीत गाए। युवा मंडल का योगदान भी सराहनीय रहा। युवा मंडल द्वारा ऊँचा अंबार थी ओ म्हारा प्रभुजी ना ऊँचा-ऊँचा बेसणा सा आदि भक्ति गीतों पर दीक्षित सोलंकी व रितिक वेदमुथा द्वारा प्रभु के सामने चंवर नृत्य पेश किया गया।

श्री संघ सौरभ

विजयवाड़ा। विजयवाड़ा आंध्रप्रदेश के श्री संभवनाथ राजेन्द्रसूरी जैन श्वेताम्बर ट्रस्ट द्वारा आयोजित शतावधान के भव्य कार्यक्रम में मुनिराजश्री संयम रत्न विजयजी म.सा., मुनिराजश्री भुवनरत्नविजयजी म.सा. एवं साध्वीजी श्री हेमप्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा की पावन निश्रा में त्रिस्तुतिक संघ की प्रथम शतावधानी श्राविका श्रीमती निलिशा अभिषेक सेठिया (पुत्रवधु श्री अभयजी-निर्मलाजी सेठिया, उज्जैन) द्वारा शतावधान की अद्भुत एवं अविस्मरणीय प्रस्तुति दी। चर्तुविध संघ व समाज के वरिष्ठजनों के मध्य दिये गये। इस कार्यक्रम का सफल संचालन श्री अभिषेक सेठिया द्वारा किया गया।

कार्यक्रम के पश्चात् शतावधानी श्रीमती निलिशा सेठिया का बहुमान समाजजनों द्वारा किया गया। प्रवचन के दौरान मुनिराज संयम रत्न विजयजी म.सा. ने बताया कि शतावधानी श्राविका द्वारा सर्वप्रथम बड़नगर चातुर्मास के दौरान आचार्य श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. के पावन सान्निध्य में शतावधान कार्यक्रम की सफल प्रस्तुति दी गई थी। प्रस्तुति के पश्चात् आचार्य भगवंत द्वारा त्रिस्तुतिक समाज की प्रथम शतावधानी की उपाधि से सम्मानित किया गया।

आचार्यश्री के आशीर्वाद एवं प्रेरणा से श्रीमती निलिशा अभिषेक सेठिया ने बड़नगर, थांदला, बिजापुर, चैन्नई, धरमपुर, इंदौर, जोधपुर एवं विजयवाड़ा आदि स्थानों पर अब तक अपनी स्मरण शक्ति का अद्भुत प्रयोग कर शतावधान कार्यक्रम की सफलतम प्रस्तुति दे चुकी है।

कार्यक्रम सम्पन्न

कुक्षी। 62, 63, 64, 65, 66 आयंबिल आराधिका (तपस्विनी) सुश्री सविता बेन द्वारा निरन्तर वृद्धि प्राप्त यह तप एक से एक 100 तक बढ़ते क्रम में निरन्तर करने से चौदह वर्ष तीह माह और 20 (बीस) दिन में पूर्ण वाला यह तप जैन आराधना का प्राण है। उष्मा है सर्वोत्कृष्ट आध्यात्मिक शक्ति है। जो कार्य अन्य मार्गों से सफल नहीं होते वे कार्य तप से सहज हो जाते हैं। तप में आयंबिल तप महामांगलिक व उत्कृष्ट माना गया है। प्रतिवर्ष 5 (पाँच) साल से 20 से 25 आराधक पाये डालते हैं। अभी तक 95 पाये डल चुके हैं। इस वर्ष ओलीजी के 15 (पन्द्रह) पाये डले

और ओलीजी करने वाले 35 आराधक थे और उसमें सविता बहन के तो 250 (ढाई सौ) आयंबिल संलग्न हो चुके हैं और अभी भी बढ़ते कदम की ओर हैं। ओलीजी के समापन का कार्यक्रम बड़ी धूमधाम से मनाया गया। प्रत्येक आराधिका के घर पर चौविसी पूजन, प्रभातियों का कार्यक्रम रखा गया और बड़े

उपाश्रय में अंतिम दिन पाठशाला की बालिकाओं ने सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति दी। तप अनुमोदनार्थ में नवयुवक परिषद के अध्यक्ष श्री सुशीलजी (ठमु), श्री आशीषजी, बीजीएस के धार जिला के अध्यक्ष रविन्द्रजी जैन व अभिनन्दन पत्र का वाचन मनोहरलालजी पौराणिक साहेब ने किया। तपस्विनी निर्मला बहन व सभी तपस्वियों की अनुमोदना की। आयंबिल तप करवाने वाले लाभार्थी परिवार श्री संघवी आनंदीलालजी भंवरलालजी साहेबजी परिवार का बहुमान किया गया व अभिनन्दन पत्र भेंट किया गया। कार्यक्रम का आभार सुश्री सविता बहन ने माना। कार्यक्रम का संचालन पाठशाला की बालिका मनाली जैन ने किया।

तपस्वी की शोभा यात्रा तथा बहुमान

टांडा (धार)। राष्ट्र संत आचार्यश्रीमद् विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. द्वारा श्रावक रत्न से अलंकृत स्व. श्री रतनलालजी श्रीश्रीमाल के पौत्र गौतम निर्मल श्रीश्रीमाल द्वारा कम उम्र में ग्यारह उपवास की उग्र तपस्या कर अपने कर्मों की निर्जरा कर परिवार के साथ समाज एवं गांव का भी गौरव बढ़ाया है। ऐसे प्रेरणादायी तपस्वी की अनुमोदना करते हैं। उक्त विचार तपस्वी गौतम के बहुमान कार्यक्रम में वक्ताओं ने व्यक्त किये।

श्री जैन मंदिर में शासन माता का पूजन कर तपस्वी के निवास मठ गली से द्रव्य शोभा यात्रा नगर के प्रमुख मार्ग से निकली। शोभा यात्रा में बग्गी में तपस्वी की माता शालीनी राजेन्द्रसूरीजी की तस्वीर तथा पिता निर्मल वर्तमान आचार्य जयंतसेनसूरीजी की तस्वीर लिए

कांकरीया खरगोन, श्रीमती शिखा तलेसरा, श्रीमती पारस बेन चौहान, श्रीमती आरती पगारीया, श्री शांतिलाल बाफना, श्री सुशील गोठी, श्री सागरमल चौधरी, श्री प्रकाशचंद्र जैन ने तप अनुमोदनार्थ अपने विचार व्यक्त किये। समाज

आगे एवं पीछे बैठे तपस्वी गौतम सभी को हाथ जोड़ अभिवादन कर रहे थे। ढोल ताशों पर तरुण परिषद के कार्यकर्ता, परिजन भक्ति में मस्त होकर जमकर गरबा, नृत्य आदि करते हुए चल रहे थे। शोभा यात्रा में सबसे आगे भगवान का रथ था। समाजजनों द्वारा घर-घर से भगवान की गहुँली की गई। शोभा यात्रा आराधना भवन में पहुंचकर अनुमोदना सभा में परिवर्तित हो गई। जहाँ श्रीमती सुवर्णा, श्री मनीष जैन ने अनुमोदना गीत प्रस्तुत किया। श्री अशोक श्रीश्रीमाल ने स्वागत उद्बोधन दिया।

श्री पारस जैन, श्री प्रकाशचंद्र

की ओर से तपस्वी के बहुमान के लिए तप की बोली लगाई गई। तपस्वी की बुआ श्रीमती सुशीला बाफना निवासी लाबरीया ने 16 उपवास की बोली बोल गौतम के बहुमान का लाभ लिया।

तरुण परिषद द्वारा भी गौतम का बहुमान किया गया। इस अवसर पर श्रीश्रीमाल परिवार द्वारा पर्युषण पर्व के दौरान प्रतिक्रमण में सूत्र बोलने वाले तरुण रक्षित बाठीया, प्रणय हरण, अमित डुंगरवाल तथा आठ दिन तक सुबह- शाम की नियमित प्रतिक्रमण करने वाले बालक

आशीष जैन सम्मानित

मण्डीदीप। शिक्षक दिवस के दिन म.प्र. के पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री माननीय श्री सुरेन्द्रजी पटवा के द्वारा डॉ. आशीष जैन आचार्य सम्मानित हुए। डॉ. आशीष जैन द्वारा जिला स्तर पर शैक्षिक संगोष्ठी

में भाग लिया गया था, जिसमें उन्होंने अपनी श्रेष्ठ भूमिका का निर्वहन किया एवं उनको जिले स्तर पर सम्मानित करने का निर्णय लिया गया। मात्र 3 वर्ष के शैक्षणिक कार्यकाल के दौरान डॉ. आशीष जैन आचार्य की यह एक बड़ी उपलब्धि है कि उनको एक अच्छे शिक्षक के रूप में जिला स्तर पर मंत्री महोदय द्वारा सम्मानित किया गया। वर्तमान डॉ. आशीष जैन आचार्य, शासकीय उत्कृष्ट विद्यालय, बेगमगंज में वरिष्ठ अध्यापक के पद पर पदस्थ हैं, जहाँ उनकी सक्रियता से अनेक नवीन कार्यों एवं नवाचार के लिए श्रेष्ठ उपक्रम प्राप्त होता रहता है।

कुक्षी। नगर स्थित तिर्थाधिपति श्री शान्तिनाथ प्रभु के बिम्ब के 525 वर्ष पूर्ण होने तथा बड़ा मंदिर जीर्णोद्धार के 200 वर्ष पूर्ण होने का दुर्लभ अवसर कुक्षीवासियों को सुलभ प्राप्त हुआ।

दिनांक 1,2,3 अक्टूबर 2016 को नगर में आयोजित उत्सव में श्री शान्तिस्नात्र व गुरुपद महापूजन के साथ श्री शांतिनाथ पंचकल्याणक पूजन स्वामिवात्सल्य भक्ति भावना के आयोजन कार्यक्रमों में समाजजन ने बढ़चढ़ कर सहभागिता की विभिन्न समितियों के माध्यम से सेवा का लाभ लेते रहे।

प.पू. आचार्य भगवंत लोकसंत श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. तथा अन्य साधु साध्वी भगवंत के आशीर्वाद से उल्लासमय वातावरण में उत्सव सम्पन्न हुआ दादा शान्तिनाथजी के वर्तमान मन्दिर को नया बनवाने की अन्य की भावना ने समाज जन के जोश में आशातीत वृद्धि की। समाजजन इस हेतु भी तैयारियों में इस आशा के साथ जुट रहा है कि शीघ्र ही दादा का मन्दिर भी नया हो जाये।

धूमधाम से मनाया महावीर जन्मोत्सव

झकनावदा। श्री केशरिया नाथ जिनालय में पर्युषण के चलते भगवान् महावीर का जन्मोत्सव बड़ी ही धूमधाम से मनाया गया। भगवान आदिनाथ की प्रतिमाजी का आकर्षक श्रृंगार मनीष कुमट , विक्की सेठिया, रवि सेठिया, संदीप कटकानी, नयन माण्डोत, लालू माण्डोत द्वारा किया गया जिसमें भगवान को दूल्हे राजा की तरह सजाया गया व शाम 5 बजे समस्त भक्तों ने भगवान की आरती का चढ़ावा लिया व त्रिस्तुतिक जैन श्रीसंघ की ओर से पर्युषण पर्व में प्रतिक्रमण करा रहे स्व. श्री राजमलजी नेताजी के सुपौत्र व श्री मनोहरलाल (मुन्ना) कटकानी के पुत्र संदीप कटकानी का डॉक्टर श्री इंदरमलजी वोहरा, श्री

कनकमल माण्डोत, श्री झमकलालजी माण्डोत, श्री शैतानमल कुमट द्वारा शाल श्रीफल भेंट कर बहुमान किया गया। भगवान की महाआरती के पश्चात् सभी समाजजनों ने एक दूसरे को छापा लगाकर भगवान महावीर के जन्मोत्सव की बधाइयां दी एवं मिठाइयां बांटी। जन्मोत्सव में श्री कांतिलालजी कोटडिया, श्री संजयजी कोठारी, श्री अनिलजी कोठारी, श्री विपिनजी वोहरा, श्री अर्जुन सेठिया, श्री कमल कालिया, श्री प्रकाश भांगू, श्री विजय वोहरा, श्री दिनेश माण्डोत, श्री मनोहर कटकानी, श्री विमल सेठिया, आदि समाजजन बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

श्री राजेन्द्र जैन पर्व दिवस केलेण्डर का विमोचन

महिदपुर। भारतीय संस्कृति व जैन परम्परा में तिथि अनुसार पर्व मनाते हैं व कार्यक्रम आयोजित करते हैं। इसको ध्यान में रखते हुए त्रिस्तुतिक जैन परम्परा के वर्षभर के पर्वों की जानकारी एवं पटल पर अंकित कर श्री राजेन्द्र जैन पर्व दिवस कैलेण्डर का संकलन व सम्पादन श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के नरेन्द्र कुमार धाड़ीवाल ने किया है। जिसका विमोचन परम पूज्य गुरुदेव राष्ट्रसंत जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. के सान्निध्य में परिषद के राष्ट्रीय अधिवेशन में शनिवार को जयंतसेनधाम रतलाम में परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रमेशभाई धरू, महामंत्री श्री अशोक श्रीमाल व श्री माणकलाल छाजेड़ के करकमलों से हुआ। 24 व 25 सितम्बर को रतलाम में परिषद के दो दिवसीय राष्ट्रीय अधिवेशन में महिदपुर शाखा के श्री श्रेणिक सकलेचा, श्री सुरेश छजलानी, श्री माणकलाल छाजेड़, श्री नरेन्द्र धाड़ीवाल आदि प्रमुख कार्यकर्ताओं ने भाग लिया।

प्रभुजी की रथयात्रा निकाली गई

महिदपुर। जैनाचार्य राष्ट्रसंत श्रीमद् विजयजयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. एवं साध्वीवर्या श्री दर्शनप्रभाश्रीजी म.सा. की प्रेरणा से श्रीमती चंदनबाला नरेन्द्र लुणावत ने 30 उपवास मासक्षमण की तपस्या पूर्ण की । तपस्या के अनुमोदनार्थ लुणावत परिवार की ओर से ज्ञान मंदिर में गुरुपद महापूजन व निवास स्थान से प्रभुजी की रथयात्रा व तपस्वी की शोभायात्रा निकाली गई। रथयात्रा का समापन खरतरगच्छ उपाश्रय में धर्मसभा के साथ हुआ। सकल श्रीसंघ ने तपस्वी का बहुमान किया। साध्वीद्वय ने तप की महत्ता पर प्रकाश डाला। लुणावत परिवार में ही श्रीमती

माया पारस लुणावत की सिद्धी तप की तपस्या सानंद सम्पन्न हुई।

अलीराजपुर। जैन श्रीसंघ आलीराजपुर में पर्युषण पर्व बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। पर्युषण पर्व पर कल्पसूत्र श्री राजेन्द्र कुमार रतनलालजी जैन यहाँ से लाकर वाचन दिया गया। जन्मोत्सव की प्रभावना श्री कुन्दनलाल काकडीवाला द्वारा की गई। युवाओं ने आठों दिन प्रतिमा पर आकर्षक आंगी बना कर समाजजनों का दिल जीत लिया। जन्म वाचन कर समाजजनों ने अन्तिम दिन संवत्सरी प्रतिक्रमण कर एक-दूसरे से क्षमायाचना की। पंचमी को वरघोड़ा निकाला गया। पर्युषण पर्व के दौरान स्वप्रेरणा से नवयुवक एवं महिला परिषद के सदस्यों द्वारा साथ अठ्ठाइयों की तपस्या का लाभ लिया गया। संवत्सरी के एक दिन पूर्व तपस्वियों की चौविसी का कार्यक्रम रखा गया। चौविसी में सभी तपस्वियों का बहुमान चारों परिपदों द्वारा किया गया एवं तपस्वियों की साता पूछी गई। पंचमी के दिन शाम को स्वामीवात्सल्य का आयोजन किया गया एवं वरघोड़ा निकाला गया। बच्चों की स्तवन प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया। जिसमें सभी बच्चों को पुरस्कार वितरण किया गया।

शिक्षक एवं समाजसेवियों का सम्मान

11 सितम्बर विनोबा जयन्ती पर खाचरौद में एक भव्य समारोह का आयोजन कर स्थानीय श्री राज राजेन्द्र शिक्षण समिति ने अपनी दोनों संस्थाओं श्री राज राजेन्द्र विद्या मंदिर हायर सेकेन्डरी एवं श्री राज राजेन्द्र जयन्तसेन विद्यापीठ में कार्यरत समस्त शिक्षकों के साथ सेवा निवृत्त शिक्षकों व समाजसेवियों को सम्मानित किया।

कार्यक्रम का प्रारंभ गुरुवन्दना व डॉ. राधाकृष्णन के चित्र पर माल्यार्पण के साथ नवकार मंत्र से शुरू किया। स्वागत गीत श्रीमती रानी खेमसरा व श्रीमती अनिता वागरेचा ने प्रस्तुत किया। अतिथि सेवानिवृत्त शिक्षक श्री आनन्दीलाल व्यास, श्री मदनलाल जोशी एवं समाजसेवी डॉ. श्री प्रफुल्ल सुराणा, श्री अभय हिंगड़ व वैद्य श्री विनोद गौतम विशेष अतिथि न.पा. अध्यक्ष श्रीमती कमलेश शर्मा, सांसद प्रतिनिधि श्री अनिल शर्मा व तहसीलदार श्री संजय वाघमारे उपस्थित थे। अतिथि स्वागत शिक्षण समिति अध्यक्ष श्री ज्ञानचन्द मेहता, श्री अनिल वागरेचा, श्री अजय भण्डारी, श्री पंकज डुंगरवाल, डॉ. प्रदीप छाजेड़, चन्द्रप्रकाश चौरड़िया, माणकलाल चौहान, त्रिस्तुतिक

समाज अध्यक्ष सुरेश मेहता, संस्था डायरेक्टर श्यामसुन्दर भट्ट व कार्यक्रम संचालक धर्मचन्द नांदेचा ने किया।

सेवानिवृत्त शिक्षकों को श्री बालचन्द लालचन्द भंडारी परिवार द्वारा स्व. श्री बालचन्द्रजी भण्डारी की स्मृति में शाल, श्रीफल व अभिनन्दन पत्र समर्पित कर सम्मानित किया। इसी तरह समाजसेवियों को भी भण्डारी परिवार द्वारा स्व. श्री बालचन्द्रजी भण्डारी की स्मृति में शाल, श्रीफल व अभिनन्दन पत्र अर्पित कर सम्मानित किया गया। शिक्षण समिति द्वारा भी समस्त अतिथियों एवं कार्यरत लगभग 100 शिक्षक वृन्द को रजत सिक्कों एवं स्मृति चिन्ह प्रदान किये।

इस अवसर पर श्री राज राजेन्द्र विद्या मंदिर के छात्र तनिष्क जैन को भी इस वर्ष माध्यमिक शिक्षा मण्डल की हाईस्कूल परीक्षा 2016 में जिला मेरिट में द्वितीय स्थान पाने के उपलक्ष्य में रजत मुद्रा से पुरस्कृत कर छात्र के पिता श्री अरविन्द जैन व माता रेखा को भी सम्मानित किया।

कार्यक्रम में अतिथि परिचय श्री श्यामसुन्दर भट्ट व अनिल वागरेचा ने प्रस्तुत किया। अभिनन्दन पत्र का वाचन श्री धर्मचन्द नांदेचा, डॉ. प्रदीप छाजेड़, श्री चन्द्रप्रकाश चोरडिया, श्री अनिल छाजेड़ व श्री विजय चौहान ने किया।

अपने उद्‌बोधन में श्री आनन्दीलाल व्यास ने समिति द्वारा संचालित संस्थाओं की उत्कृष्टता पर प्रसन्नता व्यक्त कर समिति सदस्यों को आशीर्वचन प्रस्तुत किये। आभार प्रदर्शन प्राचार्य श्री जितेन्द्र भटेवरा व श्रीमती शैफाली ओझा ने किया। इस अवसर पर कार्यक्रम में पेंशनर समाज के सदस्यगण एवं नगर के गणमान्यजन बड़ी संख्या में सम्मिलित हुए।

धर्म जागृति यात्रा

पूज्य लोकसंत श्रीमद् विजय जयंतसेनसूरीश्वरजी म.सा. की प्रेरणा से श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद द्वारा दि. 1 नवम्बर को जावरा, 2 नवम्बर राणापुर, 3 नवम्बर खाचरौद, 4 नवम्बर बड़नगर, 5 नवम्बर नागदा जं. एवं 6 नवम्बर को रतलाम में एक दिवसीय धर्म जागृति यात्रा का आयोजन किया जा रहा है जिसमें ज्ञानायतन परिवार के बाल श्रावकों द्वारा जीवन जीने की कला एवं परमात्म वधामणा, अभिषेक, संयम संवेदन, ऋण स्मरण विधि-अविधि ज्ञान, संध्या चिंतन आदि आयोजन किये जाएंगे। इस आयोजन का सम्पूर्ण लाभ श्री इन्दरमलजी दसेड़ा परिवार जावरा ने लिया है।

परिषद प्रांगण से

राष्ट्रीय पदाधिकारियों का राजस्थान प्रवास

मुनि भगवंतों व साध्वीवृंद के दर्शन, वंदन कर आशीर्वाद प्राप्त करने हेतु दिनांक 4 अक्टूबर से परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रमेशजी धरू, वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री ओ.सी. जैन, राजस्थान के पूर्व प्रांतीय अध्यक्ष श्री भेरूलालजी सेठ तथा अन्य सदस्यों ने राजस्थान प्रवास किया। सदस्यों द्वारा आहोर में साध्वीश्री विज्ञानलताश्रीजी के दर्शन-वंदन का लाभ लिया । साध्वीजी ने कहा कि परिषद गुरुदेव के आशीर्वाद से अपने लक्ष्य की ओर निरंतर गतिमान है। श्री भाण्डवपुर तीर्थ पर मुनिराजश्री जयरत्न विजयजी आदि ठाणा-3 व साध्वीश्री सूर्यकिरणाश्रीजी ठाणा-6 का आशीर्वाद लिया। आपने परिषद को मंगल कामना देते हुए शाश्वत धर्म के लिए सुझाव भी दिये। पांथेडी में साध्वी श्री शासन लताश्रीजी की निश्रा में हुए साध्वीश्री कोमलताश्रीजी की आदरांजली सभा में भाग लेकर उनकी प्रथम पुण्यतिथि पर भाव माला से श्रद्धांजली अर्पित की। भीनमाल में साध्वीश्री नयनप्रभाश्रीजी के दर्शन किये। सियाणा में साध्वीश्री कल्पलताश्रीजी ठाणा-4 के दर्शन वंदन कर आशीष लिया। पूज्य साध्वीश्री ने फरमाया कि मालवा, गुजरात की तरह राजस्थान में भी परिषद अपने पाँव फैलावे। जालोर में साध्वीजी श्री काव्य रत्नाश्रीजी, श्री कुलरत्नाश्रीजी आदि ठाणा 3 की पावन सान्निध्यता प्राप्त हुई। साध्वीजी ने कहां इस बात की प्रसन्नता है कि मारवाड़ के इस दूरस्थ अंचलों में भी परिषद के लोग समर्पणता के साथ गुरु भक्ति के लिए आते हैं। गुरुदेव की यह परिषद् खूब फूले फले जोधपुर में मुनिराज श्री वीर रत्न विजयजी म.सा. आदि ठाणा व साध्वीजी श्री मोक्षगुणाश्रीजी के दर्शन वंदन कर आशीर्वाचन लिए। परिषद साथी प्रतिवर्ष चातुर्मासार्थ विराजित मुनि भगवंतों और साध्वीजी म.सा. के वंदनार्थ जाकर मार्गदर्शन प्राप्त करते हैं।

स्वास्थ्य शिविर सम्पन्न

अलीराजपुर। अ.भा.श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद अलीराजपुर द्वारा 15 वां निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर आयोजित किया गया। जिसमें 28 चिकित्सकों एवं 25 सहकर्मियों के सहयोग से रिकार्ड 1128 मरीजों का स्वास्थ्य परीक्षण किया गया एवं लगभग 88 यूनिट ब्लड स्थानीय सिविल हॉस्पिटल में डोनेट किया गया।

विशेष बीमारियों से ग्रसित मरीजों को पिपरीया रेफर किया गया। इस अवसर पर श्रेष्ठ सेवाकार्य हेतु पटेल परिवार द्वारा शाखा को प्रमाण-पत्र एवं मोमेंटो से सम्मानित किया गया।

परिषद् परिवार द्वारा स्व. श्री किशोरजी खिमावत के सपनों को साकार करते हुए प्राचीन श्री लक्ष्मणी जैन तीर्थ में वृक्षारोपण किया गया एवं तीर्थ के विकास एवं निर्माण कार्यों में सहयोग प्रदान किया गया। पू. राष्ट्रसंत श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. की प्रेरणा से नवीन धर्मशाला के निर्माण का लाभ थराद श्रीसंघ द्वारा लिया गया जिसका निर्माण कार्य चालु है।

बकरा ईद के दिन परीषद के आह्वान पर सभी घरों में आयम्बिल एवं जाप का आयोजन किया गया। उक्त जानकारी स्थानीय परिषद अध्यक्ष एवं प्रदेश सहसचिव श्री कमलेश काकड़ीवाल ने दी।

लोकसन्तश्री ने घोषित किये परिषदों के नए पदाधिकारी

रतलाम। अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक महिला, तरुण परिषद् के राष्ट्रीय अधिवेशन में लोकसन्त आचार्यश्रीमद् जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. की निश्रा में अधिवेशन के अंतिम सत्र में उनके मुखारविन्द से परिषद् के नए राष्ट्रीय व प्रादेशिक पदाधिकारियों की घोषणा की गई। नवयुवक परिषद में राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रमेशभाई धरू(मुंबई), महामंत्री श्री अशोकश्रीश्रीमाल (इंदौर), उपाध्यक्ष श्री सुशील गिरिया (उज्जैन) बनाए गए। मध्यप्रदेश परिषद अध्यक्ष श्री रमेश धाडीवाल (कुक्षी), महामंत्री श्री सुधीर लोढ़ा (मंदसौर), उपाध्याक्ष श्री सहित तांतेड (धारा)। राजस्थान प्रदेश अध्यक्ष श्री बाबुलाल (दिल्ली), महामंत्री श्री सुजीत ओरा। महाराष्ट्र प्रदेश अध्यक्ष मोहन ढालावत (मुंबई), महामंत्री श्री अनिल राणावत (पुणे), गुजरात प्रदेश अध्यक्ष अरविन्द भाई देसाई (अहमदाबाद), महामंत्री श्री संजय अदानी (सूरत) दक्षिण भारत प्रदेशाध्यक्ष श्री बाबुलाल जैन (बैंगलुरु), महामंत्री श्री सुजीत सौलंकी (चैन्नई) महिला परिषद राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. श्रीमती अंगूरबाला सेठिया (निम्बाहेडा), उपाध्यक्ष श्रीमती गुणमाला नाहर (उज्जैन), श्रीमती रमिला बेन भंसाली (अहमदाबाद), श्रीमती कलाबेन (भाटपचलाना), सचिव श्रीमती पद्मा सेठ (राणापुर), सहसचिव श्रीमती आशा बेन कटारिया (झाबुआ), कोषाध्यक्ष श्रीमती पारसमणी बेन मारवाडी (जावरा), सहकोषाध्यक्ष श्रीमती सरोज बेन कांसवा (रतलाम), संगठन मंत्री श्रीमती वर्षा बेन (आणन्द), सहसंगठन श्रीमती हर्षा बेन संघवी(सूरत), सहशिक्षा मंत्री श्रीमती अंशिता संघवी (सूरत),

केन्द्रीय कार्यकारिणी सदस्यों में श्रीमती नीता काश्यप (रतलाम), श्रीमती कुसुम गिरिया (उज्जैन), श्रीमती तर्लिका नाहटा (कुशलगढ़), श्रीमती

राखी रांका (इंदौर), श्रीमती राजकुमारी दसेडा (जावरा), श्रीमती गुणी बेन (आणन्द), श्रीमती विमलाबेन अरविन्दभाई देसाई (अहमदाबाद), श्रीमती संतरीबेन रामाणी (नैल्लूर), श्रीमती चन्द्रकांता बेन गादिया। **मध्यप्रदेश इकाई** में अध्यक्ष श्रीमती पुष्पा भण्डारी (मनावर), उपाध्यक्ष श्रीमती मधुलिका तांतेड़ (राजगढ़) श्रीमती रानी लोढ़ा (निम्बाहेड़ा), श्रीमती कला वोरा (भाटपचलाना), महामंत्री श्रीमती हेमा हिंगड (मंदसौर), कोषाध्यक्ष श्रीमती विमला बेन पगारिया (पारा), सहकोषाध्यक्ष श्रीमती माया लुणावत (रतलाम), सहमंत्री श्रीमती अनिता सर्राफ (बडनगर), प्रचार मंत्री श्रीमती स्नेहलता डूंगरवाल (इंदौर), सहप्रचार मंत्री श्रीमती मंगला धारीवाल (कुक्षी), शिक्षा श्रीमती सविता बेन (कुक्षी), सहशिक्षा मंत्री श्रीमती निर्मला लोढ़ा (मंदसौर) बनाई गई। **गुजरात इकाई** में अध्यक्षा श्रीमती कंचनाबेन अदाणी (अहमदाबाद), उपाध्यक्ष श्रीमती कोकिला बेन मोदी (सूरत), श्रीमती वर्षा बेन (आणन्द) महामंत्री श्रीमती अलका अदाणी (सूरत), सहमंत्री श्रीमती ज्योत्सना वेदलिया (डीसा), कोषाध्यक्ष सविता बेन अदाणी (सूरत), सहकोषाध्यक्ष कंचनबेन पालूक (मुंबई) आदि को मनोनीत किया गया।

राणापुर। राजेन्द्र भवन में चातुर्मास के दौरान तपस्या करने वाले तपस्वियों का अभिनन्दन किया गया। कार्यक्रम का आयोजन अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद की स्थानीय शाखा ने किया। साध्वी श्री चारित्रकलाश्रीजी की निश्रा में हुए इस आयोजन में परिषद के केन्द्रीय पदाधिकारी शामिल हुए। साध्वी श्री के मंगलाचरण से कार्यक्रम की शुरूआत हुई। स्वागत भाषण श्री संघ अध्यक्ष दिलीप सकलेचा ने दिया। कमलेश नाहर, गेंदामल डोशी, हंसा डोशी आदि ने सम्बोधित किया। अगले तीन वर्षों के लिए पुनः केन्द्रीय अध्यक्ष मनोनीत होने पर रमेश भाई धरू का व केन्द्रीय महामंत्री श्री अशोक श्रीश्रीमाल का परिषद शाखा की ओर से बहुमान किया गया। श्री राजेन्द्र दंगवाडा, श्री शशांक लुणावत, श्री मनोहर भंडारी का भी स्वागत किया गया। अपने उद्बोधन में श्री धरू ने कहा कि परिषद अध्यक्ष को अपने इस नए कार्यकाल में परिषद को वे नई ऊँचाईयों पर ले जाने का प्रयास करेंगे। साध्वी श्री चारित्रकलाश्रीजी ने कहा कि परिषद त्रिस्तुतिक संघ को करीब ला रही है। एकजुट होकर समाज को संगठित कर रही है। इसके पश्चात 8 से लेकर 33 उपवास तक कि तपस्या करने वाले 22 तपस्वियों का बहुमान किया गया। केन्द्रीय पदाधिकारियों ने तपस्वियों को अभिनन्दन पत्र भेंट किया। संचालन शाखा अध्यक्ष तरुण सकलेचा ने किया। प्रदीप भंसाली, हेमेन्द्र सेठ, सुरेश समीर, मितिन सकलेचा, मुकेश नागोरी, ललित सालेचा, राजेश व्होरा सहित अन्य उपस्थित रहे।

इस अवसर पर 46 माह से

प्रतिसुदी सप्तमी को मोहनखेड़ा, भोपावर तीर्थ की निःशुल्क यात्रा कराने वाले श्री अभयजी कटारिया का शाल एवं माला से बहुमान किया गया।

झकनावदा। अ.भा.श्री राजेन्द्र जैन महिला परिषद की राष्ट्रीय परिषद अध्यक्ष डॉ.

श्रीमती अंगूरबालाजी सेठिया निम्बाहेड़ा, उपाध्यक्ष श्रीमती पारस मणिजी जावरा, महामंत्री श्रीमती गुंणबालाजी नाहर उज्जैन एवं प्रदेश अध्यक्ष श्रीमती पद्माजी सेठ राणापुर द्वारा झकनावदा परिषद शाखा का दौरा कर बैठक ली । बैठक के पूर्व में पदाधिकारियों का महिला परिषद द्वारा स्वागत, सम्मान किया। जिसके बाद महिला परिषद् और नवयुवक की मीटिंग रखी गई जिसमें अंगूरबालाजी ने धार्मिक कार्यों, ज्ञान शाला चलाने, प्रतिमाह एकम को सामूहिक स्नात्र पूजन करने की सलाह दी। पश्चात् महिला परिषद् और नवयुवक परिषद् के सदस्यों द्वारा स्थानीय बालक प्राथमिक विद्यालय झकनावदा पर वृक्षारोपण का आयोजन कर वृक्षारोपण किया गया साथ ही शाला में श्री हेमेन्द्रजी जोशी, श्रीमती कलावती मकवाना, श्री मोनू टेलर द्वारा अतिथियों का स्वागत कर बच्चों को जीवन में गुरु का सम्मान करने की सलाह दी तो नवयुवक परिषद द्वारा शाला के समस्त बच्चों को कॉपी, पेन वितरित की गई। इस अवसर पर महिला परिषद की अध्यक्ष श्रीमती पूर्णिमा माण्डोत, उपाध्यक्ष श्रीमती शोभा सेठिया, कोषाध्यक्ष श्रीमती चंद्रकांता माण्डोत, श्रीमती राजल कटकानी, श्रीमती राजकुमारी, श्रीमती छामुबाई माण्डोत, श्रीमती मीनाक्षी कुमट, श्रीमती सुमित्रा सेठिया, श्रीमती राजकुमारी माण्डोत आदि महिला परिषद सदस्य एवम नवयुवक परिषद से कन्हैयालालजी माण्डौत, श्री शैतानमल कुमट, श्री अर्जुन सेठिया, श्री विमल सेठिया, श्री रौशन सेठिया, श्री मनोहरलाल कटकानी, श्री दिनेश माण्डोत, श्री लालू माण्डोत, श्री चीकू सेठिया, श्री मितेश, श्री लालू सेठ आदि उपस्थित थे।

संचालन श्री मितेश कुमट ने किया और आभार नवयुवक परिषद अध्यक्ष (अहिंसा क्रांति सहसंपादक) श्री मनीष कुमट ने माना। उक्त जानकारी श्री मनीष कुमट ने दी।

जानकारी भेजें व प्राप्त करें

पूज्य गुरुदेव के विहार तथा कार्यक्रम की जानकारी प्रतिदिन वाट्सअप तथा फेसबुक पर प्राप्त करने हेतु ब्रजेश बोहरा, श्रीसंघ व परिषद के राष्ट्रीय प्रचारक से मो. 98272-44175 वाट्सअप पर एस.एम.एस. कर प्राप्त करें या भेजें।

हुबली परिषद् को मिला राष्ट्रीय पुरस्कार

अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् का दो दिवसीय राष्ट्रीय अधिवेशन मध्यप्रदेश के रतलाम शहर में आचार्य जयंतसेनसूरिश्वरजी म.सा. की निश्रा में सम्पूर्ण हुआ। अधिवेशन में भारत भर कि कई शाखाओं के सदस्यों ने भाग लिया। हुबली परिषद के सहमंत्री संजय सेठ ने हुबली शाखा का पूरे वर्ष का ब्यौरा दिया। इस अवसर पर हुबली परिषद को पिछले वर्ष की तरह इस बार भी केन्द्रीय शाखा से संपर्क बनाये रखने के क्षेत्र में प्रथम पुरस्कार से चातुर्मास आयोजक एवं रतलाम विधायक चेतन्य काश्यप एवं परिषद के दक्षिण भारत प्रभारी ओ.सी. जैन ने स्मृति चिन्ह देकर पुरस्कृत किया। परिषद के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष एवं मध्यप्रदेश सरकार के शिक्षा मंत्री पारस जैन ने हुबली परिषद द्वारा कम समय में अनेक सामाजिक कार्य कर पिछले दो वर्षों से पुरस्कृत होने पर शुभकामनाएँ दी। अधिवेशन में हुबली शाखा से नितेश जैन, श्री निलेश जैन, श्री संजय सेठ, श्री सुभाष मुथा, श्री विमल जैन, श्री मनीष पोरवाल, श्री बंटी जैन, श्री कैलाश गांधीमुथा, श्री आकाश जैन, श्री शैलेष जैन, श्री अक्षय मांडोत आदि उपस्थित थे।

प्याऊ का शुभारंभ

कुक्षी। अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद एवं कमलादेवी चम्पालालजी गांधीमुथा परिवार द्वारा रेलवे स्टेशन पर नवनिर्मित 'कमला जलधारा' प्याऊ का शुभारंभ कर्नाटक सरकार के ग्रामीण विकास एवं पंचायत राज मंत्री श्री पाटिल ने किया। इस अवसर पर पाटिल ने ऐसे आधुनिक प्याऊ के निर्माण पर परिषद् के युवाओं की प्रशंसा की एवं प्याऊ निर्माता परिवार का आभार जताया। उन्होंने परिषद् को कर्नाटक के छोटे कस्बों में ऐसे पाँच प्याऊ सरकारी अनुदान से बनाने का प्रस्ताव रखा। इस अवसर पर प्याऊ निर्माता भंवरलाल गांधीमुथा एवं प्याऊ आर्किटेक सुहास कबूर का पाटिल ने बहुमान किया।

मैसूर शाखा द्वारा अनुमोदनीय कार्य

मैसूर। मैसूर शाखा द्वारा 'विद्यादान प्रोजेक्ट' के अंतर्गत आलकंदहल्ली हुंडी गाँव (कड़कोला के पास) में शासकीय हायर प्रायमरी स्कूल में जाकर 100 विद्यार्थियों को करीबन 1000 नोट बुक, स्टेशनरी एवं मिठाई वितरीत की गई।

'अन्न दान प्रोजेक्ट' के अंतर्गत आशादायक सेवा ट्रस्ट मैसूर में जाकर गरीब एवं अनाथ बच्चों को भोजन कराया गया। इस अवसर पर परिषद् के सदस्यगण उपस्थित रहे। दि. 15 अगस्त 2016 सोमवार को स्वतंत्रता दिवस के प्रसंग पर बृहद् वृक्षारोपण कार्यक्रम किया गया। दि. 15 अगस्त 2016 सोमवार को सरकारी हाई स्कूल विनायकनगर, पडवहल्ली में सभी विद्यार्थियों को स्कूल यूनिफार्म दिये गये व मिठाई वितरित की गई एवं दि. 29 अगस्त 2016 पर्युषण महापर्व के पावन प्रसंग पर जीवदया के क्षेत्र में मैसूर पिंजरापोल जाकर गायों को घास दी गई तथा दि. 13 सितम्बर 2016 मंगलवार (बकरा ईद के दिन) श्री अपूर्वमंगलरत्नसागरजी म.सा. की निश्रा में, श्री सुमतिनाथ जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ, मैसूर के तत्त्वावधान में 350 आयंबिल करवाये गये एवं नवकार मंत्र जाप (सामूहिक सामायिक) का आयोजन किया गया। अनेक मानव सेवा कार्यों में परिषद् द्वारा सहयोग दिया गया और आगे भी इसी तरह की मानव सेवा कार्य में सहयोग सेवा करते रहने का संकल्प लिया।

इंदौर। परम गुरु भक्त श्रीमती तारादेवी स्व. श्री कांतिलाल भंसाली राणापुर वाले का 9 अक्टूबर 2016 को इंदौर में स्वर्गावास हो गया। आप साध्वी श्री देशनानिधि श्रीजी म.सा. की बड़ी मां थी। परिषद परिवार उनको श्रद्धांजली अर्पित करता है।

परीक्षार्थियों का बहुमान

श्री यतीन्द्र जयंत ज्ञानपीठ परीक्षा 2015 व 2016 के परीक्षा में उत्तीर्ण सभी परीक्षार्थियों का बहुमान एवं पुरस्कार वितरण 12 अक्टूबर 2016 को गुरुदेव की निश्रा में सम्पन्न हुआ। नामली, सरसी, जावरा, पिपलौदा आदि श्रीसंघों की उपस्थिति में परीक्षार्थियों का राष्ट्रीय जनकल्याण मंत्री श्री सुशीलजी छाजेड़, परिषद् अध्यक्ष पंकज राठौड़, श्री संजय कोठारी, श्री राजकमलजी दुग्गड़, श्री कांतिलालजी सरसीवाला, श्री गेंदालालजी सकलेचा, डॉ. निर्मल मेहता एवं सुरेन्द्र गंग द्वारा बहुमान किया गया। महिला परीक्षार्थियों का बहुमान मातुश्री श्री तेजकुंवर बाई काश्यप के द्वारा किया गया। पाठशाला परिवार व शिक्षक परिवार द्वारा मातुश्री तेजकुंवर बाई काश्यप का बहुमान श्रीमती ममता भण्डारी, श्रीमती रमीला सकलेचा, श्रीमती सरोजबेन कांसवा, श्रीमती मधुबाला गंग, श्रीमती मधु मेहता एवं महिला परिषद् द्वारा किया गया।

जैन विश्व

क्षमापना हेतु पैदल मोहनखेड़ा पहुँचे

टांडा (धार)। टांडा जैन श्रीसंघ के गुरु भक्त प्रतिवर्षानुसार पर्युषण पर्व के पश्चात दादा गुरुदेव श्रीमद् विजय राजेन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. के समाधि मंदिर पावन मोहनखेड़ा तीर्थ पर क्षमापना हेतु बड़ी संख्या में गुरु भक्त टांडा से पैदल श्री मोहनखेड़ा तीर्थ पहुँचे।

वहाँ सामूहिक रूप से प्रभु वंदन एवं गुरु वंदन कर गुरुदेव से सामूहिक रूप से क्षमायाचना की।

कापरड़ापी तीर्थ । स्वयंभू पार्श्वनाथ से सुशोभित श्री कापरड़ाजी तीर्थ का अंजनशालाका प्रतिष्ठा महोत्सव आचार्यश्री विजय सोमचन्द्रसूरि, आचार्यश्री विजयश्री चन्द्रसूरि आचार्यश्री विजय कुलचन्द्रसूरि आचार्यश्री विजय प्रशमचन्द्रसूरि आदि साधु-साध्वी के पावन सान्निध्य में 4 दिसम्बर को होने जा रहा है।

बैंगलुरू में प्रथम बार 'उत्तम कंचन विमल दरबार' महक उठा

बेंगलुरू (कर्नाटक)। श्री वर्धमान श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन श्रावक संघ शांतिनगर बेंगलुरू के तत्वावधान में - समर्थगच्छाधिपति मधुर व्याख्यानी पंडितरत्न पूज्य गुरुदेव श्री उत्तमचन्दजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी एवं महाभागवान परम् कृपालु पूज्य गुरुवर्या विदुषी महासती श्री कंचनकंवरजी म.सा. के साध्वी समुदाय की अग्रणी- सरलमना वयोवृद्ध महासती श्री विमलकंवरजी म.सा. की सुशिष्या- परम विदुषी ओजस्वी व्याख्यात्री महासती श्री सुलोचनाश्रीजी म.सा., परम विदुषी प्रखर व्याख्यात्री महासतीश्री संगीताश्रीजी म.सा., महासती श्री निधीश्रीजी म.सा., महासती श्री श्रेयांसीश्रीजी म.सा. एवं महासतीश्री रीनुश्रीजी म.सा. आदि ठाणा 5 का चातुर्मास (वर्षावास) अपूर्व त्याग-तप व अनूठी धर्म आराधना साधना तथा नित-नये व्रत प्रत्याख्यान संकल्पों से बेंगलरू महानगर में प्रथम क्रमांक की तरफ निरन्तर गतिशील हो रहा है। शांतिनगर के श्राविका मण्डल एवं नवयुवक मण्डल का पुरुषार्थ व जिनशासन प्रभावक सेवाएँ काबिले तारीफ हैं। शांतिनगर में प्रतिदिन प्रातः महावीर कॉलेज (धार्मिक कक्षा) में युवक-युवतिवर्ग बढ़चढ़ कर भाग ले रहा है।

महासतीवृन्द के प्रभावी व्याख्यान से अनेक त्याग व तपस्या के रिकार्ड शांतिनगर में बन रहे हैं। तेले की लड़ी व एकासन, आयंबिल, बेआसन आदि चातुर्मास प्रारंभ से अबाध रूप से चल रहे हैं। इस वर्ष पर्युषण महापर्व का नजारा लालबाग में देखने को मिला कि उत्तम कंचन विमल दरबार में जनता उमड़-उमड़ कर आई व लालबाग का भव्य विशाल प्रांगण भी छोटा पड़ गया। बेंगलुरू के सुप्रसिद्ध लालबाग में 'पिन ड्रॉप सायलेन्स' का शान्त-प्रशान्त वातावरण सबके लिए एक प्रेरक व आश्चर्यजनक व अपूर्व नजारा रहा। लालबाग में शांतिनगर श्रीसंघ के अलावा आसपास के संघों व बेंगलुरू के लगभग 21 स्थानीय श्रीसंघों के श्रावक-श्राविकागण भी भारी संख्या में उपस्थित हुए। लगभग साढ़े तीन हजार की जनमेदिनी का आना सचमुच में त्यागी- वैरागी चारित्र आत्माओं के प्रति विशेष श्रद्धाभक्ति ही दर्शाता है। हकीकत है कि न विज्ञापन, न न्यूज, न दैनिक समाचार पत्र में प्रकाशन न लाईट, न माइक, फिर भी जनता की मुख मुद्रा ब्राईट बनी रही। सचमुच में यह उच्च श्रावक पणे का एक शुभ लक्षण है।

हजारों की विशाल जनमेदिनी में भी अंतिम श्रोता तक आवाज पहुंचाना इन त्यागी-वैरागी, महासतीवृन्द का परम पुरुषार्थ ही कहा जायेगा। शरीर व गले की बिना परवाह किये मात्र श्रावक-श्राविकावर्ग एवं युवक-युवतिवर्ग पर परम उपकार करके जो जिनशासन की महत्ती प्रभावना की है। पर्युषण महापर्व के दौरान अन्तगढ़दशासूत्र का अर्थ सहित विवेचन वाचंन व्याख्यान महासती श्री निधीश्रीजी म.सा., महासती श्री श्रेयांसीश्रीजी म.सा. व महासती श्री रीनुश्रीजी म.सा. ने बड़े ही विश्लेषण पूर्वक प्रभावक ढंग से किया है। आठ दिनों तक महापर्व में जैनी की कैसी हो ऊँचाई विषय पर सांगोपांग व्याख्या कर समागत विशाल जनमेदिनी को नित - नये उदाहरण व संस्मरणों से प्रखर व्याख्यात्री महासती श्री संगीताश्रीजी म.सा. ने जो समां बांधा। पयुर्षण पर्व के दौरान श्रीमान् महावीरचन्दजी मुथा सहित करीब 125 परिवार के सामूहिक भोज में 32 आईटम से ज्यादा न करने का संकल्प (द्रव्यों की मर्यादा) किया जो काबिले तारीफ है। संगीत संध्या न रखना, सड़कों पर डांस व शादी विवाह में आतिशबाजी न करना आदि अनेक प्रत्याख्यान जनता ने बढ़-चढ़कर किए। 51 दिनों तक एकासन 30 जनों ने किए तथा बेआसन 51 जनों ने किए। सामूहिक उपवास एक साथ 108 हुए तथा आयंबिल की अठाई 7 जनों ने की। श्रीमती नन्दा श्री राजेन्द्रजी मुथा ने 51 की तपस्या, श्रीमती कमलाबाई भंवरलालजी छाजेड़ ने मासखमण की तपस्या, श्रीमती कोमल विनीतजी मुथा ने मासखमण की तपस्या

की है तथा श्रीमती इन्द्रा अमितजी मेहता के 22 की तपस्या मासखमण की ओर जारी है। संवत्सरी महापर्व एवं सामूहिक खमत-खामण के बाद भी तपस्या का क्रम यहां पर जारी है। सुश्रावक श्री पारसमलजी मुथा ने सजोड़े शीलव्रत ग्रहण किया। संघ अध्यक्ष श्री महावीरचन्दजी मुथा सभी का भावपूर्वक स्वागत-सतकार करते हैं तथा संघमंत्री श्री छगनमलजी लुणावत प्रवचन सभा का बखूबी संचालन करते रहते हैं।

समरथ जैन श्रावक संघ के कर्नाटक प्रांतीय पूर्व अध्यक्ष व वर्तमान संरक्षक श्रीमान धनपतराजजी सुराणा, श्रीमती निर्मलाजी सुराना व युवारत्नश्री अनिलजी सुराणा आदि की सेवाएँ भी अभिनन्दनीय रही है। महासतीजी के प्रभावी जीवन से प्रभावित होकर जैनेत्तर श्री भवानीप्रसादजी चौधरी मारतहल्ली (बेंगलरू) वाले भाई जैन श्रावक बने। उत्तम कंचन विमल दरबार में सुलोचन- संगीत साध्वी मंडल की धर्म देशना यथावत अबाध रूप से बड़ी भव्यता से चल रही है।

– छगनमल लुणावत

सोनल के शास्त्री सम्मानित हुये-

वाराणसी। बनारस हिन्दु विश्वविद्यालय, में सोनल के शास्त्री के बहु-आयामी व्यक्तित्व एवं कृतित्व को परिलक्षित करने वाली उनकी साहित्यिक प्रतिभा को देखते हुये सार्वभौमिक प्राच्य विद्या संस्था, वाराणसी द्वारा पं. खुशालचन्द्र जैन गोरावाला पुरस्कार से 25 सितम्बर 2016 को बनारस हिन्दु विश्वविद्यालय वाराणसी में सम्मानित किया गया। अवसर था, द्विदिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय - संगोष्ठी का, जिसमें में देश-विदेश के लगभग 25 विद्वानों ने भाग लिया।

नीमच। अखिल विश्व णमोकार 'प्रेम' मण्डल द्वारा भारत के सम्पूर्ण श्वेताम्बर मंदिरों में एक पत्रिका प्रेषित की गई जिसमें समाज की एकता एवं भाईचारे पर बल दिया।

पादरू। श्री पद्मभूषण विजयजी म.सा. आदि साधु-साध्वी भगवंतों की शुभ निश्रा में पादरू नगर में दि. 8 अक्टूबर 2016 से 16 अक्टूबर 2016 तक श्री नवपद आयंबिल ओली का आयोजन किया गया।

वाशी। मेवाड़ भवन, वाशी में पयुर्षण पर्व के दौरान प्रथम बार चरम मंगल प्रभाविका साध्वी वैभवश्रीजी म.सा. साध्वी देशनाश्रीजी म.सा. आदि के सुमधुर व्याख्यानों से सभी भक्तों ने ध्यान की सरल समझ और आनंद से भरपूर मस्त जीवन जीने के सूत्र आदि की कला जानी। समस्त वाशी व नवी मुंबई वाले सौभाग्यशाली हैं, जिन्हें ऐसे गुरु लोगों का सान्निध्य प्राप्त हुआ।

शाश्वत धर्म के संरक्षक

- शा. ओटमल वेलाजी कांकरिया-सुरा निवासी।
- शा. ताराचंद फुटरमल फौजमल, भानाजी वेदमुथा-आहोर निवासी।
- कटारिया संघवी भवरलाल, उगमचंद, वीरेन्द्र कुमार, राजेन्द्रकुमार, आशीष, गौरव पुत्र पौत्र-तोलाजी, धाणसा निवासी (फर्म-मेन्स एवेन्यु-बाई मिलन, बैंगलौर)
- शा. तिलोकचंद, नरसिंगमल, पुखराज, परखचंद, सांवलचंद, पुत्र, पौत्र प्रतापचंदजी सूरत निवासी।
- संघवी मिश्रीमल, हस्तीमल, समरथमल, हीरालाल, शांतिलाल, दिलीपकुमार जैन, पुत्र-पौत्र कन्नाजी कटारिया-जाखल नि.
- नैनावा श्री जैन श्वेताम्बर सकल संघ, गुरूभक्तगण-नैनावा।
- श्री समकितगच्छीय जैन श्वे. संघ-धानेरा।
- स्व. मायाचंद धुलाजी की स्मृति में धर्मपत्नी धापुबाई, सुपुत्र कुशलराज, भ्राता निहालचंद एवं श्रीमती जड़ावबेन कातरेला बोहरा-आहोर निवासी।
- मेहता तेजराज, जयन्तीलाल, राजेन्द्रकुमार, अरविंदकुमार, पुत्र पौत्र रायचंदजी जसराजजी भूती निवासी।
- मोरखिया चंदुलाल, बाबूलाल, रसिकलाल, महेशकुमार, परेशकुमार अल्पेशकुमार, रूपेश कुमार, पुत्र-पौत्र स्व. मौरखिया नानचंद मूलचंद थाई-थराद निवासी।
- स्व. मुणोत रिखबचंदजी की स्मृति में धर्मपत्नी ढेलीबाई सुपुत्र बाबूलाल, सुमेरमल, अशोक कुमार, रमणिया निवासी।
- स्व. रामाणी शेषमलजी की स्मृति में मांगीलाल, फुटरमल, शांतिलाल, किशोरकुमार पुत्र-पौत्र खुशालजी रामाणी, गुडा बालोवान (फर्म-सूर्यलोक ज्वेलर्स, नैल्लोर)
- श्री राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट, चैन्नई।
- शा. मोहनलाल, पारसमल, सुरेश कुमार, किशोर कुमार, कमलेश कुमार, अरविन्द कुमार पुत्र, पौत्र साकलचंद जेरूपजी भैंसवाडा नि.फर्म-गोल्डन ज्वेलर्स, नेल्लोर।
- स्व. सुगीबाई धर्मपत्नी अचलजी की स्मृति में पुत्र-कांतिलाल, प्रपोत्र-रमेशकुमार बागरा निवासी।
- श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ चौराऊ।
- श्री श्वेताम्बर जैन संघ, सियाणा।
- श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ, थराद।
- दोशी सोमतमल, गुमानमल, सुखराज सांवलजी हस्ते-गुमानमल सांवलजी चेरिटेबल ट्रस्ट, मुम्बई।
- सुशीला बहन की स्मृति में भीमराज, हिमांश कुमार, श्रेणिक कुमार पुत्र पौत्र बेचरदासजी छाजेड़, नैनावा निवासी हाल मु.सांचोर, राज.
- श्री गोडी पार्श्वनाथ जैन देरासर पेढ़ी, सोनारी, सेरी थराद, प्रतिष्ठा प्रसंगे गुरूभक्तों द्वारा।
- स्व. जेठमलजी खुमाजी की स्मृति में, चंदनमल, कैलाशचंद हंसराज, शीतलकुमार, अश्विन कुमार परिवार, बागरा निवासी (राजस्थान फायनेन्स कॉरपोरेशन काकीनाडा)
- श्री विमलनाथ जैन दोशी दहेरासर, थराद।
- श्री सौधर्म बृहत्तपागच्छ जैन संघ, आनन्द (गुजरात)
- श्री जैन श्वे. त्रिस्तुतिक श्री संघ थलवाड (राजस्थान)
- श्री सौधर्म बृहत्तपोगच्छीय जैन संघ जावरा (म.प.)
- श्री सौधर्म बृहत्पोगच्छीय जैन संघ वासणा (गुजरात)
- श्री महाविदेह तीर्थधाम नवागाम, सूरत (गुजरात)
- आहोर निवासी संघवी जुगराज, कांतिलाल, महेन्द्र, सुरेन्द्र, दिलीप, धीरज, संदीप, राज, जैनम पुत्र पौत्र शा. कुन्दनलालजी भुताजी श्रीमाल वर्धमान गोत्रिय परिवार-थाणे (महा.)
- श्री जैन श्वेताम्बर संघ-सामलकोट।
- श्री जैन श्वे. मूर्तिपूजक संघ, सूर्यरावपेटा-काकीनाडा (आन्ध्र प्रदेश)
- श्री सिमंधर राजेन्द्र जैन श्वे. मंदिर, मामुलपेट, बेंगलोर।
- श्री मुनिसुव्रत - राजेन्द्र जैन श्वेताम्बर मंदिर, (एवेन्यु रोड बैंगलोर)

- श्री संभवनाथ राजेन्द्रसूरि जैन श्वे. ट्रस्ट, विजयवाड़ा (आ.प्र.)
- शा. अनराजजी छोगालालजी बुरड, सांचोरा वाला, फर्म-सोनू स्टील, सिकन्दराबाद, आ.प्र.
- शा. उत्तम, रमेश, हरीश, खुशालचंदजी, गेबाजी डामराणी, मैंगलवा वाला, फर्म पाक्षाल पावर किंग इलेक्ट्रीकल, हैदाराबाद (आ.प्र.)
- श्री पार्श्वनाथ राजेन्द्रसूरिजी जैन ट्रस्ट, गुंटूर
- कोशिलाव निवासी शा. भूनतमलजी, मगराजजी ललवाणी फर्म-पारस एजेन्सीज, हैदराबाद
- बागरा निवासी शा. शेषमलजी, गुलाबचंदजी फर्म जैन एण्ड कं., एलुर
- शा.अम्बालाल, दलीचन्द, बाबूलाल, शांतिलाल, प्रकाशचंद, नैनमल, उत्तमचंद, रमेशकुमार पुत्र पौत्र चमनाजी बुगामवाला-सुरापुर (कर्नाटका)
- शा. शांतिलालजी देवीचंदजी भंडारी, फर्म-स्वस्तिक ट्रेडिंग कं., हैदराबाद (आ.प्र.)
- स्व. कबदी हेमराजजी पूनमचंदजी की स्मृति में पुत्र नरेन्द्रकुमार दिलीपकुमार, पौत्र विनोद, अमीत, जसवंत, लोकेश और हरेश सायला निवासी, फर्म प्लायवुड सेन्टर, विजयवाड़ा
- मातुश्री सजनबाई स्व. श्री राजमलजी वीरचंदजी सेक्रेटरी पुत्र-पौत्र-प्रपौत्र शाह दिलीपकुमार, सचिनकुमार, सर्वेषकुमार, हार्दिक कुमार, रोशनकुमार, समस्त सेक्रेटरी परिवार कुक्षी (म.प्र.) फर्म- पक्षाल प्रोडक्ट, मूनलाईट रिचार्जेबल टॉर्च के निर्माता।
- जैन संघ - लाखणी
- भीनमाल निवासी श्री शोभालालजी भागचंदजी धोकड़ के पुत्र राजेन्द्रकुमार, पौत्र विक्रम, अभिषेक, परेश द्वारा, फर्म गौतम वस्त्र भंडार, गणेश चौक, भीनमाल जालोर (राज.)
- धाणसा निवासी संघवी स्व. सुखराजजी पिताजी की स्मृति में धर्मपत्नि-शांतिदेवी, पुत्र-सुमेरमल, अशोककुमार श्रीपाल, संजय, आकाश, अमृत
- कटारिया परिवार, फर्म शा. सुखराज पिताजी, विजयवाड़ा (आ.प्र.)
- सौधर्मवृहद तपोगच्छीय जैन श्वे. त्रि. श्री जैन संघ दाधाल
- आहोर निवासी संघवी मोहनलाल, तेजराज, प्रवीणकुमार, यतीन्द्र, राजेन्द्र, आशीष पुत्र-पौत्र वक्तावरमलजी हीराचन्दजी कुहाड़ परिवार आहोर नि. फर्म-राजेन्द्र पेपर्स, बैंगलौर
- रेवतड़ा (राज.) निवासी स्व. दरजमलजी, स्व. उकचन्दजी, स्व. हस्तीमलजी, स्व. तगराजजी की स्मृति में : हिराणी परिवार
- रेवतड़ा (राज.) निवासी स्व. शा. भारतमलजी भगाजी एवं धर्मपत्नी पातीबाई, पुत्र-मांगीलाल, गणपतराज, रमेशकुमार, कैलाशकुमार एवं समस्त संघवी वेदमुथा परिवार
- रेवतड़ा (राज.) निवासी संघवी पारसमल, नेमीचन्द, जितेन्द्र, संजय, रितेश, वेदमुथा परिवार
- थराद निवासी थरू फूलचंद, पानाचंद परिवार द्वारा आचार्यश्री जयंतसेन सूरिश्वरजी म.सा. के चातुर्मास निमित्त
- स्व. मुनिराज श्री हरिशचंद्रविजयजी म.सा. की पुण्य स्मृति में आहोर नि.मुकेशकुमार गौतम गुलेच्छा, पुत्र पौत्र मोहनलालजी हिम्मतलालजी फर्म-अरविन्द टेक्सटाईल, राजमुद्री
- रेवतड़ा निवासी संघवी सोकलचंद, कानराज, अशोककुमार, अरविन्दकुमार, चन्द्रकान्त, अखिलकुमार पुत्र-पौत्र शा. इन्द्रमलजी भगाजी परिवार
  फर्मःशा. इन्द्रमलजी सुखराजजी, बैंगलोर
- उज्जैन निवासी शा. श्री चांदमलजी, नवीनकुमार, मुकेशकुमार, अंकितकुमार पुत्र-पौत्र श्री सेवारामजी बाफणा परिवार
- यतीन्द्र भवन जैन धर्मशाला-पालिताणा
- स्व. मातुश्री अमीयाबाई एवं स्व. भाई ओटमलजी की स्मृति में पुत्रवधु प्रसन्नदेवी पुत्र हेमराज पौत्र रोहित, मितेश चत्तरगोत्रा हस्तीमलजी धनाजी परिवार चौराऊ निवासी फर्म-पद्मावती मार्केटिंग-बेंगलौर (कर्नाटक)
- श्री सौधर्म वृहद तपोगच्छीय त्रिस्तुतिक जैन संघ, सूरत

पूज्य गुरूदेव उपस्थित समुदाय को प्रवचन देते हुए ।

जयन्तसेन म्युजियम में बनने वाले जिन मंदिर का मोहरत
प्रदान करते हुए पूज्य गुरूदेव

परिषद का संयुक्त राष्ट्रीय अधिवेशन रतलाम में

पावन सान्निध्य : लोकसंत गच्छाधिपति श्रीमद्विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा.

भारत सरकार पंजीयन क्रमांक 13067/57

Regd. News Paper Under Regn. No. CPMG KA/BG (S) 2005/2006-08

एल/RNP/MP/MANDSAUR/113/15-17

Posting Date at Mandsour on 3rd Day of Every Month.

कुल पृष्ठ कवर सहित 124